अधिकतम : 27° C
न्यूनतम : 14° C

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

हल्द्वानी, बुधवार 25 मार्च 2026 हल्द्वानी संस्करण: वर्ष 23 अंक 207 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com चैत्र कृष्ण पक्ष 7 विक्रमी सम्वत् 2083 5 शव्वाल 1447 हिजरी नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

अब देश का पसंदीदा निवेश स्थल बना यूपी: योगी

पेज 2

शांत रहने से आपको साफ नजरिया मिलता है: गिल

खेल टाइम्स

शिक्षा का बजट घटाया, तो पीढ़ियां माफ नहीं करेंगी

सम्पादकीय

तेल अवीव पर ईरानी मिसाइलों की बारिश

पेज 12

संक्षिप्त समाचार

यूको बैंक के दो अधिकारियों सहित चार को पांच साल की सजा

नई दिल्ली। अहमदाबाद की एक विशेष केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) अदालत ने बैंक धोखाधड़ी के दो अलग-अलग मामलों में यूको बैंक के अधिकारियों सहित चार व्यक्तियों को पांच साल के सश्रम कारावास की सजा के साथ ही उन पर कुल 1.33 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। अदालत ने पहले मामले में गांधीनगर के चिलोडा शाखा के यूको बैंक के तत्कालीन वरिष्ठ प्रबंधक मेदम भगवती प्रसाद और तत्कालीन सहायक प्रबंधक भास्कर रमेशचंद्र सोनी के साथ साबरकांठा के हेवन फाइव एंटरप्राइज के प्रोपराइटर जयेंद्र सिंह दह्याजी मकवाना को बैंक धोखाधड़ी के मामले में पांच साल के सश्रम कारावास और कुल 1.33 करोड़ रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई।

आई एंड पैक रेड मामले में सुप्रीम कोर्ट का दखल

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल में आई-पैक के ऑफिस में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की रेड के मामले में सुनवाई की। कोर्ट ने मंगलवार को ममता बनर्जी की बंगाल सरकार से पूछा कि अगर केंद्र में आपकी सरकार होती और कोई राज्य ऐसी कार्रवाई करता, तो आपका रुख क्या होता। जस्टिस पीके मिश्रा और जस्टिस एनवी अंजारिया की बेंच ने पूछा कि क्या ड्यूटी पर मौजूद ईडी अधिकारी अपने अधिकार खो देते हैं। कोर्ट ने बताया कि ईडी के कुछ अधिकारियों ने निजी तौर पर भी याचिका दायर की है। राज्य की ओर से सीनीयर एडवोकेट कपिल सिब्बल ने कहा कि ईडी के पास अन्य कानूनी विकल्प हैं, इसलिए वह आर्टिकल 32 के तहत याचिका नहीं दे सकती।

रेलवे ने टिकट कैंसिल करने के बदले नियम

नई दिल्ली। भारतीय रेलवे ने ट्रेन से सफर करने वाले यात्रियों को बड़ी राहत दी हैं। रेलवे ने टिकट कैंसिलेशन और बोर्डिंग प्वाइंट बदलने के नियमों में बदलाव किया है। रेलवे के नए नियमों के मुताबिक, अगर कोई यात्री अपनी कन्फर्म टिकट को यात्रा से 72 घंटे पहले कैंसिल करता है, तो उसे लगभग पूरा पैसा वापस मिल जाएगा। इस दौरान केवल एक तय फ्लैट कैंसिलेशन चार्ज ही काटा जाएगा। जबकि बाकी राशि रिफंड कर दी जाएगी। इससे समय पर टिकट कैंसिल करने वालों को राहत मिलेगी। अगर टिकट 72 घंटे से लेकर 24 घंटे के बीच कैंसिल की जाती है, तो रेलवे किराए का 25 प्रतिशत हिस्सा काटेगा और बाकी पैसा लौटाएगा।

एक साल में निपटाएं आतंकवाद विरोधी केस: सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। आतंकवाद विरोधी मामलों में सख्ती दिखाते हुए सप्रीम कोर्ट ने एक बड़ा निर्देश दिया। सर्वोच्च न्यायालय ने मंगलवार को दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र समेत 17 राज्यों से कहा कि वे विशेष एनआईए अदालतों के माध्यम से यूएपीए यानी आतंकवाद विरोधी मामलों के मुकदमों को एक साल के अंदर निपटाने का प्रयास करें।

देश में पहली बार इच्छामृत्यु: एम्स में हरीश राणा की मौत

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। गाजियाबाद के हरीश राणा का मंगलवार को दिल्ली के एम्स अस्पताल में निधन हो गया। हरीश राणा ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें सुप्रीम कोर्ट से इच्छामृत्यु की अनुमति मिली थी। 13 साल से अधिक समय तक कोमा में रहने के बाद दिल्ली के एम्स में हरीश राणा का निधन हो गया।

हरीश राणा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के इंस्टीट्यूट रोटरी कैंसर अस्पताल (आईआरसीएच) में भर्ती थे। उन्हें उपशामक देखभाल वार्ड में रखा गया था। वे पिछले एक सप्ताह से बिना खाना और पानी के जीवित थे। यह प्रक्रिया छह दिनों से चल रही थी। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद एम्स ने डाक्टरों की एक कमेटी गठित की और उसे 14 मार्च को एम्स में भर्ती कराया गया था। बता दें कि, डाक्टर के अनुसार हरीश राणा के शरीर से पोषण देने वाली ट्यूब निकाली नहीं गई थी, बल्कि उस पर कैप लगा दिया गया था। इसी तरह पानी देने वाली ट्यूब को भी कैप लगाकर बंद कर दिया गया था। इस तरह से हरीश राणा को इच्छामृत्यु देने की प्रक्रिया आगे बढ़नी शुरू हुई थी। वहीं इससे पहले हरीश राणा के माता-पिता की ओर से उनके अंगदान का निर्णय लेने के बाद डाक्टरों ने उनकी जांच की। हरीश राणा की मृत्यु के बाद उनके अंगों से दूसरे लोगों को भी जीवन मिल सकेगा। बता दें कि हरीश राणा पिछले 13 साल से बिस्तर पर पड़े होकर जिंदगी और मौत के बीच जंग लड़ रहे थे। साथ ही पूरी प्रक्रिया के बारे में निर्देश दिए थे। एम्स के डाक्टर पूरी प्रक्रिया को दर्द रहित और सामान्य बनाने पर काम कर रहे थे। इच्छामृत्यु की दूसरे चरण की प्रक्रिया शुरू होने के बाद हरीश राणा से मिलने की अनुमति बंद कर दी गई थी।

- 13 साल से कोमा में थे हरीश
- वे पिछले एक सप्ताह से बिना खाना और पानी के सांसें ले रहे थे

हिंसा और प्रलोभन मुक्त चुनाव के लिए ईसीआई का मास्टर प्लान

नई दिल्ली। भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने मंगलवार को 'अंतर-राज्यीय सीमा बैठक' आयोजित की। इसका उद्देश्य आगामी विधानसभा चुनावों और विभिन्न राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में होने वाले उपचुनावों से पहले, समन्वय बढ़ाना, अवैध गतिविधियों पर रोक लगाना और फेयर चुनाव सुनिश्चित करना है।

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने चुनाव आयुक्तों डा. एसएस संधू और डा. विवेक जोशी के साथ 5 चुनावी राज्यों और उनके 12 पड़ोसी राज्यों के मुख्य सचिवों, मुख्य निर्वाचन अधिकारियों (सीईओ), पुलिस महानिदेशकों (डीजीपी) के साथ- साथ प्रवर्तन एजेंसियों के प्रमुखों के साथ समीक्षा बैठक की।

- सीमाओं को सील करने और सघन जांच के आदेश

ईसाई या इस्लाम अपनाने पर खत्म होगा एससी का दर्जा: सुप्रीम कोर्ट

केवल हिंदू, बौद्ध व सिख को ही अनुसूचित जाति का मिलेगा दर्जा

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को कहा कि केवल हिंदू, सिख और बौद्ध धर्म से जुड़े लोग ही अनुसूचित जाति का दर्जा प्राप्त कर सकते हैं। अगर कोई ईसाई या किसी और धर्म में धर्मांतरण करता है, तो वह अनुसूचित जाति का दर्जा खो देगा।

जस्टिस पीके मिश्रा और जस्टिस एनवी अंजारिया की बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा कि ईसाई धर्म अपनाने वाला दलित व्यक्ति अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत मिलने वाले किसी भी संरक्षण का दावा नहीं कर सकता है। यह फैसला आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट के मई 2025 के फैसले के खिलाफ लगाई गई चिंथाडा की याचिका पर सुनाया गया। धर्म परिवर्तन के बाद पादरी बने चिंथाडा आनंद ने याचिका लगाई थी कि उन्हें अक्काला रामिरेड्डी समेत कुछ लोगों से जातिगत भेदभाव और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। 1985 के सूसाई बनाम भारत सरकार से जुड़े एक केस में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया था कि यदि कोई व्यक्ति ईसाई धर्म अपनाने के बाद दोबारा हिंदू धर्म में लौटता है, तो उसे एससी दर्जा प्राप्त करने के लिए विश्वसनीय प्रमाण और समुदाय की स्वीकृति की जरूरत होगी। केवल लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से धर्म परिवर्तन करने को सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के साथ धोखा करार दिया। यह मामला विशाखापट्टनम जिले के अनाकापल्ली का है, जहां मूल रूप से एससी (माला समुदाय) के चिंथाडा ने ईसाई धर्म अपना लिया और पादरी बन गया।

- दोबारा हिंदू धर्म में लौटने पर एससी का दर्जा प्राप्त करने को विश्वसनीय प्रमाण और समुदाय की स्वीकृति की जरूरत होगी

महिला अफसर सेना में स्थायी कमीशन की हकदार: शीर्ष अदालत

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना में शॉर्ट सर्विस कमीशन (एसएससी) की महिला अफसरों को पूरी पेंशन देने का आदेश दिया। जिन मामलों में महिला अफसर परमानेंट कमीशन (पीसी) नहीं मिलने के कारण पहले ही सेवा छोड़ चुकी थीं, उन्हें एकमुश्त राहत देते हुए 20 साल की सेवा पूरी मानकर पेंशन और अन्य लाभ देने का फैसला सुनाया। कोर्ट ने कहा कि सशस्त्र बलों के भीतर मौजूद सिस्टमिक भेदभाद के कारण महिला अफसरों को परमानेंट कमीशन से वंचित किया गया। महिलाओं को परमानेंट कमीशन न देना उनकी योग्यता की कमी नहीं, बल्कि व्यवस्था में मौजूद भेदभाव का नतीजा था। पूरा मामला एसएससी के तहत नियुक्त महिला अफसरों की याचिकाओं से जुड़ा था, जिन्होंने पीसी देने की मांग की थी। एसएससी के तहत नियुक्त अफसर का कार्यकाल 10 साल का होता है, जिसे 4 साल तक बढ़ाया जा सकता है।

ईरान से जंग जारी रही, तो गंभीर नतीजे होंगे: पीएम मोदी

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम एशिया के हालात पर राज्यसभा में कहा कि अमेरिका-इजरायल की ईरान से जंग जारी रही, तो इसके दुष्परिणाम होंगे। आने वाला समय देश की सबसे बड़ी परीक्षा लेने वाला है। इसमें राज्यों का सहयोग जरूरी है। टीम इंडिया की तरह काम करना होगा। उन्होंने कहा कि होर्मुज स्ट्रेट में हमारे जहाज और भारतीय क्रू फंसे हुए हैं।

ये चिंताजनक है। हमारे व्यापार के रास्ते प्रभावित हो रहे हैं। गैस-तेल, फर्टिलाइजर्स जैसे जरूरी सामान की सप्लाई पर असर पड़ा है। एक दिन पहले पीएम ने लोकसभा में 25 मिनट की स्पीच दी थी। उन्होंने कहा था कि इस युद्ध के कारण दुनिया में जो कठिन हालात बने हैं, उनका प्रभाव लंबे समय तक बने रहने की आशंका है। इसलिए हमें तैयार रहना होगा। हम कोरोना के समय भी एकजुटता से ऐसी चुनौतियों का सामना कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे संकट के समय में गरीबों पर, श्रमिकों पर बुरा असर पड़ता है। उन्हें पीएम गरीब अन्न कल्याण योजना का लाभ मिलता रहे। राज्य सरकार इसके लिए विशेष व्यवस्था करे। ऐसे समय में कालाबाजारी करने वाले, जमाखोरी करने वाले एक्टिव होते हैं। जहां से शिकायतें आती हैं, वहां कार्रवाई कीजिए। संकट कितना भी बड़ा है, भारत की तेज ग्रोथ बनाए रखना सबकी जिम्मेदारी है।

- आने वाला समय देश की सबसे बड़ी परीक्षा लेगा
- हमें टीम इंडिया की तरह काम करना होगा

पश्चिम एशिया संकट के बीच प्रधानमंत्री ने ट्रम्प से की बात, होर्मुज पर जताई चिंता

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच भारत और अमेरिका के बीच उच्च स्तर पर अहम बातचीत हुई है। पीएम मोदी ने अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प से फोन पर बात कर क्षेत्र की मौजूदा स्थिति पर चर्चा की। खास तौर पर होर्मुज स्ट्रेट को खुला रखने की जरूरत पर दोनों नेताओं ने गंभीरता से विचार किया, क्योंकि यह वैश्विक तेल आपूर्ति के लिए बेहद महत्वपूर्ण मार्ग है। अमेरिकी राजदूत की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति ट्रम्प के बीच हुई बातचीत में पश्चिम एशिया के हालात और समुद्री सुरक्षा पर फोकस रहा। दोनों नेताओं ने माना कि होर्मुज स्ट्रेट का खुला रहना जरूरी है ताकि वैश्विक व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति बाधित न हो। यह बातचीत ऐसे समय हुई है जब इजरायल-ईरान तनाव के कारण क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ रही है।

लोकसभा में ट्रांसजेंडर बिल पारित

नई दिल्ली। लोकसभा ने ट्रांसजेंडर लोगों के अधिकार और सुरक्षा से जुड़े कानून में संशोधन करने वाला बिल पास कर दिया है। इस बिल के जरिये ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए सुरक्षा और उनके अधिकारों को और मजबूत बनाने का प्रयास किया गया है।

अब इस कानून के तहत उनकी पहचान, सामाजिक और आर्थिक अधिकारों की बेहतर रक्षा होगी। कांग्रेस और कुछ अन्य दलों ने बिल को लेकर चर्चा की, लेकिन अंत में यह पारित हो गया। सरकार का कहना है कि यह कदम ट्रांसजेंडर लोगों को समाज में समान अवसर और सम्मान देने की दिशा में महत्वपूर्ण है। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने संसद परिसर में सरकार की नीतियों और ट्रांसजेंडर बिल को लेकर अपनी राय रखी।भारत पहले खुद को विश्व नेता और शांति स्थापित करने वाला देश बताता था, लेकिन आज के हालात चाहे रूस-यूक्रेन जंग हों या अन्य वैश्विक मुद्दे, को देखते हुए हमें इस पर गंभीरता से सोचने की जरूरत है।

- अधिकारों की रक्षा होगी और सुरक्षा कानून में होगा संशोधन

लैंड फॉर जॉब केस: लालू यादव को झटका

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। लैंड फॉर जॉब से जुड़े भ्रष्टाचार के मामले में आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव को दिल्ली हाई कोर्ट से झटका लगा है। दिल्ली हाईकोर्ट ने लालू प्रसाद यादव की उस मांग को खारिज कर दिया है, जिसमें लालू प्रसाद यादव ने दर्ज एफआईआर रद्द करने की मांग की गई थी।

जस्टिस रविंदर डुडेजा ने कहा कि याचिका में कोई दम नहीं है। दाखिल याचिका में कहा गया था कि सीबीआई ने यह केस बिना जरूरी सेंशन के दर्ज किया गया, जो कानूनी रूप से अवैध है। मामले की सुनवाई के दौरान लालू प्रसाद यादव की ओर से पेश वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने कहा था कि सीबीआई ने 18 मई 2022 को एफआईआर दर्ज की, जबकि उस समय लालू प्रसाद यादव रेल मंत्री के रूप में अपने आधिकारिक कर्तव्यों का पालन कर रहे थे। यादव का मामला यह था कि सीबीआई एफआईआर दर्ज करने से पहले उनके खिलाफ प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट (पीसी एक्ट) की धारा 17-ए के तहत जरूरी प्रासिक्यूशन मंजूरी लेने में नाकाम रही थी।

- दिल्ली हाईकोर्ट ने एफआईआर रद्द करने से किया इन्कार

कश्मीरी अलगाववादी नेता आसिया अंद्राबी को उम्रकैद

श्रीनगर। कश्मीर की अलगाववादी नेता आसिया अंद्राबी को दिल्ली की एक अदालत ने मंगलवार को राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) द्वारा जांच किए गए आतंकी वित्तपोषण और साजिश के मामले में सजा सुनाते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश चंद्रजीत सिंह ने गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम और भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की कई धाराओं के तहत अंद्राबी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। अदालत ने उन पर कई लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया। यूएपीए की धारा 18 के तहत अंद्राबी को आजीवन कारावास और 5 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया। जुर्माना न भरने की स्थिति में उन्हें एक साल की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। आईपीसी की धारा 120बी के तहत आपराधिक साजिश के लिए उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। उन्हें यूएपीए की धारा 38 और 39 के तहत जुर्माने के साथ-साथ 10-10 साल की साधारण कैद की सजा भी सुनाई गई। अदालत ने उन्हें आईपीसी की धारा 153ए और 505 के तहत जुर्माने और अतिरिक्त सजा के साथ-साथ पांच-पांच साल की सजा भी सुनाई। आईपीसी की धारा 121ए के तहत, उसे आजीवन कारावास और जुर्माना लगाया गया और जुर्माना न भरने पर अतिरिक्त अवधि की सजा सुनाई गई। सह-आरोपी सोफी फहमीदा और नाहिदा नसरीन को अमानवीय दंड संहिता (यूएपीए) की धारा 18 के तहत 30 वर्ष के साधारण कारावास और 5 लाख रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई। उन्हें आईपीसी की धारा 120बी के तहत भी 30 वर्ष की सजा दी गई। दोनों को यूएपीए की धारा 38 और 39 के तहत जुर्माने के साथ 10-10 वर्ष की सजा सुनाई गई। उन्हें आईपीसी की धारा 153ए, 153बी और 505 के तहत चार-चार वर्ष की सजा भी सुनाई गई।

- सोफी फहमीदा और नाहिदा नसरीन को 30 साल की जेल

गैस लेकर दो भारतीय जहाज 26 व 27 मार्च को पहुंचेंगे भारत

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। केंद्र सरकार के अलग-अलग मंत्रालयों ने मंगलवार को दिल्ली में ज्वाइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस में तेल और गैस संकट पर मौजूदा हालात की जानकारी दी। शिपिंग मंत्रालय के स्पेशल सेक्रेटरी राजेश सिन्हा ने कहा कि दो भारतीय एलपीजी जहाज- पाइन गैस और जग वसंत होर्मुज स्ट्रेट पार कर भारत की ओर बढ़ रहे हैं।

राजेश सिन्हा ने बताया कि पाइन गैस करीब 45,000 मीट्रिक टन एलपीजी लेकर 27 मार्च को न्यू मैंगलोर पोर्ट पहुंचेगा, जबकि जग वसंत लगभग 47,600 मीट्रिक टन एलपीजी लेकर 26 मार्च को कांडला पहुंचने वाला है। इन जहाजों के निकलने के बाद अब फारस की खाड़ी में 20 भारतीय जहाज हैं, जिन पर 540 भारतीय नाविक सवार हैं। वहीं पेट्रोलियम मंत्रालय की ज्वाइंट सेक्रेटरी सुजाता शर्मा ने कहा कि जंग के कारण एलपीजी की सप्लाई प्रभावित जरूर हुई है, लेकिन किसी भी डिस्ट्रीब्यूटर पर गैस खत्म होने की स्थिति नहीं है। उन्होंने बताया कि हाल ही में कुछ पैनिक बुकिंग देखी गई, लेकिन डिलीवरी सामान्य रही। सुजाता शर्मा ने कहा कि देश में पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध है और पेट्रोल-डीजल की सप्लाई भी पर्याप्त है। सभी घरेलू उपभोक्ताओं को एलपीजी सिलेंडर मिल रहे हैं और पीएनजी की सप्लाई भी 100 फीसदी बनी हुई है। पेट्रोल पंप सामान्य रूप से काम कर रहे हैं। सरकार ने लोगों को अफवाहों पर ध्यान न देने और पैनिक बुकिंग से बचने की सलाह दी। सरकार ने बताया कि जहां भी पीएनजी पाइपलाइन मौजूद हैं, वहां सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन (सीजीडी) कंपनियों को 5 दिनों के भीतर स्कूलों, कॉलेजों, हॉस्टलों, कम्युनिटी किचन और आंगनवाड़ी किचन में कनेक्शन देने का निर्देश दिया गया है।

- दोनों भारतीय एलपीजी जहाज- पाइन गैस और जग वसंत होर्मुज स्ट्रेट पार कर चुके: केंद्र सरकार

संक्षिप्त समाचार

उत्तर प्रदेश में 26 से फिर बदलेगा मौसम बूंदाबांदी के आसार

लखनऊ। पिछले सप्ताह आंधी, ओलावृष्टि और बारिश से फसलों को प्रभावित करने के बाद मौसम का मिजाज 26 मार्च से एक बार फिर तल्ख होने के आसार है। मौसम विभाग ने 26 मार्च को पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कहीं कहीं गरज चमक के साथ बौछारें पड़ने का अनुमान जताया है, जबकि पूर्वी भाग में मौसम सामान्यत: शुष्क रहेगा। हालांकि 27 मार्च को दोनों हिस्सों में कहीं-कहीं वर्षा और गरज-चमक की संभावना है। 28 मार्च को पूरे प्रदेश में मौसम शुष्क रहने के आसार है, वहीं 29 मार्च को: पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ स्थानों पर वर्षा या बौछारें पड़ने का अनुमान है, जबकि पूर्वी हिस्से में मौसम शुष्क रहेगा। 30 मार्च को पश्चिमी और पूर्वी दोनों क्षेत्रों में कहीं-कहीं गरज-चमक के साथ बारिश की संभावना है। विभाग के अनुसार 27 मार्च को प्रदेश के कुछ स्थानों पर मेघगर्जन के साथ बिजली गिरने की संभावना है।

भाजपा के वरिष्ठ नेता महेंद्र का निधन

देवरिया। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व एमएलसी महेंद्र यादव का सोमवार देर रात गोरखपुर में उपचार के दौरान निधन हो गया। वे लगभग 75 वर्ष के थे और कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। महेंद्र यादव का राजनीतिक जीवन लंबा और सक्रिय रहा। उन्होंने देवरिया में भाजपा के जिलाध्यक्ष के रूप में वर्ष 2011 से 2017 तक संगठन को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अलावा वे सदर ब्लॉक प्रमुख के पद पर भी लंबे समय तक रहे और बाद में एमएलसी के रूप में कार्य किया। उनके निधन की खबर मिलते ही जिले सहित राजनीतिक गलियारों में शोक की लहर दौड़ गई।

गैस की किल्लत व महंगाई से ठप हुए छोटे कारोबार

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ मजदूर हो रहे पलायन को मजबूर

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में रसोई गैस की गहराते संकट और बढ़ती कीमतों ने छोटे कारोबारियों और प्रवासी मजदूरों की कमर तोड़ दी है। हालात ऐसे हो गए हैं कि पूर्वांचल के जिलों से आए कई मजदूर और ठेला-खोमचा संचालक अपने व्यवसाय बंद कर गांव लौटने को मजबूर हैं।

आजमगढ़, बस्ती, देवरिया, मऊ, बलिया, जौनपुर और कुशीनगर जैसे जिलों से आए लोगों का कहना है कि गैस की अनियमित आपूर्ति और ब्लैक में दोगुने दाम पर सिलेंडर मिलने से रोजी-रोटी चलाना मुश्किल हो गया है। हजरतगंज में बन-मक्खन चाय की दुकान चलाने वाले राकेश मौर्य बताते हैं कि कमाई घट रही है और गैस पर खर्च बढ़ता जा रहा है। इंदिरानगर में फास्ट फूड का ठेला लगाने वाले बस्ती निवासी अरविंद मिश्रा कहते हैं कि 10 दिन से सिलेंडर नहीं मिला, जिससे काम पूरी तरह बंद हो गया है। रोजाना 500 रुपये तक कमाने वाले अरविंद अब किराया तक नहीं चुका पा रहे हैं और गांव लौटने का फैसला कर चुके हैं। निशातगंज में चाट बेचने वाले देवरिया निवासी राहुल वर्मा का कहना है कि गैस ब्लैक में बहुत महंगी मिल रही है। मजबूरी में उन्होंने इंडक्शन चूल्हा खरीदा, लेकिन उससे काम की रफ्तार धीमी हो गई है और ग्राहक इंतजार नहीं करते। गोमतीनगर में बलिया के मनोज सिंह ने बताया कि गैस दोगुने दाम पर मिल रही है, ऐसे में दुकान चलाना असंभव हो गया है। चौक क्षेत्र में कबाब-पराठा बेचने वाले कुशीनगर के मोहम्मद आरिफ के अनुसार गैस खत्म होने पर उन्होंने लकड़ी से खाना बनाने की कोशिश की, लेकिन मकान मालिक ने इसकी अनुमति नहीं दी, जिससे उनकी आमदनी पूरी तरह प्रभावित हो गई। संकट का असर केवल ठेला-खोमचा चलाने वालों तक सीमित नहीं है। ट्रांसपोर्ट नगर, टॉकटोरा इंडस्ट्रियल एरिया और चिनहट जैसे इलाकों में दिहाड़ी मजदूर भी भारी संकट में हैं। कई मजदूर बैग और बिस्तर के साथ शहर छोड़ते नजर आ रहे हैं।

गैस के कारण जीवन यापन मुश्किल हो गया

सरोजिनी नगर और अमौसी की छोटी इकाइयों में काम करने वाले मजदूरों का कहना है कि काम होने के बावजूद महंगी गैस के कारण जीवन यापन मुश्किल हो गया है। चिनहट में पैकेजिंग यूनिट में काम करने वाले उन्नाव के मनोज कुमार कहते हैं कि गैस उपलब्ध भी हो, तो इतनी महंगी है कि खरीद पाना संभव नहीं। एक होटल में काम कर रहे बहराइच के शंकर सोनी एक हफ्ते से सिलेंडर भरवाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन डीलर स्टॉक न होने की बात कह रहे हैं। बर्लिंगटन स्थित 'गुप्ता चाट कॉर्नर' के संचालकों ने बताया कि उनका सिलेंडर खत्म होने वाला है और दुकान बंद होने की कगार पर है। वहीं हुसैनगंज में बाटी-चोखा बेचने वाले एक परिवार ने दुकान बंद कर गांव लौटने का फैसला कर लिया है। लखनऊ में एलपीजी संकट ने छोटे व्यापारियों और मजदूरों के सामने गंभीर आजीविका संकट खड़ा कर दिया है।

यूपी में लोकसभा सीटें बढ़ने का बैठक में उठाएंगे मुद्दा: अखिलेश यादव

लखनऊ। मोदी सरकार इस सत्र में महिला आरक्षण कानून में संशोधन विधेयक ला सकती है और इसे लेकर राजनीतिक गलियारों में भी चर्चा तेज है। अगर केंद्र सरकार इस बिल को लाती है, तो उत्तर प्रदेश में भी लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ जाएगी। वहीं इसे लेकर अब समाजवादी पार्टी के मुखिया और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव का भी बयान सामने आ गया है।

सपा चीफ अखिलेश यादव से पूछा गया कि सर्वदलीय बैठक बुलाई गई है। इस पर अखिलेश यादव ने कहा कि हमार नेता इस बैठक में महिला आरक्षण बिल को लेकर भी बात करेंगे, जो हमारा पहले स्टैंड था वही रहेगा कि पार्टी वाइज रिजर्वेशन हो और पार्टी को रिजर्वेशन का अधिकार दो हम उसके पक्ष में हैं। वहीं मिडिल ईस्ट जंग पर अखिलेश यादव ने कहा कि वार से सभी को नुकसान हो रहा है, भारत के पास एक मौका था भारत ने मौके को गंवा दिया है। उन्होंने कहा कि एक बार बिना प्रोटोकॉल पीएम पाकिस्तान गए थे आज फिर वो समय आ गया है। समाजवादी पार्टी की सांसद इकरा हसन ने भी इस पहल का स्वागत किया, लेकिन कहा कि आरक्षण कैसे लागू किया जाएगा, इस पर स्पष्टता की जरूरत है। उन्होंने कहा कि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारे देश में महिलाओं के लिए आरक्षण हो, लेकिन इसे कैसे लागू किया जाएगा, आरक्षण के मानदंड क्या होंगे, यह सब देखने की जरूरत है।

2029 लोस चुनाव से पहले बदल जाएगा यूपी का सियासी नक्शा!

सिर्फ 80 सीटों पर नहीं होंगे चुनाव, बढ़ेंगे 40 सांसद?

लखनऊ। उत्तर प्रदेश का सियासी नक्शा 2029 के लोकसभा चुनाव के पहले बदल सकता है। महिला आरक्षण कानून लागू होने के बाद परिसीमन के आसार जताए जा रहे हैं, तो अब यूपी में कितनी लोकसभा सीटें होने के अनुसमान है? लोकसभा चुनाव 2029 से पहले देश में निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या बढ़ सकती है। केंद्र सरकार आगामी 2029 के लोकसभा चुनाव से महिला आरक्षण कानून यानी नारी वंदन अधिनियम लागू करने की तैयारी कर रही है। सूत्रों के अनुसार इस प्रक्रिया के तहत लोकसभा की कुल सीटों को मौजूदा 543 से बढ़ाकर लगभग 816 करने की योजना पर भी काम चल रहा है।

कौन सा कानून है, जो गंगा में खाना खाने को मना करता है: ओवैसी

नई दिल्ली, वार्ता

■ देश मनमानी से नहीं, संविधान से चलेगा

एआईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने गंगा में इफ्तार पार्टी करने वाले युवकों का मसला उठाया। इस दौरान ओवैसी ने कहा कि ऐसा कौन सा कानून है, जो गंगा नदी में लोगों को खाना खाने से मना करता है, ऐसा कोई भी कानून नहीं है, बनारस वाले मामले में लोगों को जबरन फंसाया गया है, इस मुद्दे को भी लोगों ने राजनीतिक मुद्दा बना दिया है, जबकि एक भी ऐसा वीडियो नहीं है, जिसमें दिख रहा हो कि वहां उन लड़कों ने मांस खाया है।

उन्होंने कहा कि साफ तौर पर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। गंगा में नाले के पानी गिरते हैं, क्या वो सही है। गंगा मां हैं, तो उनका ध्यान क्यों नहीं रखा जाता है। साफ क्यों नहीं है। उन्होंने कहा कि यही वह देश है। जहां मुसलमानों को ईद मनाने के लिए हाईकोर्ट जाना पड़ता है। दूसरी तरफ उन्हें खून की होली खेलने की धमकी दी जाती है। भाईजान का हिंदुस्तान' सत्र में असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि ओवैसी ने कहा कि देश मनमानी से नहीं, संविधान से चलेगा। सरकार राष्ट्रीयता को हिंदुत्व से जोड़ रही है। भारत में मुसलमान कोई चांद से नहीं आया। इसी जमीन के हैं, यहीं पैदा हुए है। मुसलमान देशभक्त हैं और भारत सबका है। असदुद्दीन ओवैसी ने आगे कहा कि आज भारत क्या करेगा इसका फैसला ट्रंप ले रहे हैं।

यूपी लोक भवन सभागार में निवेश मित्र 3.0 शुरू, 2017 से पहले कोई नहीं करता था निवेश

अब देश का पसंदीदा निवेश स्थल बना यूपी

लखनऊ, वार्ता

■ 85 निवेशकों को लेटर ऑफ कम्फर्ट, एलिजिबिलिटी प्रमाण पत्र, सब्सिडी और भूमि आवंटन पत्र सौंपे

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 2017 में कोई भी निवेशक जब उत्तर प्रदेश आता था, तो यूपी में निवेश के नाम पर वह चुप हो जाता था। हमने संकल्प लिया और आज उत्तर प्रदेश भारत में निवेश का हब बन गया है। अब ये निवेश का केंद्र है और हम लगातार तरक्की कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में मंगलवार को लोक भवन सभागार में निवेश मित्र 3.0 का शुभारंभ किया गया। यह उन्नत एआई-आधारित सिंगल विंडो पोर्टल निवेशकों को 40 से अधिक विभागों की 200 से ज्यादा सेवाएं एक क्लिक पर उपलब्ध कराएगा, जिससे उद्योग स्थापना की प्रक्रिया और अधिक सरल, पारदर्शी तथा तेज हो जाएगी। कार्यक्रम में सीएम योगी ने सब्सिडी राशि का हस्तांतरण किया। उत्तर प्रदेश को देश के अंदर निवेश का बेहतरीन डेस्टिनेशन बनाने का सपना हमने 9 वर्ष पहले देखा था। आप सबकी उपस्थिति उस सपने को जमीनी हकीकत में बदल रही है। सीएम ने कहा कि डबल इंजन सरकार पर जनता का विश्वास है और हमारी टीम यूपी ने उस विश्वास पर खरा उतरने के लिए निरंतर परिश्रम किया है। मुख्यमंत्री ने जोर देकर कहा कि पिछली सरकारों ने उत्तर प्रदेश वासियों और युवाओं के सपनों को तोड़ा था, लेकिन अब प्रदेश पूरे देश में उद्यमियों के लिए सबसे पसंदीदा निवेश स्थल बन चुका है। यह विश्वास हमारी सबसे बड़ी पूंजी है मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि डबल इंजन सरकार पर हुआ विश्वास हमारी टीम ने परिश्रम से सार्थक किया है। उन्होंने उत्तर प्रदेश को भारत का फूड बास्केट बताते हुए कहा कि बीच के कालखंड में किसान पलायन करने और आत्महत्या करने को मजबूर थे। स्थितियां बहुत खराब थीं, लेकिन पिछले 9 वर्षों में हमने कृषि क्षेत्र को मजबूत किया। भारत की कुल कृषि योग्य भूमि का 11 प्रतिशत उत्तर प्रदेश के पास है, लेकिन खाद्यान्न उत्पादन में हम 21 प्रतिशत का योगदान कर रहे हैं।

यूपी को माफिया मुक्त प्रदेश बनाने पर जोर

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को कहा कि प्रदेश ने बीते कुछ वर्षों में एयर कनेक्टिविटी, निवेश और कानून-व्यवस्था के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन देखा है। उन्होंने कहा कि एक समय ऐसा था जब प्रदेश में 'ढाई एयरपोर्ट' ही संचालित माने जाते थे, जबकि आज उत्तर प्रदेश देश के सबसे तेजी से विकसित हो रहे एविएशन हब के रूप में उभर रहा है। लोकभवन में आयोजित निवेश मित्र सम्मेलन में उन्होने बताया कि पहले केवल लखनऊ और वाराणसी के एयरपोर्ट पूरी तरह सक्रिय थे, जबकि गोरखपुर और आगरा में सीमित और अनियमित उड़ानें संचालित होती थीं। लेकिन वर्तमान में प्रदेश में 16 घरेलू और 4 अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट संचालित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही जेवर में बन रहा नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट जल्द ही देश का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट बनने जा रहा है, जिसका उद्घाटन 28 मार्च को प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तावित है।

काम कोर्स
उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज़ पावर, शीघ्रपतन, नपुंसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

मिशन 2027 के लिए योगी कैबिनेट में फेरबदल की तैयारी

लखनऊ, वार्ता

■ प.उप्र इस बार मंत्रिमंडल विस्तार के केंद्र में रहेगा

उत्तर प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव 2027 को ध्यान में रखते हुए योगी आदित्यनाथ सरकार के मंत्रिमंडल विस्तार की चर्चाएं तेज हो गई हैं। माना जा रहा है कि इस विस्तार में प्रतिनिधित्व से वंचित जिलों के विधायकों को मौका दिया जाएगा, साथ ही कई नए चेहरे पहली बार मंत्री बन सकते हैं।

सूत्रों के मुताबिक पश्चिमी उत्तर प्रदेश इस बार मंत्रिमंडल विस्तार के केंद्र में रहेगा। भाजपा संगठन और सरकार की रणनीति उन जिलों को प्रतिनिधित्व देने की है, जहां अभी तक कोई मंत्री नहीं है। भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी ने बताया कि वर्तमान में कैबिनेट में छह पद खाली हैं। बिजनौर, बुलंदशहर, गौतमबुद्धनगर, अमरोहा, हापुड़, शामली और मुरादाबाद जैसे जिलों से कोई मंत्री नहीं हैं। वहीं मेरठ और गाजियाबाद जैसे जिलों से पहले से दो-दो मंत्री हैं। उन्होंने बताया कि मिशन 2027 को साधने के लिए भाजपा संगठन और सरकार दोनों स्तर पर जातीय संतुलन पर खास ध्यान दिया जा रहा है। पिछड़ा, अति पिछड़ा और अनुसूचित जाति वर्ग को साधने की रणनीति के तहत पहले ही भूपेंद्र चौधरी जैसे ओबीसी चेहरे को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया था। अब मंत्रिमंडल विस्तार में भी इसी संतुलन को आगे बढ़ाया जाएगा। सूत्रों की मानें, तो मंत्रिमंडल में प्रदर्शन और विवादों के आधार पर कुछ मंत्रियों को हटाए जाने की भी अटकलें हैं। वहीं एक-दो राज्य मंत्रियों को पदोन्नत कर कैबिनेट मंत्री बनाया जा सकता है। पश्चिमी यूपी के दो मंत्रियों को हटाए जाने की चर्चा भी जोरों पर है। सूत्रों के अनुसार पूर्व प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी का मंत्रिमंडल में शामिल होना लगभग तय है। इससे जाट समाज को साधने का संदेश जाएगा। इसके अलावा मेरठ के एमएलसी धर्मेंद्र भारद्वाज को मंत्री बनाकर ब्राह्मण वर्ग को साधने की तैयारी है। पश्चिमी यूपी में त्यागी समाज के प्रतिनिधित्व की कमी को देखते हुए मुरादनगर विधायक अजीतपाल त्यागी और एमएलसी अश्विनी त्यागी के नाम भी चर्चा में हैं। वहीं गुर्जर समाज को साधने के लिए पूर्व मंत्री अशोक कटारिया की वापसी की संभावना जताई जा रही है। बैठक में योगी, केशव प्रसाद मौर्य, ब्रजेश पाठक, पंकज चौधरी और संगठन मंत्री धर्मपाल सिंह शामिल हुए थे। इसके अलावा आरएसएस के वरिष्ठ पदाधिकारी अरुण कुमार भी बैठक में शामिल हुए थे जिससे बैठक का महत्व और बढ़ गया है। इस बैठक में मंत्रिमंडल विस्तार, संगठनात्मक फेरबदल और मिशन 2027 की रणनीति जैसे अहम मुद्दों पर चर्चा हुई थी।

मोदी का राज्यसभा में दिया बयान भ्रम फैलाने वाला : खड़गे

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने राज्यसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिए गए बयान को भ्रम पैदा करने वाला करार देते हुए सरकार पर गंभीर सवाल उठाए हैं। खड़गे ने मंगलवार को अपने सोशल मीडिया के माध्यम से कहा कि प्रधानमंत्री की असंगत कूटनीतिक नीति से भारत की रणनीतिक स्वायत्तता प्रभावित हुई है, जो दशकों से विदेश नीति की आधारशिला रही है। उन्होंने पूछा कि हालिया इजरायल दौरे के बाद उत्पन्न कूटनीतिक प्रभावों पर संसद और देश को विश्वास में क्यों नहीं लिया गया। उन्होंने दूसरा मुद्दा उठाते हुए कहा कि होर्मुज जलडमरूमध्य में करीब 37-40 भारतीय जहाज अब भी फंसे हुए हैं और इन पर लगभग 1100 नाविक सवार हैं। विदेश मंत्री एस जयशंकर और प्रधानमंत्री मोदी द्वारा ईरान से बातचीत के बावजूद सुरक्षित रास्ता क्यों नहीं मिल पाया, जबकि चीन, रूस और जापान जैसे देशों को अनुमति मिल रही है। उन्होंने ऊर्जा आयात के विविधीकरण के सरकारी दावे पर सवाल उठाते हुए कहा कि यदि 41 देशों से आयात हो रहा है, तो फिर देश में गैस और ईंधन की कमी, महंगाई और कालाबाजारी क्यों बढ़ रही है।

प्रयागराज कोल्ड स्टोरेज हादसा: अब तक 17 लोग रेस्क्यू, 4 मौतें

प्रयागराज, वार्ता

■ 12 जेसीबी हटा रहीं मलबा लगातार अमोनिया गैस का रिसाव जारी, फायर ब्रिगेड, कई थाने की फोर्स लगीं

संगम नगरी प्रयागराज के गंगा पार में फाफामऊ थाना क्षेत्र के चंदापुर गांव में स्थित आदर्श कोल्ड स्टोरेज की छत गिरने से सोमवार को भीषण हादसा हो गया था। कोल्ड स्टोर जब गिरा तो उस समय अफरा-तफरी मच गई। हादसा इतना भीषण था कि जिसमें 17 लोगों को रेस्क्यू करके निकाला गया और 4 लोगों की मौत हो गई। सोमवार से मंगलवार सुबह तक रेस्क्यू लगातार चलता रहा है, जिसमें पूरी रात 3 टीमें एसडीआरएफ, वाराणसी की एक एनडीआरएफ सहित फायर ब्रिगेड, स्वास्थ्य की टीम और कई थाने की फोर्स रात भर रेस्क्यू करती रही।

फिलहाल अभी भी रेस्क्यू जारी है, वहीं स्थानीय लोगों का कहना है कि कल से लगातार अमोनिया गैस के रिसाव से सांस लेना मुश्किल हो गया है। बता दें, लगभग 12 जेसीबी और उतने ही मलबे उठाने वाली ट्रक और लगातार रेस्क्यू के बाद, अभी भी यहां पर काम में लगे कर्मचारियों का कहना है कि अभी भी एक दिन इस मलबे को हटाने में लग सकता है। वहीं रेस्क्यू ऑपरेशन में अब तक 17 लोगों को बचाकर अस्पताल भेजा गया है और 12 लोग घायल हैं। इस हादसे ने कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। जानकारी के मुताबिक यह कोल्ड स्टोरेज सपा के पूर्व विधायक अंसार अहमद का बताया जा रहा है।

शुरुआती जांच में बिल्डिंग के स्ट्रक्चर में भारी लापरवाही की बात सामने आ रही है। चश्मदीदों का कहना है कि बिल्डिंग एक तरफ से झुकने लगी और फिर अचानक उसकी छत भरभराकर गिर गई। इतना ही नहीं, कोल्ड स्टोरेज से अमोनिया गैस के रिसाव की भी होने लगा, जिसने रेस्क्यू ऑपरेशन को और चुनौतीपूर्ण बना दिया है। हालांकि प्रशासन का कहना है कि उनके पास लाइसेंस था, लेकिन अब इस बात की गहन जांच की जाएगी कि क्या मानकों की अनदेखी की गई थी। जिलाधिकारी और पुलिस कमिश्नर खुद मौके पर मौजूद हैं।

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काज़ीज़ादा, अमरोहा-UP
हाशमी दवाखाना
9997161320, 8272800800

Cipzer
— HEALTH WITH CARE —
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त
भूख की कमी, बदहज़मी जॉन्डिस, फेटी लीवर, एल्कॉहलिक लिवर डिज़ीज़ आदि से लड़ने की ताकत देता है ताकि आप रहें फिट एण्ड एक्टिव
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

वाराणसी में तेज धमाके से मकान गिरा, दो मरे, दो गंभीर

वाराणसी। उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में मंडुआडीह थाना क्षेत्र के लहरतारा इलाके में मंगलवार को एक मकान में तेज धमाके के साथ मकान गिर गया। इस हादसे में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त नीतू कादयान, अपर जिला मजिस्ट्रेट (नगर) आलोक वर्मा, सहायक पुलिस आयुक्त (रोहनिया) समेत भारी पुलिस बल और फॉरेंसिक टीम पहुंच गई। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि खाना बनाते समय गैस सिलेंडर में ब्लास्ट हो गया, जिससे मकान पूरी तरह ध्वस्त हो गया। यह मकान लहरतारा इलाके में गिरिजा देवी का था। वे अपने दो बेटों अमन चौधरी (32), अवधेश चौधरी (30) और बेटी प्रीति (24) के साथ रहती थीं। गिरिजा देवी खाना बना रही थीं, तभी गैस तेजी से लीक होने लगा और जोरदार धमाका हो गया। हादसे में अवधेश चौधरी और प्रीति की मौके पर ही मौत हो गई।

मैनाठेर दंगा मामला: 16 आरोपी दोषी करार, 27 मार्च को सजा का ऐलान

मुरादाबाद। मुरादाबाद के बहुचर्चित मैनाठेर दंगा मामले में करीब 15 वर्ष बाद अदालत ने बड़ा फैसला सुनाते हुए 16 आरोपियों को दोषी करार दिया है। कोर्ट ने 14 दोषियों को तत्काल हिरासत में लेकर जेल भेजने के आदेश दिए, जबकि दो आरोपी सुनवाई के दौरान अनुपस्थित रहे। सजा का ऐलान अब 27 मार्च को किया जाएगा। अभियोजन अधिकारी के अनुसार वर्ष 2011 में मैनाठेर थाना क्षेत्र के डींगरपुर गांव में हुए दंगे के मामले की सुनवाई अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश (एडीजे-2) की अदालत में चल रही थी। साक्ष्यों के आधार पर अदालत ने यह महत्वपूर्ण फैसला सुनाया।

अमेरिका-इजरायल-ईरान युद्ध में पाकिस्तान की भूमिका भारत के लिए कूटनीतिक झटका: जयराम

नई दिल्ली, वार्ता

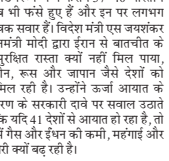

वरिष्ठ कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने मंगलवार को अंतर्राष्ट्रीय मीडिया रिपोर्टों का हवाला देते हुए दावा किया कि पाकिस्तान एक तरफ अमेरिका और इजरायल और दूसरी तरफ ईरान के बीच एक प्रमुख मध्यस्थ के रूप में उभरा है जो भारत के लिए एक गंभीर झटका है।

रमेश ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर अपने संदेश में कहा कि प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय मीडिया संस्थानों की कई रिपोर्टों ने पाकिस्तान को अमेरिका और इजरायल तथा दूसरी तरफ ईरान के बीच इस्तेमाल किए जा रहे मध्यस्थों में से एक के रूप में पहचाना है। यदि ये रिपोर्ट सच हैं, तो वे भारत के लिए एक गंभीर झटका और तिरस्कार का प्रतिनिधित्व करती हैं और यह सब स्वयं को घोषित करने वाले 'विश्वगुरु' के कारण है। रमेश ने कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' में भारत की 'निस्संदेह सैन्य सफलताओं' के बावजूद पाकिस्तान ने पिछले एक साल में कूटनीतिक रूप से नई दिल्ली को पीछे छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि दुखद वास्तविकता यह है कि उसके बाद पाकिस्तान का कूटनीतिक जुड़ाव और विमर्श प्रबंधन मोदी सरकार की तुलना में काफी बेहतर रहा है। उन्होंने कहा कि इस्लामाबाद, जो कभी गंभीर राजनीतिक, आर्थिक और वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रहा था, अब फिर से प्रासंगिक हो गया है। कांग्रेस नेता ने पाकिस्तान के नेतृत्व और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच विकसित होते संबंधों की ओर भी इशारा किया और आरोप लगाया कि इसने इस्लामाबाद की वैश्विक स्थिति को मजबूत किया है। उन्होंने दावा किया कि ट्रंप ने पाकिस्तान के सैन्य नेतृत्व को 'गर्मजोशी से और बार-बार गले लगाया' था और कई मौकों पर असीम मुनीर की व्हाइट हाउस में मेजबानी की, जिसमें उन्होंने एक ष्अभूतपूर्व दोपहर के भोजनष का भी उल्लेख किया। रमेश ने कहा कि ष्पाकिस्तानी सत्ता प्रतिष्ठान ने राष्ट्रपति ट्रंप के करीबी घेरे के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित कर लिए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए रमेश ने उनकी हालिया कूटनीतिक पहुंच की आलोचना की, विशेष रूप से ईरान पर अमेरिका-इजरायल के कथित हवाई हमलों से ठीक पहले की गई इजरायल यात्रा को लेकर कटाक्ष किया है। उन्होंने कहा कि मोदी की इजरायल की अनुचित यात्रा, जो ईरान पर अमेरिका-इजरायल के अकारण हवाई हमले शुरू होने से ठीक दो दिन पहले समाप्त हुई, हमारे राजनीतिक इतिहास में एक बेहद विनाशकारी विकल्प के रूप में दर्ज की जाएगी। उन्होंने तर्क दिया कि इस यात्रा ने इस क्षेत्र में एक तटस्थ मध्यस्थ के रूप में कार्य करने की भारत की क्षमता को कमजोर कर दिया है। उन्होंने सरकार की विदेश नीति के प्रति अपने दृष्टिकोण की आलोचना तेज करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री की गले मिलने वाली कूटनीति की पोल बुरी तरह खुल गई है।

ट्रांसजेंडर अधिकार कार्यकर्ताओं ने ट्रांसजेंडर विधेयक के खिलाफ राहुल गांधी से की मुलाकात

नई दिल्ली। देशभर से ट्रांसजेंडर अधिकार कार्यकर्ताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने मंगलवार को संसद में नेता विपक्ष लोकसभा राहुल गांधी से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान प्रियंका गांधी समेत पार्टी के वरिष्ठ सांसद और नेता भी मौजूद रहे।

प्रतिनिधिमंडल ने सरकार के प्रस्तावित ट्रांसजेंडर पर्सन्स बिल का विरोध करते हुए कहा कि यह विधेयक उनकी आत्म-पहचान के अधिकार को कमजोर करता है, जिसे उच्चतम न्यायालय ने मान्यता दी है। उनका कहना था कि इस बिल के लागू होने से लाखों ट्रांसजेंडर खासकर पारंपरिक समुदायों से जुड़े लोगों, की कानूनी पहचान और संरक्षण खतरे में पड़ सकते हैं। कार्यकर्ताओं ने बिल के कुछ प्रावधानों को अमानवीय और दंडात्मक बताते हुए अनिवार्य मेडिकल जांच, पर्याप्त सुरक्षा उपायों के बिना दंडात्मक प्रावधानों और मौजूदा अधिकारों में कटौती पर भी चिंता जताई। राहुल गांधी ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि कांग्रेस पार्टी ट्रांसजेंडर समुदाय के अधिकारों और गरिमा के साथ खड़ी है और इस विधेयक का संसद में विरोध करेगी। राहुल गांधी ने इसे खुला हमला करार देते हुए कहा कि भाजपा सरकार का ट्रांसजेंडर व्यक्ति (संशोधन) विधेयक ट्रांसजेंडर लोगों के संवैधानिक अधिकारों और पहचान पर एक खुला हमला है। उन्होंने कहा ट्रांसजेंडर लोगों से अपनी पहचान स्वयं निर्धारित करने का अधिकार छीनता है, जो उच्चतम न्यायालय के फैसले का उल्लंघन है। यह देशभर के विभिन्न समुदायों की सांस्कृतिक पहचान को खत्म करता है।

दून के निजी कॉलेज में खूनी रंजिश, छात्र की पीट-पीटकर हत्या

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। राजधानी के प्रेमनगर इलाके में वर्चस्व की अंधी दौड़ ने एक और हंसते-खेलते परिवार का चिराग बुझा दिया। एक निजी शिक्षण संस्थान में पढ़ने वाले छात्रों के दो गुटों के बीच पुरानी रंजिश इस कदर परवान चढ़ी कि मारपीट के दौरान एक छात्र को अधमरा कर दिया गया, जिसने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। इस सनसनीखेज वारदात से पूरे इलाके में दहशत का माहौल है।

पुलिस ने कार्रवाई करते हुए बीबीए और बीटेक के तीन छात्रों को हिरासत में ले लिया है। पुलिस के मुताबिक प्रेमनगर स्थित एक निजी कॉलेज में पढ़ने वाले छात्रों के दो गुटों के बीच कॉलेज में दबदबा कायम करने को लेकर काफी समय से तनातनी चल रही थी।

सोमवार रात केहरी गांव में दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए। देखते ही देखते विवाद गाली-गलौज से शुरू होकर खूनी संघर्ष में बदल गया। हमले में दिव्यांशु जाटराना (22 वर्ष), निवासी मुजफ्फरनगर (यूपी), बुरी तरह घायल हो गया।सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष प्रेमनगर पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और घायल दिव्यांशु को सीएचसी प्रेमनगर ले गए।

हालत नाजुक होने पर उसे दून अस्पताल रेफर किया गया, लेकिन वहां एंबुलेंस खराब होने के कारण पुलिस ने बिना समय गंवाए घायल छात्र को अपने सरकारी वाहन से दून अस्पताल पहुंचाया। हालांकि, नियति को कुछ और ही मंजूर था।उपचार के दौरान देर रात दिव्यांशु की मौत हो गई। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक परमेंद्र डोभाल ने बताया कि घटना को लेकर पुलिस जांच में छुट्टी है हमलावरों को बख्शा नहीं जाएगा।

■ प्रेमनगर के केहरी गांव में छात्रों के दो गुटों में खूनी संघर्ष, मुजफ्फरनगर के छात्र ने अस्पताल में दम तोड़ा ■ दून पुलिस ने घेराबंदी कर 3 हत्यारोपियों को दबोचा, फरार साथियों की तलाश में दबिश जारी

मुजफ्फरनगर से दानापुर तक जुड़े तार

पुलिस ने परिजनों की तहरीर पर भारतीय न्याय संहिता की संगीन धाराओं (हत्या और साजिश) के तहत मुकदमा दर्ज किया है। एसएसपी के निर्देश पर हरकत में आई पुलिस ने चंद घंटों के भीतर ही तीन आरोपित छात्रों को दबोच लिया। पकड़े गए आरोपितों में युवराज कुमार (बिहार), मधुर खंडेलवाल (रुद्रपुर) और शिवम शर्मा (बिहार) शामिल हैं। ये तीनों ही प्रेमनगर में रहकर बीबीए और बीटेक की पढ़ाई कर रहे हैं।पुलिस अब घटना में शामिल अन्य फरार छात्रों की तलाश में सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। पुलिस का कहना है कि शिक्षण संस्थानों में गुटबाजी और हिंसा को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

व्यय वित्त समिति की बैठक आयोजित

देहरादून। मुख्य सचिव आनंद बर्द्धन की अध्यक्षता में मंगलवार को सचिवालय में व्यय वित्त समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक के दौरान समिति द्वारा विभिन्न प्रस्तावों को संस्तुति प्रदान की गई। मुख्य सचिव ने कहा कि राजकीय पॉलीटेक्निक नई टिहरी में कार्य में हॉस्टल सुविधा को भी जोड़े जाने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान रीठामंडी पेयजल योजना (लागत 2064.02 लाख रुपए), तामली चम्पावत में बहुग्राम पेयजल योजना (लागत 1457.21 लाख रुपए), मसूरी के क्यारखुली में मल्टीलेवल पार्किंग (लागत 1606.10 लाख रुपए), बासुकेदार में तहसील बिल्डिंग (लागत 1226.20 लाख रुपए) के प्रस्तावों को संस्तुति प्रदान की गई। इसके साथ ही रामनगर में बस पोर्ट निर्माण में (लागत 2157.12 लाख रुपए) को संस्तुति की गई। इस अवसर पर प्रमुख सचिव आर मीनाक्षी सुंदरम, सचिव चंद्रेश कुमार यादव, रविनाथ रमन सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

वात्सल्य योजना के तहत 3 करोड़ 2 लाख खातों में ट्रांसफर

■ महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने डीबीटी किया 2 महीने का पैसा

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून । महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने मंगलवार को मुख्यमंत्री वात्सल्य योजना के तहत लाभार्थियों को 3 करोड़ 2 लाख रुपए से ज्यादा की धनराशि जारी की।

कैंप कार्यालय पर धनराशि लाभार्थियों की खातों में डीबीटी करने के बाद कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने बताया कि इस योजना में प्रदेश सरकार 2020 से ही कोरोना महामारी के समय अभिभावकों को खो देने वाले बेसहारा बच्चों को प्रति माह 3000 रुपए की सहायता राशि देती है। इस योजना के तहत जनवरी 2026 तक का धन पहले ही जारी कर दिया गया था।

कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने बताया कि फरवरी में 5057 लाभार्थियों को कुल 1 करोड़ 51 लाख 71 हजार रुपए मंगलवार को जारी किए गए हैं।

जबकि मार्च महीने के लिए कुल 5025 लाभार्थियों के 1 करोड़ 50 लाख 75 हजार रुपए की धनराशि जारी की गई है। इस योजना के तहत लाभार्थी के 21 वर्ष के हो जाने या बालिका लाभार्थियों के विवाह या लाभार्थी के सेवायोजित हो जाने के बाद वह योजना से बाहर हो जाते हैं।

इस अवसर पर सीपीओ अंजना गुप्ता और डिप्टी सीपीओ राजीव नयन आदि उपस्थित रहे।

संशोधित उड़ान योजना से दूरस्थ पहाड़ी क्षेत्र में हवाई सफर होगा सुगम

■ आरसीएस योजना से प्रदेश ने एक दर्जन हेलीपोर्टो से भरी उड़ान

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। केंद्र सरकार की संशोधित उड़ान योजना से उत्तराखंड के दूरस्थ पहाड़ी क्षेत्र में हवाई सफर सुगम होने जा रहा है। केंद्र सरकार ने संसद में बताया कि क्षेत्र सम्पर्क योजना के तहत राज्य के एक दर्जन हेलीपोटो से उड़ान शुरू हो गई है।

प्रदेश अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट द्वारा सदन के पटल पर उत्तराखंड में हवाई सेवाओं को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी मांगी गई। जिसमें उन्होंने राज्य के चमोली, पिथौरागढ़ और उत्तरकाशी जैसे दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों में, जहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं और अक्सर प्राकृतिक आपदाएँ होती हैं, नियमित हेलीकॉप्टर सेवाओं को बढ़ाने की योजना पर सवाल पूछे। जिसके जवाब में नागर विमानन मंत्रालय में राज्य मंत्री मुरलीधर ने बताया कि उड़ान योजना के तहत, पिथौरागढ़ और पंतनगर हवाईअड्डों के साथ-साथ सहस्त्रधारा, चिन्यालीसौर, गौचर, नई टिहरी, हल्द्वानी, अल्मोड़ा, श्रीनगर, मुनस्यारी और बागेश्वर चंपावत में हेलीपोटों से आरसीएस उड़ान परिचालन आरंभ हो गया है। उन्होंने जानकारी दी कि क्षेत्रीय हवाई संपर्क को और सुदृढ़ करने और बढ़ाने के लिए सरकार ने अगले 10 वर्षों में 4 करोड़ यात्रियों को सेवा प्रदान करने हेतु उत्तराखंड राज्य सहित देशभर में 120 नए गंतव्यों तक क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाने के लिए संशोधित श्उड़ानश योजना आरंभ करने की घोषणा की है। यह योजना पर्वतीय, आकांक्षी और पूर्वोत्तर क्षेत्र के जिलों में हेलीपैड और छोटे हवाईअड्डों को भी सहायता प्रदान करेगी।

बेटियां हमारी संस्कृति व परंपराओं की सशक्त वाहक: सीएम

■ मुख्यमंत्री ने सामूहिक कन्या पूजन कार्यक्रम में किया प्रतिभाग ■ 1100 कन्याओं के पूजन को अत्यंत सौभाग्यपूर्ण बताया

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंगलवार को प्रेमनगर, देहरादून स्थित सनातन धर्म मंदिर परिसर में आयोजित सामूहिक कन्या पूजन कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेशवासियों को चौत्र नवरात्र की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि चौत्र नवरात्र केवल आस्था का पर्व नहीं, बल्कि श्रद्धा, भक्ति एवं संस्कारों के माध्यम से शक्ति उपासना का महापर्व है। उन्होंने 1100 कन्याओं के पूजन को अत्यंत सौभाग्यपूर्ण बताते हुए आयोजन समिति की सराहना की। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन समाज में नारी सम्मान को सुदृढ़ करने तथा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे मूल्यों को मजबूत करने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति में कन्या को साक्षात देवी स्वरूप माना गया है। शास्त्रों में भी कन्याओं को अत्यंत सम्मानजनक स्थान दिया गया है। बेटियां अपने संस्कार, स्नेह और त्याग से समाज को सशक्त और समृद्ध बनाती हैं तथा हमारी संस्कृति और परंपराओं की सशक्त वाहक हैं। उन्होंने कहा कि कन्या पूजन के इस पावन अवसर पर समाज को यह संकल्प लेना चाहिए कि प्रत्येक बेटी को शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान का अधिकार सुनिश्चित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पंजीकृत निर्माण श्रमिकों की बेटियों के सामूहिक विवाह के लिए 61 हजार रुपये तथा व्यक्तिगत विवाह के लिए 55 हजार रुपये तक की सहायता दी जा रही है।

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को विवाह सहायता के रूप में 50 हजार रुपये तक का अनुदान प्रदान किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार नंदा गौरा योजना, गौरा देवी कन्याधन योजना, मुख्यमंत्री महालक्ष्मी किट योजना, पोषाहार योजना सहित विभिन्न योजनाओं के माध्यम से बेटियों के जन्म से लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार तक हर स्तर पर उनके सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नवरात्र के नौ दिवस केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आत्मशुद्धि, सेवा, विनम्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करने का अवसर भी प्रदान करते हैं। कन्या पूजन हमारी परंपरा के साथ-साथ सेवा, करुणा और विनम्रता का प्रतीक है। मुख्यमंत्री ने सभी नागरिकों से आह्वान किया कि वे हर बेटी की रक्षा, शिक्षा और प्रगति का संकल्प लें, जिससे कन्या पूजन की भावना वास्तविक रूप से सार्थक हो सके। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर प्रेमनगर स्थित गुरुद्वारा में माथा टेका।

इस अवसर पर विधायक सविता कपूर, भाजपा महानगर अध्यक्ष सिद्धार्थ अग्रवाल, आपदा प्रबंधन सलाहकार समिति के उपाध्यक्ष विनय रोहिला, उपाध्यक्ष छावनी परिषद देहरादून विनोद पंवार, भाजपा नेता विनय गोयल एवं अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

बेटियों के सशक्तिकरण के लिए लगातार हो रहा कार्य: धामी

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र एवं राज्य सरकार बेटियों के सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा बेटियों की शिक्षा और प्रोत्साहन के लिए छात्रवृत्ति, कक्षा 9 में प्रवेश पर साइकिल वितरण, 12वीं उत्तीर्ण करने पर प्रोत्साहन राशि, तथा सरकारी नौकरियों में 30 प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण जैसी व्यवस्थाएं लागू की गई हैं।

ओपनएआई के सहयोग से यूपीईएस बना 'एआई-फर्स्ट' कैंपस

■ यूपीईएस का एआई मॉडल अब स्कूल, आईटीआई और पॉलीटेक्निक तक पहुंचेगा

शाह टाइम्स प्रमुख संवाददाता

देहरादून। यूपीईएस देहरादून ने ओपनएआई के सहयोग से 'एआई-फर्स्ट' कैंपस बनने के बाद अब अपने इस मॉडल को और विस्तार देने की तैयारी कर ली है। विश्वविद्यालय ने संकेत दिए हैं कि राज्य सरकार के साथ मिलकर प्रदेश के स्कूलों, आईटीआई और पॉलीटेक्निक संस्थानों को भी इस एआई इकोसिस्टम से जोड़ा जाएगा।

मंगलवार को कैंपस में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में डॉ. सुनील राय, वाइस चांसलर, यूपीईएस, ने कहा, इस पहल के तहत छात्रों को शुरुआती स्तर से ही चौटजीपीटी एजु जैसे प्लेटफॉर्म के जरिए आधुनिक तकनीक से जोड़ने की योजना है, ताकि वे आगे चलकर उच्च शिक्षा और रोजगार के लिए बेहतर तैयार हो सकें।

क्या बदलेगा?: स्कूल स्तर से ही एआई आधारित पढ़ाई होगी, आईटीआई और पॉलीटेक्निक में स्किल और एआई का संयोजन देखने को मिलेगा। तकनीकी शिक्षा में प्रैक्टिकल और स्मार्ट लर्निंग पर ध्यान दिया जाएगा। ग्रामीण और छोटे शहरों के छात्रों को भी आधुनिक संसाधनों तक पहुंच होगी। इस पहल से प्रदेश में स्किल डेवलपमेंट को नई रफ्तार मिलने की उम्मीद है। साथ ही, पारंपरिक शिक्षा और आधुनिक तकनीक के बीच की दूरी भी कम होगी।

चुनौती भी कम नहीं: एआई के विशेषज्ञ भास्कर भट्ट ने एक सवाल के जवाब में कहा कि , छात्रों की मूल सोच और विश्लेषण क्षमता को कमजोर नहीं होने देना हैं, जिसका समाधान निकालने को संस्थान ने कई कदम उठाए हैं। तकनीक पर अधिक निर्भरता से सीखने की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। एआई के साथ बेसिक कॉन्सेप्ट क्लियर करने पर जोर रहेगा। टीचर्स को भी एआई ट्रेनिंग दी जाएगी।

हाइब्रिड मॉडल (मानव+एआई) अपनाना

प्रैक्टिकल और फील्ड बेस्ड शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा। यदि सही संतुलन के साथ लागू किया गया, तो यह पहल प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को जमीनी स्तर से बदल सकती है और छात्रों को भविष्य के लिए अधिक सक्षम बना सकती है।

मिलेट्स और कृषि गतिविधियां बन रहे सहकारिता के मजबूत आधार

■ रेशम, साइलेज व सामूहिक खेती से मजबूत होगी किसानों की आर्थिकी

राज्य सरकार लक्ष्य प्रदेश में सहकारी समितियों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाकर सहकारिता आंदोलन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना है। सहकारिता का सीधा लाभ किसानों, काश्तकारों, कारीगरों और युवा उद्यमियों को मिले इसके लिये ठोस नीतियां तैयाकर कर धरातल पर उतारी जा रही है।

डॉ. धन सिंह रावत, सहकारिता मंत्री, उत्तराखंड।

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून । उत्तराखंड में सहकारिता के माध्यम से बहुउद्देशीय सहकारी समितियों को सशक्त बनाने की दिशा में राज्य सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से व्यापक कार्य किया जा रहा है। कृषि, मिलेट्स, रेशम उत्पादन, सब्जी क्रय, बायोफर्टिलाइजर वितरण, साइलेज विक्रय और सामूहिक सहकारी खेती जैसी गतिविधियों से समितियों की आय में भी निरंतर वृद्धि हो रही है तथा किसानों और ग्रामीण परिवारों को आर्थिक रूप से मजबूती मिल रही है।

राज्य में मिलेट्स मिशन के अंतर्गत 214 क्रय केंद्रों के माध्यम से लगभग 53,000 कुंतल मंडुवा की खरीद की गई है। इस खरीद पर सहकारी समितियों को 100 प्रति कुंतल सेवा शुल्क के आधार पर लगभग ₹53 लाख की आय प्राप्त हुई है। इसी प्रकार मुख्यमंत्री घसियारी कल्याण योजना के अंतर्गत सहकारी समितियों के माध्यम से साइलेज का वितरण किया जा रहा है। राज्य में कुल 181 केंद्रों (गढ़वाल में 96 और कुमाऊं में 85) के माध्यम से लगभग 20,000 टन उच्च गुणवत्ता का साइलेज विक्रय किया गया है, जिससे सहकारी समितियों को लगभग ₹63 लाख की आय प्राप्त हुई है।

उत्तराखंड सहकारी संघ के माध्यम से टिहरी और उत्तरकाशी जनपदों में पांच सहकारी समितियों द्वारा किसानों से सीधे सब्जियों की खरीद की जा रही है। वर्तमान वर्ष में अब तक किसानों से लगभग 1.50 करोड़ मूल्य की सब्जियों की खरीद की जा चुकी है, जिन्हें बाजार में बेहतर मूल्य पर विक्रय किया गया है। इस प्रक्रिया में सहकारी समितियों को लगभग 3 लाख की आय प्राप्त हुई है। आगामी 1 अप्रैल से 22 सहकारी समितियों के माध्यम से सब्जी क्रय कार्य का विस्तार किया जाएगा, जिससे समितियों को 2 प्रतिशत लाभांश प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त बायोफर्टिलाइजर के क्रय-विक्रय में भी सहकारी समितियां सक्रिय रूप से भागीदारी निभा रही हैं, जिससे 14 समितियों को लगभग 68.38 लाख की आय प्राप्त हुई है।

माधो सिंह भंडारी सामूहिक सहकारी खेती योजना के अंतर्गत अनुपयोगी भूमि को उपयोग में लाते हुए फूलों की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्तमान में चमोली और पौड़ी जनपद में लगभग 500 नाली भूमि पर गुलाब और ग्लेडियोलस के फूलों की खेती सहकारी समितियों के माध्यम से की जा रही है। अब तक इस पहल से समितियों को लगभग 10 लाख की आय प्राप्त हो चुकी है और भविष्य में इसे व्यापक स्तर पर लागू करने के लिए मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है।

इसी क्रम में धान खरीद कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य की 115 गृह सहकारी समितियों को लगभग 63 लाख की आय प्राप्त हुई है।

सहकारिता क्षेत्र में रेशम उत्पादन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उत्तराखंड को-ऑपरेटिव रेशम फेडरेशन अपने सदस्य कीटपालन सहकारी समितियों के माध्यम से कच्चे रेशम कोया का उत्पादन कराता है और जिन कीटपालकों को अपने उत्पाद के विपणन में कठिनाई होती है, उन्हें 100 प्रतिशत विपणन सुविधा और त्वरित भुगतान उपलब्ध कराया जाता है। वर्तमान में राज्य में लगभग 6500 रेशम कीटपालक रेशम उत्पादन से जुड़े हुए हैं।

किसानों, कीटपालकों और बुनकरों को बाजार से जोड़ने की दिशा में लगातार प्रयास : शुकला

उत्तराखंड सहकारी संघ के प्रबंध निदेशक आनंद शुक्ला ने कहा कि सहकारिता के माध्यम से किसानों, कीटपालकों और बुनकरों को बाजार से जोड़ने की दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मिलेट्स, सब्जी क्रय, बायोफर्टिलाइजर, रेशम उत्पादन और सामूहिक खेती जैसी गतिविधियों से सहकारी समितियों की आय में वृद्धि हो रही है और भविष्य में इन गतिविधियों का और अधिक विस्तार किया जाएगा।

दीक्षांत समारोह: डिग्री और मेडल पाकर खिले छात्रों के चेहरे

■ गढ़वाल विवि के 12वां दीक्षांत समारोह में 6,806 विद्यार्थियों को प्रदान की उपाधि

शाह टाइम्स संवाददाता

श्रीनगर। हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विवि का 12वां दीक्षांत समारोह में डिग्री और मेडल पाकर छात्र-छात्राओं के चेहरे खिल गए। समारोह में 50 विद्यार्थी सत्र 2022-24 के तथा 55 छात्र-छात्राएं 2023-25 कुल 105 छात्रों को गोल्ड मेडल से नवाजा गया। इसके अतिरिक्त 177 पंजीकृत शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधियों दी गई। जबकि दोनों सत्र में कुल 319 शोधार्थियों ने पीएचडी की उपाधियां प्रदान कि गई। समारोह में दो वर्षो के 6806 छात्र-छात्राओं को उपाधि प्रदान की गई।

मंगलवार को चौरास स्थित स्वामी मनमथन प्रेक्षागृह में दीक्षांत समारोह सभी उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राएं पहाड़ी वेशभूषा और परिधान में नजर आएं। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने पहुंचना था, लेकिन वह अपने व्यस्तता कार्यक्रम होने के चलते गढ़वाल विवि के दीक्षांत समारोह में नहीं पहुंच पाएं। इस मौके पर समारोह के विशिष्ट अतिथि कैबिनेट मंत्री डा. धन सिंह रावत, कुलाधिपति डा. योगेंद्र नारायण और गढ़वाल विवि के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए उत्तराखंड के कैबिनेट मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने सभी दीक्षार्थियों को शुभकामनाएं दीं और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कहा कि राज्य सरकार विश्वविद्यालयों के समग्र विकास के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है और शिक्षा के क्षेत्र को सशक्त बनाने के लिए लगातार ठोस कदम उठाए जा रहे है। कैबिनेट मंत्री डा. धन सिंह रावत ने तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र को लेकर भी बड़ी योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि हाल ही में इस क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किए जाएंगे, जिससे युवाओं को आधुनिक और रोजगारपरक शिक्षा मिल सकेगी। पहाड़ों से हो रहे पलायन के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि सरकार गंभीर है और इसका स्थायी समाधान निकालने के लिए प्रयासरत है। कार्यक्रम के अंत में कुलसचिव अनीज-उज-जमान ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. एचबीएस चौहान, श्रीनगर की महापौर आरती भण्डारी, एसएसबी के डीआईजी सुभाष चन्द्र नेगी, गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. रामशंकर दुबे, प्रो. मंजुला राणा, प्रो. मोहन पंवार, प्रो. एनएस पंवार, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. ओपी गुसाई, मुख्य नियन्ता प्रो. दीपक कुमार, प्रो. अजीत नेगी, प्रो. वाईपी रैवानी, प्रो. डीएस नेगी, प्रो. एमएम सेमवाल, चौरास परिसर निदेशक प्रो. राजेन्द्र सिंह नेगी, छात्रावास अधीक्षक डॉ. एसएस बिष्ट, डा. विजयकांत पुरोहित, डॉ. कपिल पंवार, डॉ. साकेत, आशुतोष बहुगुणा सहित आदि मौजूद थे।

ये छात्र-छात्राएं हुए गोल्ड मेडल से सम्मानित

"रितिका, ब्लेसी के सेबेस्टियन, सिद्धांत कुमार साहू विवेक सकलानी, शिवानी, प्राची पवार, सिमरन मलिक, अनम, शिवम, अक्षत नवानी, हरि तमंग, सौम्या गुप्ता, सेजल ठाकुर, खुशी, मेघा, श्वेता सिंह, अंजलि गुसांई, आदर्श पढी, रिमझिम, आशुतोष कुमार यादव, दिव्या सुखीजा, अंजलि नेगी, हर्षित भट्ट, उन्नति रावत, ज्योत्सना नागयान, वेणुका, अंकित भट्ट, अभिलाष, साक्षी, ज्योति, शिवानी, तनु सिंह, मोनिका सिंह, हर्ष गडिया, अन्नया, कनिष्का रजावत, रोहिणी मंडल, अमीषा प्रसाद, मासूम अंकित पटेल, निकिता सैनी, शिवानी, सैंकि सैनी, जिज्ञासा थपलियाल, लोपामुद्रा महापात्र, मोहिनी पोखरियाल, राधाश्री भट्ट, भावना, आलोक शर्मा, नीरज सैनी, हिमांशु जायड़ा, समृद्धि, राधिका नेगी, नीलम नेगी, तनु सैनी, आशा, ममता नौटियाल, वंदना सारस्वत, मधु ठाकूर, शिवम रावत, रितिका वर्मा, चेतांसि, खुशी, ऋषभ बिष्ट आदि को कैबिनेट मंत्री डा. धन सिंह रावत ने गोल्ड मेडल पहनाकर सम्मानित किया।"

छात्राओं के हिस्से में सबसे ज्यादा गोल्ड

"गढ़वाल विवि में 62 छात्राओं को गोल्ड मेडल से नवाजा गया। जबकि 43 छात्र गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। विभिन्न विषयों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। जिसमें सबसे अधिक छात्राएं शामिल है।"

मुख्यमंत्री आवास परिसर में किया गया शहद निष्कासन कार्य

देहरादून। मुख्यमंत्री आवास परिसर में मंगलवार को शहद निष्कासन कार्य किया गया। पहले चरण में 60 किलोग्राम शहद निकाला किया गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उद्यान विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि मुख्यमंत्री आवास परिसर एवं आस-पास के क्षेत्र में 3-बी गार्डन (बी- फ्रेंडली गार्डन, बटर - फ्लाई फ्रेंडली गार्डन एवं बर्ड फ्रेंडली गार्डन) विकसित करने की दिशा में कार्य किये जाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखण्ड में मौन पालन की अपार संभावनाएं हैं। राज्य में प्रचुर मात्रा में फूलों की प्रजातियां हैं, जो उच्च गुणवत्ता वाले जैविक शहद उत्पादन में सहायक हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में औषधीय गुणों वाला शहद तैयार करने के लिए लोगों को प्रेरित किया जाए। इस अवसर पर उद्यान प्रभारी दीपक पुरोहित वचेयरमैन देवभूमि पर्वतीय ग्रामोद्योग विकास संस्थान हरबर्टपुर अजय कुमार सैनी मौजूद थे।

'विकल्प रहित संकल्प' सरकार का ध्येय

शाह टाइम्स संवाद्दाता

बागेश्वर। प्रदेश सरकार के कार्यकाल के चार वर्ष पूर्ण होने पर जिले में आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रमों की श्रृंखला के तहत मंगलवार को विकासखंड गरुड़ में 'चार साल-बेमिसाल' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष शोभा आर्या ने दीप प्रज्वलित कर किया।

अपने संबोधन में जिला पंचायत अध्यक्ष ने इस अवसर को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि वर्तमान सरकार 'विकल्प रहित संकल्प' के ध्येय वाक्य के साथ निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि सरकार की नीतियां जनकल्याण को समर्पित हैं और अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। उन्होंने कहा कि विकासखंड के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी और जनसुविधाओं का विस्तार इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं स्वरोजगार के नए अवसर सृजित हो रहे हैं। इस अवसर पर ग्रामोत्थान (रीप) परियोजना के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए क्लस्टर लेवल फेडरेशन 'जय मां भगवती आजीविका स्वायत्त सहकारिता' को चेक प्रदान किया गया। जो धनराशि अल्ट्रा पुअर गतिविधियों, व्यक्तिगत एवं सामुदायिक उद्यमों, शेयर धन मैचिंग ग्रांट तथा सीड रिवॉल्विंग फंड के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करेगी। सहायक निदेशक, डेरी विकास विभाग बागेश्वर एवं समस्त फील्ड स्टाफ गरुड़ क्षेत्र के द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम में गरुड़ क्षेत्र की 20 दुग्ध समितियों के 80 दुग्ध उत्पादकों के द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम में 14 दुग्ध उत्पादकों को जिला पंचायत अध्यक्ष एवं ब्लाक प्रमुख के माध्यम से स्वच्छ दुग्ध उत्पादन किट वितरण कराया गया। सामाजिक कल्याण के तहत नौ दिव्यांग एवं वृद्धजनों को छड़ी, श्रवण यंत्र, व्हीलचेयर एवं बैसाखी जैसे सहायक उपकरण वितरित किए गए। साथ ही, व्यक्तिगत सहायता योजनाओं के अंतर्गत एक लाभार्थी को शादी अनुदान योजना के तहत 50 हजार रुपये तथा एक अन्य लाभार्थी को अटल आवास योजना के अंतर्गत 1.30 लाख रुपये की धनराशि के चेक प्रदान किए गए। इस अवसर पर नगर पंचायत अध्यक्ष भावना वर्मा, जिला पंचायत सदस्य जनार्दन लोहनी, ज्येष्ठ ब्लॉक प्रमुख नंदन सिंह थापा, सेवायोजन अधिकारी प्रवीण कुमार गोस्वामी, खंड विकास अधिकारी ख्याली राम, जिला कार्यक्रम अधिकारी (बाल विकास) मंजुलता यादव, उद्यान अधिकारी हरीश चंद्र, पर्यटन अधिकारी पीके गौतम, सहायक निदेशक डेयरी अनुराग मिश्रा सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

हमारी धरोहर विषय पर दो दिवसीय विचार मंथन

शाह टाइम्स संवाद्दाता

बागेश्वर। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) बागेश्वर में एससीईआरटी उत्तराखंड के निर्देशन में 'फसक-2026' के तहत 'हमारी धरोहर' विषय पर दो दिवसीय विचार मंथन संगोष्ठी शुरू हुई। इसका उद्देश्य कुमाऊंनी, गढ़वाली, जौनसारी को नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप पाठ्यक्रम में शामिल करने पर चर्चा करना है। विभिन्न जनपदों से आए शिक्षाविदों, भाषा विशेषज्ञों एवं साहित्यकारों ने भाग लेकर अपने विचार साझा किए। मुख्य वक्ता एवं लोक भाषा विशेषज्ञ प्रो. डीडी पोखरिया ने कहा कि नई शिक्षा नीति के तहत लोक भाषाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना समय की आवश्यकता है। गढ़वाली भाषा विशेषज्ञ बीना बेंजवाल ने कहा कि गढ़वाली, कुमाऊंनी जैसी भाषाएं केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान हैं, जिन्हें शिक्षा से जोड़ना जरूरी है। डायट बागेश्वर के प्राचार्य चक्षुपति अवस्थी ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। भाषा उत्कृष्टता केंद्र के प्रभारी डा. कुन्दन सिंह रावत ने संगोष्ठी के उद्देश्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। एससीईआरटी उत्तराखंड, देहरादून से आए विशेषज्ञों ने राज्य की भाषाओं के संरक्षण के लिए चल रहे शैक्षिक कार्यक्रमों की जानकारी दी। संगोष्ठी में गढ़वाली, कुमरउनी एवं जौनसारी भाषाओं के विशेषज्ञों और साहित्यकारों ने भाग लिया, जिनमें रमाकांत बेंजवाल, खान सिंह चौहान, डा. सुरेंद्र आर्य, भगत राम पिलखवाल, हरीश टाकुलिया, दीपा नेगीवाल, किशोरी गयाल, इन्द्र सिंह चौहान सहित कई प्रमुख नाम शामिल रहे। संचालन प्रसिद्ध उद्घोषक हेमंत बिष्ट द्वारा किया गया। इस दौरान डा. मनोज कुमार पांडेय, डा. सीएस जोशी, डा. संदीप कुमार जोशी, डा. पिंकी पांडे, डा. नेहा भाकुनी, डा. अमीता बिष्ट, डा. भुवन चंद्र, डा. लीला जोशी, डा. हरीश चंद्र जोशी, सहित 80 से अधिक शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।

एक नजर

बाजार में दोपहिया वाहनों पर रोक की मांग

अल्मोड़ा। नगर की बाजार में दोपहिया वाहनों के संचालन पर रोक लगाने की मांग को लेकर पार्षद मुखर हो गए है। मंगलवार को पार्षदों ने एसएसपी से मुलाकात कर मामले को लेकर ज्ञापन सौंपा। बावनसीढ़ी से शिशु मंदिर स्कूल तक दोपहिया वाहन के संचालन पर रोक लगाने की मांग उठाई। नगर निगम के पार्षदों ने कहा कि नगर के बावनसीढ़ी से लेकर शिशु मंदिर स्कूल तक कई विद्यालय है। वहीं, इन स्थानों पर मार्ग पर भी संकरा है, लेकिन इस मार्ग से दोपहिया वाहन धड़ल्ले से चल रहे है। आए दिन दोपहिया वाहनों के इधर-उधर गुजरने से बच्चों को खतरा बना रहता है। उन्होंने एसएसपी चंद्रशेखर घोड़के से उक्त मार्ग सुबह आठ से शाम सात बजे तक दोपहिया वाहनों के संचालन में पूर्ण रूप से रोक लगाने की मांग उठाई। यहां ज्ञापन सौंपने वालों में पार्षद अभिषेक जोशी, श्याम पांडे, संजय जोशी, मनोज सनवाल, मनोज कुमार, रमेश चंद्र, सुनीता मेहरा, नीलम जुनेजा, विमता तिवारी, विमला पंत, मीनाक्षी तिवारी, वीनू बेदी आदि मौजूद रहे।

डीएम ने कार्यक्रमों की तैयारियां का जायजा लिया

अल्मोड़ा। सरकार के चार साल पूर्ण होने पर कार्यक्रम को लेकर जिला प्रशासन ने तैयारियां तेज कर दी है। मंगलवार को डीएम अंशुल सिंह ने अधिकारियों की बैठक ली। इस दौरान आज होने वाले कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। डीएम ने बताया कि कार्यक्रमों की श्रंखला में आज बुधवार को भी मल्ला महल में भव्य कार्यक्रम आयोजित होगा। इस कार्यक्रम में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया जाएगा। साथ ही कई अन्य स्टॉल भी लगेंगे जिसमें सरकार की जनहितकारी योजनाओं की जानकारी और लाभ दिलाया जाएगा। बताया कि विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाएगा। जिसमें संस्क्रति से जुड़े कलाकार स्थानीय संस्कृति को मंच के माध्यम से लोगों से साझा करेंगे। उन्होंने कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए मल्ला महल का निरीक्षण भी किया तथा सिटिंग अरेंजमेंट, मंच, साउंड सिस्टम, साफ सफाई आदि के लिए दिशा निर्देश दिए। डीएम ने अधिकारियों को कहा कि अपने-अपने विभाग की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने का यह विशेष अवसर है, इसलिए अधिकारी अपनी-अपनी योजनाओं की पूर्ण जानकारियों को आगंतुकों के साथ साझा करें।

पंतनगर में किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पंतनगर। ग्राम मोतियापुरम, तहसील गदरपुर, जिला उधम सिंह नगर में किसान सुरजीत सिंह डावर के सहयोग से एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें ग्राम प्रधान श्रीमती सुमन भी उपस्थित रही। इस कार्यक्रम में अ.भा.स. खरपतवार प्रबंधन शोध परियोजना के परियोजना अधिकारी डा. एसपी सिंह ने किसानों को खरीफ और जायद फसलों में उपयोग होने वाले शाकनाशियों के बारे में जानकारी दी। डा. सिंह ने किसानों को शाकनाशियों की सही मात्रा, पानी की उचित मात्रा और छिड़काव की तकनीक पर विशेष ध्यान देने की सलाह दी। उन्होंने एकीकृत खरपतवार प्रबंधन तकनीक अपनाने के लिए भी प्रेरित किया।

विद्यार्थियों ने जाना कैसे पाएं सरकारी नौकरी

काशीपुर। ज्ञानार्थी कॉलेज में एक विशेष करियर एवं मार्गदर्शन कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें राम सिंह इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर अनिरुद्ध चौहान मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। अपने प्रेरणादायक संबोधन में अनिरुद्ध चौहान ने विद्यार्थियों को बताया कि सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए निरंतर मेहनत, अनुशासन और सही रणनीति अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे समय प्रबंधन, सिलेबस की समझ और नियमित अभ्यास पर विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर कॉलेज के अध्यक्ष संतोष मेहरोत्रा, सेक्रेटरी शिवानी मेहरोत्रा, संस्थान प्रमुख प्रतिमा सिंह एवं डायरेक्टर डॉ. मनोज मिश्रा द्वारा मुख्य अतिथि का स्वागत किया गया।

हिंदू वाहिनी ने धूमधाम से मनाया स्थापना दिवस

शाह टाइम्स संवाद्दाता

काशीपुर। मानपुर रोड स्थित एक रिसॉर्ट में हिंदू वाहिनी का स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महापौर दीपक बाली ने कहा कि सनातन उनका धर्म है और विकास उनका शौक। सनातन की रक्षा और सेवा के लिए उन्हें जहां भी और जो भी जिम्मेदारी सोंपी जाएगी उसको वें सहर्ष पूरा करेंगे। महापौर ने कहा कि मैं आपकी अधिक से अधिक सेवा कर सकूं इसीलिए राजनीति में आया हूं। जब उनसे कार्यक्रम में मांग की गई की मंदिरों के आसपास की सड़कों को दुरुस्त किया जाए ताकि भक्त जन मंदिरों में आराम से पहुंच सके तो उन्होंने साफ कहा की जिस मंदिर के पास भी कहीं सड़क की कोई दिक्कत हो वह मुझे तुरंत बताई जाए मैं उसका समाधान करूंगा। इस दौरान अनेक रंगारंग कार्यक्रम भी हुए। कार्यक्रम में मुरादाबाद से पधारे संत शिवदत्त प्रदेश अध्यक्ष रुचिन शर्मा राष्ट्रीय महामंत्री आनंद तिवारी पूर्व विधायक हरभजन सिंह चीमा प्रदेश मंत्री अभिषेक शर्मा उर्वशी दत्त बाली राधा चौहान स्पर्श टंडन राघवेंद्र नागर वेद प्रकाश विद्यार्थी पीयूष गोयल प्राची तिवारी शिवदासी प्रियंका अग्रवाल शेष कुमार सितारा अभिताभ सक्सेना एडवोकेट सहित सैकड़ों स्त्री पुरुष और साधु सन्यासी मौजूद रहे।

नगर निगम में लगाया स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

शाह टाइम्स संवाद्दाता

काशीपुर। नगर निगम प्रांगण में 'स्वास्थ्य आपका प्राथमिकता हमारी' सोच के तहत नगर निगम काशीपुर और केवीआर हॉस्पिटल के संयोजन में आयोजित एक दिवसीय नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का महापौर दीपक बाली ने शुभारंभ किया। प्रात: 11 बजे से अपराह्न 3 बजे तक चले इस शिविर में केवीआर अस्पताल के विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम द्वारा नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, सटीक एवं विशेषज्ञ चिकित्सकीय परामर्श, न्यूरोपैथी टेस्ट, ब्लड शुगर एवं खून की जांच, आंखों की जांच करने के साथ ही आवश्यक दवाइयों का नि:शुल्क वितरण किया गया। सैंकड़ों लोगों ने शिविर का लाभ उठाया। इस अवसर पर नगर आयुक्त रविन्द्र बिष्ट, सहायक नगर आयुक्त शालिनी नेगी, सहायक नगर आयुक्त विनोद लाल, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अमरजीत साहनी, डॉ. रिची सिंह सोलंकी, डॉ. तरूण सोलंकी, डॉ. कौशल अग्रवाल, डॉ. कनिका अग्रवाल, डॉ. नैना अग्रवाल, डॉ. कंचन समेत पार्षदगण, पर्यावरण मित्र, नगर निगम कर्मचारी एवं भारी संख्या में लाभार्थी उपस्थित रहे।

फर्स्वाण को नई जिम्मेदारी

बागेश्वर। कांग्रेस पार्टी के पूर्व विधायक ललित फर्स्वाण को अरुणाचल प्रदेश की जिम्मेदारी मिली। पार्टी ने उन्हें वहां संगठन सृजन का दायित्व सौंपा है। फर्स्वाण को बड़ी जिम्मेदारी मिलने पर जिले में कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया। पिंडारी रोड़ स्थित पार्टी कार्यालय में जिलाध्यक्ष अर्जुन भट्ट की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया। जिलाध्यक्ष ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि फर्स्वाण को अरुणाचल प्रदेश जैसे दूरस्थ क्षेत्र में संगठन की जिम्मेदारी मिलना कार्यकर्ताओं के लिए गौरव की बात है। जिलाध्यक्ष ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया वह एकजुट होकर पार्टी की नीतियों तथा कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाएं। पूर्व जिलाध्यक्ष लोकमणि पाठक, भगवत सिंह डसीला, पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष गोविंद बिष्ट, विनोद पाठक, बालकृष्ण, हरीश ऐठानी थे।

एबीवीपी ने एसएसजे में की तालाबंदी

शाह टाइम्स संवाद्दाता

अल्मोड़ा। एसएसजे परिसर की तमाम समस्याओं के निराकरण को लेकर एबीवीपी ने मोर्चा खोल दिया है। मंगलवार को संगठन से जुड़े छात्र नेताओं ने परिसर के मुख्य पार्किंग गेट बंद कर जमकर प्रदर्शन किया। चेतावनी दी कि जल्द समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो परिसर प्रशासन के खिलाफ उग्र आंदोलन किया जाएगा। आक्रोशित एबीवीपी के छात्र नेताओं ने कहा कि लंबे समय से परिसर प्रशासन से छात्रों की समस्याओं के निराकरण की मांग उठा रहे है, लेकिन परिसर प्रशासन लगातार मांगों को अनदेखा कर रहा है। जिससे छात्रों में रोष व्याप्त है। उन्होंने शिक्षक भर्ती में अतिथि शिक्षकों के सुरक्षित भविष्य को ठोस प्रावधान करने, शैक्षणिक अव्यवस्था, लचर परीक्षा प्रणाली, बदहाल पुस्तकालय सुविधाएं, जर्जर आधारभूत ढांचा, रोजगार के अवसरों की कमी तथा सेल्फ फाइनेंस शिक्षक भर्ती से जुड़ी समस्याओं को दूर करने की मांग उठाई। चेतावनी दी कि यदि जल्द मांगें नहीं मानी गई तो आने वाले दिनों में व्यापक आंदोलन, ताला बंदी और सड़क जाम जैसे बड़े कदम उठाए जाएंगे। जिसकी समस्त जिम्मेदारी विवि और परिसर प्रशासन की होगी। यहां प्रदर्शन करने वालों में एबीवीपी नगर मंत्री रोहित कुमल्टा, दीपक लोहनी, दीपक राठौर, कृष्णा कार्की, ऋतिक नेगी, भास्कर जोशी, निखिल उप्रेती, लक्ष्मी रानी, निशु, वंदना गोस्वामी, पंकज कुमार, लकी जोशी, प्रवीण, मयंक धामी, दयाल कोरंगा, दीप, पवन लाल साह, प्रिया पाण्डेय, अभय बोरा, नेहा जोशी, मनीषा गोस्वामी, प्रिया ऐरी आदि मौजूद रहे।

मेला प्रशासन ने किया मंदिर के12 दानपात्रों को सील

शाह टाइम्स संवाद्दाता

काशीपुर। चैती मेला प्रशासन/एसडीएम अभय प्रताप सिंह के निर्देश पर सोमवार को मंदिर परिसर में रखे गए 12 दानपात्रों को पंडा परिवार की मौजूदगी में तहसीलदार पंकज चंदोला की देखरेख में सील कर दिया गया। मेला प्रशासन/एसडीएम अभय प्रताप सिंह ने बताया कि हाईकोर्ट के आदेश के अनुरूप मंदिर परिसर के सभी दानपात्रों को पुलिस-प्रशासन की देखरेख में सील किया गया है। हाईकोर्ट का आदेश है कि मेला समाप्ति के बाद सभी दानपात्रों को पंडा परिवार की मौजूदगी में खोला जाए। इस दौरान प्रशासन की ओर से पटवारी राहुल चौहान व रोहित शर्मा, संग्रह अमीन भूपेंद्र सिंह, चैती मेला चौकी प्रभारी पंकज कुमार आदि थे।

अष्टादशभुजा महालक्ष्मी मंदिर में नवरात्रि पर भागवत कथा का अद्भुत आयोजन

शाह टाइम्स संवाद्दाता

लालकुआं। अष्टादशभुजा महालक्ष्मी मंदिर, बेरीपड़ाव हल्द्वानी में बसंतिक नवरात्रि के अवसर पर आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में व्यास पंडित खजान पंत ने बताया कि भागवत के अनुसार परम जिज्ञासु राजा परीक्षित को त्यागी, विरागी एवं महामुनि शुकदेव के मार्गदर्शन से भगवान के विश्वात्मस्वरूप की दिव्य झांकी प्राप्त हुई। पंडित खजान पंत ने कहा कि वसुदेव के निर्मल, शांत और समाधिस्थ मन में ही भगवान का आवेश और प्रवेश होता है। उन्होंने समझाया कि जीव का बार-बार संसार में जन्म लेना और भवबंध में बंधना, भगवान के दिव्य जन्म और कर्म के रहस्य को न समझने का परिणाम है। कथा में यह भी बताया गया कि समस्त मंगलों के परम मंगल, सन्मय, चिन्मय और आनंदमय प्रभु कृष्ण वसुदेव अपने अंत:स्थल में विराजमान होने के कारण ही देवकी ने उन्हें अपने गर्भ में धारण किया। जैसे योग के अष्टांग होते हैं, वैसे ही भगवान अपने माता-पिता के अष्टम आविर्भाव हैं। योग का अंतिम सोपान समाधि है और उसी प्रकार भगवान का अवतरण और जीवन का तिरोभाव अचिंत्य योग शक्ति से पूर्ण एवं समाधि स्वरूप है। इस अवसर पर मंदिर के व्यवस्थापक सोमेश्वर यति जी महाराज ने सभी श्रद्धालुओं को सन्मार्ग पर चलने का संदेश देते हुए सुख और समृद्धि की कामना की।

आईएमटी में 'वित्तीय साक्षरता' पर वर्कशाप

शाह टाइम्स संवाद्दाता

काशीपुर। बाजपुर रोड स्थित सत्येंद्र चंद गुड़िया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड लॉ कॉलेज में दो दिवसीय 'वित्तीय साक्षरता' पर वर्कशॉप का आयोजन किया गया। संस्थान की प्राचार्य डॉ. निमिषा अग्रवाल ने बताया कि संस्थान के बीबीए, बीसीए एवं बी. कॉम (ऑनर्स) के विद्यार्थियों के लिए आयोजित उक्त वर्कशॉप का उद्देश्य विद्यार्थियों के अंदर बचत, निवेश एवं मजबूत वित्तीय प्रबंधन आदि की जानकारी देना था। वर्कशॉप में एसबीआई एवं नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सिक्योरिटी मार्केट के रिसोर्स पर्सन डॉ. अंकुर भटनागर ने विद्यार्थियों को वर्तमान परिवेश में निवेश एवं बचत की बहुत सारी योजनाओं से अवगत कराया, डॉक्टर निमिषा ने बताया कि इस वर्कशाप के प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर अंकुश शर्मा एवं फैकल्टी कोऑर्डिनेटर सिमरन सेठी कुकरेजा रही। इस अवसर पर समस्त फैकल्टी और स्टाफ उपस्थित रहा।

टैंट वाले गैस सिलिंडर को परेशान

शाह टाइम्स संवाद्दाता

रानीखेत। आगामी शादी-विवाह सीजन को देखते हुए नगर में एलपीजी गैस सिलेंडरों की मांग तेजी से बढ़ने लगी है। टेंट एवं कैटरिंग व्यवसाय से जुड़े लोगों ने सिलेंडरों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए प्रशासन से मांग उठाई है।

मामले को लेकर टेंट एसोसिएशन रानीखेत के पदाधिकारियों ने संयुक्त मजिस्ट्रेट को ज्ञापन सौंपकर आवश्यक कदम उठाने का अनुरोध किया। पदाधिकारियों ने कहा कि आने वाले महीनों में बड़ी संख्या में शादियां प्रस्तावित हैं, जिनमें भोजन व्यवस्था के लिए एलपीजी गैस सिलेंडरों की भारी आवश्यकता पड़ेगी। व्यवसायियों के अनुसार एक सामान्य मध्यम वर्गीय परिवार की शादी में औसतन 10 से 12 गैस सिलेंडरों की जरूरत होती है। वर्तमान में सिलेंडरों की उपलब्धता को लेकर स्पष्ट व्यवस्था न होने के कारण टेंट और कैटरिंग व्यवसायियों को बुकिंग लेने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कई कार्यक्रमों की अग्रिम बुकिंग पहले से ही हो चुकी है, जिससे चिंता और बढ़ गई है। टेंट एसोसिएशन ने प्रशासन से मांग की है कि संबंधित गैस एजेंसियों को निर्देशित कर शादी-विवाह के लिए गैस सिलेंडरों की सुचारू उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, ताकि आम जनता एवं व्यवसायियों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। यहां संरक्षक ईश्वर सिंह टनवाल, अध्यक्ष महेंद्र सिंह मर्तोलिया, उपाध्यक्ष नरेंद्र शाह सचिव सुंदर सिंह कुंवार्बी, उप सचिव जगदीश भट्ट, कोषाध्यक्ष प्रमोद गोयाल, नित्यानंद पांडे, रमेश सिंह अधिकारी व पवन कुमार आदि मौजूद रहे।

डिप्लोमा इंजी. महासंघ का धरना

शाह टाइम्स संवाद्दाता

अल्मोड़ा। 27 सूत्रीय मांगों के निराकरण को लेकर डिप्लोमा इंजी. नियर्स ने मोर्चा खोल दिया है। मंगलवार को उत्तराखंड डिप्लोमा इंजीनियर्स महासंघ के बैनर तले इंजी. नियर्सो ने सरकार के खिलाफ धरना देकर जमकर प्रदर्शन किया। जल्द मांग पूरी नहीं होने पर उग्र आंदोलन की चेतावनी दी।

नगर के शक्ति सदन परिसर में आयोजित धरना प्रदर्शन के दौरान वक्ताओं ने कहा कि कई बार मांग के बावजूद भी उनकी समस्याओं का निराकरण नहीं किया जा रहा है। जिससे इंजीनियर्सो में सरकार के प्रति भारी रोष व्याप्त है।

इंजीनियर्स ने पूर्ण सेवाकाल में पदोन्नति की पात्रता के अनुसार न्यूनतम तीन प्रोन्नति प्रदान करने, कनिष्ठ अभियंताओं को अपर सहायक अभियंता में पदोन्नत करने, कनिष्ठ अभियंता को दस वर्ष की सेवा पूर्ण करने पर पूर्व की भांति 5400 ग्रेड पे देने, पुरानी पेंशन व्यवस्था बहाल करने, उत्तराखंड पेयजल निगम और जल संस्थान का राजकीयकरण करने, वित्तीय अधिकारी बढ़ाए जाने, पदोन्नति की सीमा 10 से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने, फिल्ड स्टाफ की नियुक्ति करने, आवास विभाग में उत्पन्न विभिन्न विसंगतियों को दूर करने, राजनैतिक और प्रशासनिक हस्तक्षेप रोकने समेत गैर तकनीकि कार्यों में अभियांताओं की ड्यूटी नहीं लगाने की मांग उठाई। शाखा इं. अध्यक्ष सूरज रावत, मंडल सचिव दीपक मटियाली, उपाध्यक्ष ललित मोहन शर्मा, हिमांशु जोशी, ललित मोहन बिष्ट, हितांशी नैनवाल, निवेश वर्मा, विपिन चंद्र तिवारी, मनीष कुमार, पुनीता रानी, आलोक कुमार ओली, कुंदन बिष्ट, संतोष कनवाल, रोहित नैलवाल, प्रेमा पाटनी, नेहा लटवाल, भावना, दिव्या बिष्ट मौजूद रहे।

जनपक्षीय पत्रकारिता पर हुआ मंथन

शाह टाइम्स संवाद्दाता

अल्मोड़ा। सांस्कृतिक नगरी अल्मोड़ा में दो दिवसीय 33 वें उमेश डोभाल स्मृति सम्मान समारोह का आगाज हो गया है। मंगलवार को समारोह के पहले दिन नगर में भव्य सांस्कृतिक जुलूस निकाला गया। वहीं, वक्ताओं ने जनपक्षीय पत्रकारिता और सामाजिक सरोकारों पर मंथन किया गया। मंगलवार को नगर के जिला पंचायत सभागार में 'उत्तराखंड संवाद' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर विभिन्न स्थानों ने पहुंचे वक्ताओं ने राज्य और देश के समसामयिक जमीनी मुद्दों पर विचार-विमर्श किया। इसके अलावा संवाद कार्यक्रम में जनपक्षीय पत्रकारिता की वर्तमान चुनौतियों और सामाजिक सरोकारों को मजबूत करने पर विशेष चर्चा की गई। वहीं, सत्र के दौरान उत्तराखंड प्रेस क्लब अल्मोड़ा की नवनियुक्त कार्यकारिणी को भी सम्मानित किया गया। इस मौके पर उमेश डोभाल स्मृति ट्रस्ट के अध्यक्ष गोविंद पंत राजू, उपपा केंद्रीय अध्यक्ष पीसी तिवारी, उत्तराखंड प्रेस क्लब अध्यक्ष जगदीश चंद्र तिवारी, चंद्रशेखर द्विवेदी, सचिव अशोक पांडे, उपसचिव संस्था मोहित अधिकारी, उपसचिव कार्यालय कपिल मल्होत्रा, रमेश जोशी, किशन जोशी, हिमांशु लटवाल, नसीम अहमद, अमित उप्रेती, शिवराज कपकोटी, प्रकाश पांडे, प्रकाश पंत, ईश्वरी दत्त जोशी, डा. निर्मल जोशी, नवीन बिष्ट, रोहित भट्ट, राजीव लोचन साह, जयमित्र सिंह बिष्ट, दयाकृष्ण कांडपाल, विभू कृष्णा, हरीश भंडारी, जगजीवन बिष्ट समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

वार्ड 19 में खराब स्ट्रीट लाइटों को कराया ठीक

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। समाजसेवी विशाल वर्मा और पूर्व पार्षद प्रत्याशी अंजली वर्मा ने वार्ड 19, रामपुर रोड, बरेली रोड क्षेत्र की खराब पड़ी स्ट्रीट लाइटों को ठीक करवा दिया। इस काम के तहत पर्वतीय मोहल्ला, डालाकोटी कंपाउंड, सावित्री कालोनी, और पार्वती मोहल्ला फेस 2 जैसी गली क्षेत्रों में बंद पड़ी स्ट्रीट लाइटों को ठीक किया गया, जिससे इलाके में रहने वाले लोगों को राहत मिली है। समाजसेवी विशाल वर्मा ने बताया कि लंबे समय से इन क्षेत्रों की स्ट्रीट लाइटें बंद पड़ी हुई थीं, जिसके कारण महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों को भारी परेशानी हो रही थी। अंधेरे की वजह से दुर्घटनाओं और चोरी की घटनाओं का खतरा भी बढ़ गया था। अंजली वर्मा ने कहा लंबे समय से हमें इस क्षेत्र से स्ट्रीट लाइटों के खराब होने की शिकायतें मिल रही थीं। महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों की परेशानियों को देखते हुए हमने इन लाइटों को ठीक करवाया और साथ ही 15 नई स्ट्रीट लाइटों का भी प्रबंध किया।

मोदी सरकार पर जमकर बोला तीखा हमला

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के शहादत दिवस पर 'साम्राज्यवाद विरोधी-युद्ध विरोधी सप्ताह अभियान'

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। शहीदे आज़म भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के शहादत दिवस 23 मार्च से शुरू हुए भाकपा माले के 'साम्राज्यवाद विरोधी-युद्ध विरोधी सप्ताह अभियान' के तहत दमुआढूंगा में एक बैठक आयोजित की गई। वक्ताओं ने कहा कि ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ पूरे भारत में स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा देने वाली इन महान क्रांतिकारियों की शहादत के इंकलाब जिंदाबाद और साम्राज्यवाद का नाश हो के नारे आज के दौर में और अधिक सार्थक हो उठे हैं। भाकपा माले नैनीताल जिला सचिव डा. कैलाश पाण्डेय ने कहा कि मोदी की सत्ता कारपोरेट हितों और साम्राज्यवादी ताकतों के प्रभाव में काम कर रही है। अमेरिका-इजरायल की युद्धोन्मादी धुरी के साथ बढ़ती नजदीकियों ने भारत को आर्थिक संकट, महंगाई और अंतरराष्ट्रीय अलगाव की ओर धकेल दिया है। पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के कारण लाखों भारतीय प्रवासी कामगार असुरक्षा के माहौल में फंसे हुए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि कृषि और व्यापार नीतियों के जरिए छोटे किसानों और मजदूरों के हितों की अनदेखी की जा रही है। अमेरिका के साथ असमान व्यापार समझौते भारतीय कृषि को गंभीर संकट में डाल रहे हैं। प्रेम राम आर्य ने कहा कि कथित राष्ट्रवादियों की इस सरकार ने देश की रणनीतिक स्वायत्तता और राष्ट्रीय हितों से समझौता कर दिया है, जिससे भारत अपने पारंपरिक मित्र देशों विशेषकर रूस, ईरान से दूर होता जा रहा है और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अलग-थलग पड़ता जा रहा है। साथ ही इस गलत विदेश नीति ने जनता को गंभीर गैस-तेल में डाल दिया है। अंत में वक्ताओं ने आह्वान किया कि वर्तमान परिस्थितियों में भगत सिंह की साम्राज्यवाद-विरोधी विरासत को मजबूत करते हुए जनप्रतिरोध को व्यापक और तेज किया जाए। इस अवसर पर डा. कैलाश पाण्डेय, प्रेम राम आर्य, आकाश भारती, पंकज अम्बेडकर, हरीश कुमार लोधी, संजय कुमार, महेश कुमार, मथुरा प्रसाद, रितिक कांत, जतिन आर्या, आयुष आर्य, नितिन आर्या रहे।

किसानों तक आधुनिक तकनीक पहुंचाने के लिए बैठक में मंथन

शाह टाइम्स संवाद्दाता

पंतनगर। पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय में कृषि और संबंधित क्षेत्रों में किसानों को नवीनतम तकनीकों का लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर मनमोहन सिंह चौहान ने की, जबकि उत्तराखंड राज्य नीति आयोग (सेतु) के उपाध्यक्ष राजशेखर जोशी, कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक डा. पीके सिंह और अन्य विशेषज्ञ भी उपस्थित रहे। बैठक में किसानों की मूलभूत समस्याओं और उनके समाधान हेतु नए स्टार्टअप विकसित करने पर चर्चा की गई। साथ ही, किसानों को प्रशिक्षण देने और तकनीकों को व्यावसायिक बनाने पर जोर दिया गया। कुलपति प्रो. चौहान ने किसानों को त्वरित लाभ देने वाली तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करने की बात की, ताकि उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके। कृषि विभाग ने पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे कृषि उपकरणों के उत्पादन और फसलों के प्रसंस्करण पर कार्य करने का सुझाव दिया। बैठक का संचालन डा. एसके वर्मा ने किया।

बनभूलपुरा मामले पर अधिकारियों की बैठक

सर्वे और पुनर्वास कार्य समयबद्ध पूर्ण किया जाए: एडीएम

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। बनभूलपुरा रेलवे भूमि अतिक्रमण प्रकरण में उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के अनुपालन के क्रम में चल रहे सर्वे कार्य की समीक्षा के लिए अपर जिलाधिकारी विवेक राय द्वारा मंगलवार देर सायं नगर निगम सभागार में अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की। बैठक में अपर जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि सर्वे एवं पुनर्वास से संबंधित कार्यो को समयबद्ध ढंग से पूर्ण किया जाए। उन्होंने बताया कि इस कार्य के लिए 6 टीमों का गठन किया गया है। समीक्षा के दौरान उन्होंने सभी टीमों को निर्देशित किया कि वे कैंप स्थलों के माध्यम से अधिक से अधिक परिवारों तक पहुंच सुनिश्चित करें, ताकि कोई भी पात्र परिवार छूटने न पाए। साथ ही पुनर्वास कैंपों के प्रति लोगों को जागरूक करने पर विशेष बल दिया जाए। उन्होंने निर्देशित किया कि प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत पात्र परिवारों से आवेदन आमंत्रित कराए जाएं तथा जिन लोगों को आवेदन भरने में कठिनाई हो, उनकी सहायता टीम स्वयं करे। उन्होंने कहा कि प्रशासन, रेलवे एवं अन्य संबंधित विभागों की संयुक्त टीम घर-घर जाकर पात्र व्यक्तियों तक योजना का लाभ पहुंचाना सुनिश्चित करना हमारी प्रथम प्राथमिकता है। अपर जिलाधिकारी ने लक्ष्य निर्धारित करते

हुए कहा कि 31 मार्च 2026 तक समस्त कार्य पूर्ण कर उच्चतम न्यायालय में रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी। जो कि 20 मार्च से 31 मार्च तक आयोजित होने वाले कैंपों की प्रगति रिपोर्ट पहुंचना हम सब का दायित्व एवं लक्ष्य है। उन्होंने जानकारी दी कि प्रत्येक कैंप में रेलवे के आरपीएफ की तैनाती सुनिश्चित की गई है एसपी सिटी मनोज कर्त्याल ने बताया कि शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए महिला सब इंस्पेक्टर एवं कांस्टेबल व फोर्स की भी तैनाती बढ़ाई जाएगी बैठक में यह भी अवगत कराया कि मंगलवार से प्रधानमंत्री आवास योजना के आवेदन पत्रों का वितरण हेतु जिला प्रशासन की टीम द्वारा घर-घर जाकर वितरण का कार्य किया गया साथ ही प्रतिदिन यह कार्य करने के साथ ही कैंपों में भी पर्याप्त संख्या में फार्म उपलब्ध रहेंगे। अपर जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि इस कार्य में स्थानीय पार्षदों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए। आवेदन पत्रों के वितरण के साथ-साथ पात्रता की गहन जांच भी समयबद्ध तरीके से पूर्ण की जाए। उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि सभी टीमों द्वारा वितरण से संबंधित सूचना पंजिका में अंकित की जाए तथा नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि उच्चतम न्यायालय के निर्देशों का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जाए और किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। जो भी समस्या हो तत्काल उन्हें फोन द्वारा संपर्क कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि सभी टीमों द्वारा पॉजिटिव एनर्जी के साथ कार्य करना है किसी को भी कोई प्रकार की दिक्कत ना हो। बैठक में एसपी सिटी मनोज कत्याल, सिटी मजिस्ट्रेट एपी वाजपेयी, नगर आयुक्त परितोष वर्मा, उपजिलाधिकारी हल्द्वानी प्रमोद कुमार, तहसीलदार कुलदीप पाण्डे सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

शिविरों का निज़ाम देखने पहुंचे एसपी

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। रेलवे बनाम बनभूलपुरा अतिक्रमण मामले में फैसले के बाद बनभूलपुरा में शिविर लगाकर लोगों को जागरूक किया जा रहा है और प्रधानमंत्री आवास योजना के फार्म वितरित किए जा रहे हैं।

इस बीच मंगलवार को एसपी सिटी मनोज कुमार कत्याल ने बनभूलपुरा क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। एसपी सिटी मनोज कत्याल ने क्षेत्र में लगे शिविरों की सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की और सुरक्षा बलों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उत्तराखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण नैनीताल के तत्वावधान में रेलवे स्टेशन हल्द्वानी, अंजुमन इस्लामिया बालिका का पूर्व माध्यमिक विद्यालय किदवई नगर, राजकीय प्राथमिक विद्यालय बनभूलपुरा, राजकीय कन्या इंटर कॉलेज बनभूलपुरा, राजकीय इंटर कॉलेज बनभूलपुरा और मदरसा नैनीताल पब्लिक स्कूल बनभूलपुरा में शिविर लगाए गए हैं। मंगलवार को एसपी सिटी ने इन सभी शिविरों का दौरा किया और शिविरों में तैनात पुलिस बल को ब्रीफ करते हुए सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने के लिए आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान बनभूलपुरा कोतवाल दिनेश फर्त्याल, जीआरपी और रेलवे पुलिस के अधिकारी भी मौजूद रहे।

नगर निगम में राजस्व वादों के त्वरित निस्तारण शिविर आज

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। मंगलवार को अपर जिलाधिकारी विवेक राय ने प्रेस को जानकारी देते हुए बताया कि जन-जन की सरकार 4 साल बेमिसाल थीम के तहत कल यानि आज बुधवार को नगर निगम हल्द्वानी में राजस्व वादों के त्वरित निस्तारण के लिए एक विशेष शिविर आयोजित किया जाएगा। यह शिविर पूर्वाह्न 11 बजे से प्रारंभ होगा और इसमें नगर मजिस्ट्रेट हल्द्वानी, उपजिलाधिकारी हल्द्वानी, कालाढूंगी, लालकुआं, तहसीलदार और नायब तहसीलदार हल्द्वानी, कालाढूंगी और लालकुआं भी भाग लेंगे। इस शिविर में, सचिव, जिला विकास प्राधिकरण नैनीताल और संयुक्त सचिव, जिला विकास प्राधिकरण हल्द्वानी द्वारा नक्शों की स्वीकृति के लिए विशेष कैंप लगाया जाएगा। इसके अतिरिक्त, नगर आयुक्त हल्द्वानी के मार्गदर्शन में नामांतरण वादों का निस्तारण करने के लिए भी एक कैंप आयोजित होगा। एडीएम विवेक राय ने बताया कि इस शिविर में राजस्व वाद, फौजदारी वाद, विकास प्राधिकरण नक्शा स्वीकृति, स्टाम्प वाद, स्टाम्प की कमी वाद आदि संबंधित प्रकरणों का निस्तारण किया जाएगा।

नाबालिग वाहन सवार ने राहगीर को मारी टक्कर

हल्द्वानी। राजपुरा क्षेत्र में पैदल चल रहे एक व्यक्ति को नाबालिग वाहन सवार ने टक्कर मार दी। सड़क हादसे में पैदल चल रहा राहगीर गंभीर रूप से घायल हो गया। आनन फानन में घायल को उपचार के लिए एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। परिजनों की तहरीर के आधार पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी। जानकारी के अनुसार राजेंद्रनगर राजपुरा निवासी जमुना ने पुलिस को सौंपी तहरीर में कहा कि बीते 5 मार्च की रात करीब साढ़े 9 बजे उनके पिता देवकी नंदन घर के पास टहल रहे थे। तभी एक नाबालिग वाहन सवार ने उन्हें टक्कर मार दी। हादसे में देवकी नंदन गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्हें इलाज के लिए नैनीताल रोड स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। अस्पताल में जांच के बाद यह सामने आया कि उनकी हड्डियां तीन जगह से टूटी हैं। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मामले की जांच शुरू कर दी है और नाबालिग वाहन सवार के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है।

दर्जी युवती को लेकर फरार, मुकदमा

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। मुखानी थाना क्षेत्र के अंतर्गत दर्जी की दुकान चलाने वाला एक समुदाय विशेष व्यक्ति 19 साल की युवती को लेकर फरार हो गया। घटना की जानकारी सामने आने के बाद इलाके में माहौल तनावपूर्ण हो गया। वहीं हिंदूवादी संगठन से जुड़े लोग थाने पहुंच गए, और आरोपी दर्जी के खिलाफ कार्रवाई की मांग करने लगे। पीड़ित परिजनों ने पुलिस को तहरीर सौंपकर कार्रवाई की मांग की। परिजनों की तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी दर्जी के खिलाफ अपहरण का मुकदमा दर्ज किया और युवती की तलाश में जुट गई। जानकारी के अनुसार अमरावती कालोनी फेज-2 निवासी ने मुखानी पुलिस को तहरीर सौंपते हुए कहा कि उनकी 19 वर्षीय बेटी जीजीआईसी में पढ़ती है। बीती 26 फरवरी को उनकी बेटी घर से स्कूल के लिए गई, लेकिन फिर लौट कर घर नहीं आई। बीते सोमवार को हिंदूवादी संगठन से जुड़े लोगों को जानकारी मिली तो हंगामा हो गया। पता लगा कि युवती के घर के पास ही पीलीभीत उत्तर प्रदेश निवासी 45 वर्षीय रहमत दर्जी की दुकान चलाता था। बताया जा रहा कि युवती रहमत की दुकान पर उससे सिलाई सीखने का भी काम करती थी, और रहमत की दुकान भी उसी दिन बंद हो गई, जिस दिन से युवती गायब हुई। हिंदूवादी संगठन से जुड़े लोगों के हंगामे के बाद युवती के पिता ने मुखानी पुलिस को तहरीर सौंपी। मुखानी थानाध्यक्ष सुशील जोशी ने बताया कि रहमत पर अपहरण की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है, और एक टीम गठित कर दोनो की तलाश शुरू कर दी।

एमबीए के छात्र ने लगाई फांसी

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। संदिग्ध परिस्थितियों के चलते एक एमबीए के छात्र ने फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। घटना का पता तब चला जब मां सुबह उठी और बेटे के कमरे में जाकर देखा तो वह फंदे से लटका हुआ था। आनन फानन में युवक को उपचार के लिए अस्पताल लाया गया जहां पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस की प्राथमिक जांच में पारिवारिक विवाद की बात सामने आ रही है। फिलहाल पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम कराके शव परिजनों के सुपुर्द कर मामले की जांच शुरू कर दी। पुलिस के मुताबिक, गिरिजा विहार फेज 6 कमलुवागांजा मुखानी निवासी गंगा सिंह माहरा यहां पत्नी कुसुम माहरा, दो बेटों व एक बेटी के साथ रहते हैं। बताया जा रहा कि असम बटालियन में तैनात गंगा सिंह इन दिनों दीमापुर में लेफ्टीनेंट कर्नल के पद पर तैनात हैं। एक बेटा पीलीभीत में रहता है। जबकि छोटा बेटा 22 वर्षीय दिनेश यहां मां व बहन

पिता असम राइफल्स में लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर तैनात

के साथ रहता था। सीओ सिटी अमित कुमार सैनी के अनुसार दिनेश शहर के प्रतिष्ठित कॉलेज से एमबीए द्वितीय सेमेस्टर की पढ़ाई कर रहा था। वह अपने घर की दूसरी मंजिल पर रहता था, जबकि मां, बेटी के साथ निचले तल पर। सोमवार रात करीब 9 बजे मां कुसुम ने फोन कर दिनेश को खाना खाने के लिए नीचे बुलाया। खाना खाने के बाद दिनेश अपने कमरे में चला गया और पूरा परिवार सो गया। सुबह मां उठी और बेटे के कमरे की ओर गई तो उसका शव सीढ़ियों के ऊपर रैक पर रखे गेंहू के नीले ड्रम से रस्सी के सहारे लटके पाया। घर में चीख-पुकार सुनकर आस पास के लोग एकत्र हो गए। आनन फानन में लोगों ने पुलिस को सूचना दी और दिनेश को फंदे से उतार कर सुशीला तिवारी चिकित्सालय ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पंचनामे में दिनेश की कलाई पर कटे के निशान भी दिखे हैं। माना जा रहा है कि संभवत दिनेश ने पहले कलाई काटने का प्रयास किया होगा। पुलिस की प्राथमिक जांच में पारिवारिक विवाद की बात सामने आ रही है। फिलहाल पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी।

30 मार्च को निर्धारित सभी प्रश्न पत्र अब 31 को

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने 30 मार्च को प्रस्तावित परीक्षाओं की तिथि में संशोधन करते हुए अब इन्हें 31 मार्च को आयोजित करने का निर्णय लिया है। इस संबंध में परीक्षा नियंत्रक प्रो. सोमेश कुमार की ओर से आदेश जारी किया गया है। विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार उत्तराखंड शासन से घोषित अवकाश में संशोधन के चलते यह निर्णय लिया गया है। शासन के आदेश के तहत 30 मार्च को सार्वजनिक अवकाश घोषित किए जाने के कारण परीक्षाएं आगे बढ़ाई गई है। 30 मार्च को निर्धारित सभी प्रश्न पत्र अब 31 मार्च मंगलवार को पूर्व निर्धारित समय पर ही आयोजित होंगे। उन्होंने बताया कि तिथि परिवर्तन की सूचना सभी क्षेत्रीय केंद्रों, अध्ययन केंद्रों व संबंधित अधिकारियों को भेज दी गई है।

पहचान पत्र व आवश्यक प्रमाण लाना अनिवार्य

जजी परिसर में सुबह 8 बजे से शुरू होगी प्रक्रिया

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। हल्द्वानी बार एसोसिएशन के आगामी चुनावों को लेकर तैयारियां तेज हो गई हैं। मंगलवार को चुनाव समिति की बैठक में मतदान प्रक्रिया, मतदाता सूची और आवश्यक दिशा-निर्देशों पर विस्तार से चर्चा की गई। मुख्य चुनाव अधिकारी आनंद पांडेय ने जानकारी दी कि इस बार कुल 1324 अधिवक्ता मतदाता सूची में शामिल हैं, जो 11 विभिन्न पदों के लिए अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। मतदान 28 मार्च को जजी परिसर में सुबह 8 बजे से शुरू होगा और निर्धारित समय तक जारी रहेगा। चुनाव में अध्यक्ष, सचिव, उपाध्यक्ष, उपाध्यक्ष महिला आरक्षित, कोषाध्यक्ष, संयुक्त सचिव, संयुक्त सचिव (प्रेस), पुस्तकालय अध्यक्ष, लेखाधिकारी, सदस्य सामान्य और सदस्य महिला आरक्षित जैसे महत्वपूर्ण पदों के लिए मतदान होगा। चुनाव अधिकारी ने यह भी स्पष्ट किया कि मतदान के दौरान बार काउंसिल ऑफ उत्तराखंड द्वारा जारी मूल पहचान पत्र साथ लाना अनिवार्य होगा। इसके अलावा, वर्ष 2010 के बाद पंजीकृत अधिवक्ताओं को अखिल भारतीय बार परीक्षा उत्तीर्ण प्रमाण पत्र और पंजीकरण प्रमाण पत्र भी प्रस्तुत करना होगा, अन्यथा उन्हें मतदान की अनुमति नहीं दी जाएगी।

लोकप्रिय नेता स्व. इंदिरा हृदयेश को श्रद्धांजलि

85वीं जयंती पर स्वराज आश्रम में लगा कांग्रेसियों का जमावड़ा, स्मृति दिवस मनाया

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। उत्तराखंड की लोकप्रिय जननेता स्व. डा. इंदिरा हृदयेश की 85वीं जयंती के अवसर पर मंगलवार को कांग्रेस मुख्यालय स्वराज आश्रम में भव्य स्मृति दिवस का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ नेताओं एवं सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके प्रेरणादायक जीवन को याद किया। इस दौरान कांग्रेस के नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि स्व. इंदिरा हृदयेश का जीवन जनसेवा संघर्ष और समर्पण का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा उत्तराखंड के विकास और जनता

के अधिकारों के लिए किए गए कार्य सदैव प्रेरणास्रोत रहेंगे। शहर विधायक सुमित हृदयेश ने कहा कि इंदिरा जी केवल एक जननेता नहीं, बल्कि हम सभी के लिए मार्गदर्शक थीं। उनके संस्कार और जनसेवा की भावना आज भी हमें निरंतर प्रेरित करती है। पूर्व कैबिनेट मंत्री हरीश दुर्गापाल ने कहा कि स्व. इंदिरा हृदयेश एक दूरदर्शी और सशक्त नेतृत्व की प्रतीक थीं। उन्होंने हमेशा आमजन की आवाज़ को प्राथमिकता दी और जनहित के लिए संघर्ष किया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष राहुल छिमवाल एवं महानगर अध्यक्ष एडवोकेट गोविंद सिंह बिष्ट ने कहा कि इंदिरा जी का राजनीतिक जीवन निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण का अनुपम उदाहरण है, जिसकी भरपाई संभव नहीं। कार्यक्रम के अंत में स्वराज आश्रम में मौजूद सैकड़ों कांग्रेसजनों ने एक स्वर में संकल्प लिया कि वे स्व. डा. इंदिरा हृदयेश के दिखाए मार्ग पर चलते हुए प्रदेश के विकास और जनकल्याण के कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाएंगे तथा उनके अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे। स्मृति कार्यक्रम में हरीश मेहता, हेमंत बगड़वाल, सुहैल सिद्दीकी, भोला दत्त भट्ट, एनबी गुणवंत, मधु सांगुड़ी, हेम पांडे, मोहन बिष्ट, जाकिर हुसैन, कुंदन नेगी, पुष्कर दानू, मलय बिष्ट, डा. मयंक भट्ट, संजय किरौला, राजेंद्र बिष्ट 'रज्जी', ललित जोशी, जया कर्नाटक, नीमा भट्ट, शोभा बिष्ट, राजो टंडन, राधा आर्य, भगवती बिष्ट, रवि जोशी, मुकुल बल्यूटिया, मोना शर्मा, शैलेंद्र दानु, नवीन पांडे, दिवेश तिवारी, महेशानंद, इंद्र पाल आर्य, गुरप्रीत सिंह प्रिंस, बहादुर बिष्ट, संजय रावत, शराफत खान, नितिन बल्यूटिया, कैलाश साह, दीपक साह, डा.बालम बिष्ट, राजेन्द्र दुर्गापाल, दीप पाठक, जगमोहन चिलवाल, हरेन्द्र क्वीरा, नंदन दुर्गापाल, हिमांशु जोशी, मनीष गोस्वामी, नीरज तिवारी, अर्जुन बिष्ट, जगमोहन बगड़वाल, गोविंद बगड़वाल, नीरज मेहरा मौजूद रहे।

सरकार के चार साल पर मैराथन

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। जन-जन की सरकार-4 साल बेमिसाल के अंतर्गत मंगलवार को खेल विभाग द्वारा विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया। जिसमें बालकों/बालिकाओं और पुरुषों/महिलाओं की मैराथन दौड़ हल्द्वानी स्टेडियम से तिकोनिया चौराहे और फिर वापस स्टेडियम में समापन हुआ। मैराथन दौड़ प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि उत्तराखंड मंडी परिषद के अध्यक्ष डा. अनिल कपूर डब्बू और विशिष्ट अतिथि अपर जिलाधिकारी शैलेंद्र सिंह नेगी व जिला क्रीड़ा अधिकारी डा. निर्मला पंत ने संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर इसका शुभारंभ किया। दौड़ में लगभग 123 प्रतिभागियों ने भाग लिया, और विजेताओं को लकी ड्रा के माध्यम से 14 पुरस्कार दिए गए। दौड़ प्रतियोगिता में प्रशांत बिष्ट, राजू बिष्ट, प्रियांशु, मनक, हिमानी, आरती, अक्षत, भूपेंद्र देव, विकास, वैभव, ध्रुव, दिव्यांशी, मोहम्मद आर्यन विजय रहे। इसके बाद 11 बजे से जिला स्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता आयोजित की गई।

जिसमें सात टीमों ने प्रतिभाग किया। पहले सेमीफाइनल में कठघरिया ने ऊंचापुल को हराया, जबकि दूसरे सेमीफाइनल में हल्द्वानी स्टेडियम ने ब्रदर्स क्लब को हराकर फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल मैच में हल्द्वानी स्टेडियम ने कठघरिया को हराकर ट्रॉफी पर कब्जा किया। वॉलीबाल प्रतियोगिता का शुभारंभ दर्जा राज्यमंत्री नवीन वर्मा ने किया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि लालकुआं विधायक डा. मोहन सिंह बिष्ट, अपर जिलाधिकारी शैलेंद्र सिंह नेगी, और जिला क्रीड़ा अधिकारी डा. निर्मला पंत ने विजेता टीमों को सम्मानित किया। जबकि संचालन पूर्व उपनिदेशक सुरेश चंद पांडे द्वारा किया गया। इस दौरान दर्जा राज्यमंत्री दिनेश आर्य, भाजपा नेता बाबी आर्य, भाजपा महामंत्री अजय राज, खेल विभाग के अधिकारी, प्रशिक्षक सहित आयोजन के सचिव श्याम मनु भट्ट, निर्णायक तनुजा आर्य, कमल बिष्ट, प्रियांशु जोशी, योगेश रौतेला, गोविंद लटवाल मौजूद थे। वहीं जिला क्रीड़ा अधिकारी डा. निर्मला पंत ने बताया कि गोपेश्वर में राज्य स्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन 26-27 मार्च को होने जा रहा है, जिसमें जिला नैनीताल की वॉलीबॉल टीम प्रतिभाग करेगी। इस प्रतियोगिता में चयनित टीम 25 मार्च को गोपेश्वर के लिए रवाना होगी।

पूर्व छात्र-छात्राओं के लिए महत्वपूर्ण सूचना

हल्द्वानी। नगर निगम बालक इंटर कॉलेज काठगोदाम ने विद्यालय में अध्ययनरत रहे पूर्व छात्र-छात्राओं के लिए महत्वपूर्ण सूचना जारी की है। स्कूल के प्रधानाचार्य ने बताया कि सत्र 1981-82 से सत्र 2015-16 तक अध्ययन कर चुके छात्र-छात्राओं की संचायिका धन. राशि विद्यालय के खाते में जमा है। संबंधित छात्र-छात्राओं से अपील की गई है कि वे विद्यालय के कार्य दिवसों में प्रकाशन की तिथि से एक माह के भीतर अपनी जमा राशि विद्यालय से प्राप्त कर लें। निर्धारित समयावधि के उपरांत शेष बची संचायिका धनराशि का उपयोग विद्यालय हित में कर लिया जाएगा। विद्यालय प्रशासन ने सभी पूर्व छात्र-छात्राओं से समय रहते अपनी धनराशि प्राप्त करने की अपील की है।

चारधाम यात्रा के बहिष्कार की चेतावनी

फार्मेसी अधिकारियों ने स्वास्थ्य निदेशक को भेजा पत्र

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। उत्तराखंड में चारधाम यात्रा मार्ग पर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने वाले फार्मेसी अधिकारियों ने वर्ष 2026 की चारधाम यात्रा के बहिष्कार की चेतावनी दी है। मंगलवार को फार्मेसी अधिकारी एसोसिएशन के कुमाऊं मंडल सचिव ठाकुर प्रेम शंकर सिंह ने स्वास्थ्य निदेशक कुमाऊं को सौंपे गए ज्ञापन में बताया कि अल्मोड़ा, नैनीताल, चंपावत और बागेश्वर जिले के फार्मेसी अधिकारी चारधाम यात्रा से जुड़े रूद्रप्रयाग, चमोली और उत्तरकाशी जिलों में लाखों तीर्थयात्रियों को कठिन परिस्थितियों में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उन्होंने आगे कहा वर्ष 2024 और 2025 की यात्रा ड्यूटी से जुड़े लगभग 20 लाख रुपये के यात्रा भत्ते और प्रोत्साहन भत्ते अब तक भुगतान नहीं किए गए हैं, जबकि लगातार

पुराना भुगतान न होने पर आक्रोश

अनुरोध और पत्र व्यवहार किए जाने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने कहा केदारनाथ यात्रा मार्ग में भोजन और आवास से जुड़ी समस्याओं को लेकर संगठन ने दो वर्ष पूर्व भी मुख्य चिकित्सा अधिकारी और जिला प्रशासन रूद्रप्रयाग को लिखित ज्ञापन भेजा था, मगर अब तक कोई समाधान नहीं निकला। ज्ञापन में फार्मेसी अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि विगत वर्षों के भत्तों का भुगतान और यात्रा मार्ग में स्वास्थ्य कर्मचारियों के लिए सुविधाओं की व्यवस्था किए बिना यात्रा ड्यूटी बहिष्कार किया जाएगा। ठाकुर प्रेम शंकर सिंह ने कहा है कि संगठन के सदस्य विपरीत परिस्थितियों में चारधाम यात्रा को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दे रहे हैं, लेकिन यदि इन मांगों पर निर्णायक कार्रवाई नहीं की गई तो अप्रैल के प्रथम सप्ताह से संगठन धरना-प्रदर्शन, आंशिक या पूर्ण कार्य बहिष्कार और चारधाम यात्रा ड्यूटी का बहिष्कार शुरू करेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि आंदोलन से जनता को होने वाली किसी भी परेशानी की जिम्मेदारी विभाग की होगी।

यूओयू में कहानी पाठ एवं परिचर्चा

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग की ओर से मंगलवार को विश्वविद्यालय परिसर में कहानी पाठ एवं परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साहित्य और रचनात्मकता के विविध पहलुओं पर विस्तार से चर्चा हुई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने कहा कि विश्वविद्यालयों में रचनात्मक अवसरों का सृजन होना चाहिए। इस तरह के आयोजन रचनाओं का तटस्थ मूल्यांकन करते है और जीवन की एकरसता को तोड़ते हुए सृजनात्मकता को बढ़ावा देते है। उन्होंने कहानीकारों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रस्तुत कहानियां हमारे समय का विश्वसनीय आलोचनात्मक परिदृश्य प्रस्तुत करती है। कार्यक्रम का विषय प्रवेश करते हुए हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डा. राजेंद्र कैड़ा ने कहा कि कविता जीवन के आगे-पीछे चलती है, जबकि कहानी जीवन के समानांतर चलती है। कार्यक्रम की शुरुआत कथाकार श्रीकांत दुबे की कहानी गमलबानी के पाठ से हुई, जिसमें मध्यवर्गीय शहरी जीवन के छोटे-छोटे प्रसंगों के माध्यम से कथानक प्रस्तुत किया गया। इसके बाद शशांक शुक्ल ने कमेटी में आचार्य कहानी का पाठ किया। परिचर्चा सत्र में बरेली के युवा कवि आलोचक संदीप तिवारी ने कहा कि कहानी अपने सूक्ष्म विवरणों से बड़ी बनती है। उन्होंने गमलबानी को महानगरीय जीवन में संवेदनाओं के क्षरण की कहानी बताया। युवा आलोचक डा. जगन्नाथ दुबे ने कहा कि आज की कहानी नैनो नैरेटिव के रूप में उभर रही है जो बदलते यथार्थ को सटीक ढंग से पकड़ रही है। आलोचक अरुणेश शुक्ल ने कहा कि गमलबानी जीवन का रूपक है, जबकि कमेटी में आचार्य विश्वविद्यालयी व्यवस्था की जटिलताओं को उजागर करती है। परिचर्चा में डा. सुचित्रा अवस्थी ने मिट्टी के रूपक को जीवन संरक्षण से जोड़ा, वहीं डा. राजेंद्र कैड़ा ने इसे जीवन को सीमित दायरे में देखने की प्रवृत्ति से संबंधित बताया। कार्यक्रम का संचालन डा. कुमार मंगलम ने किया, जबकि स्वागत डा. अनिल कार्की और धन्यवाद ज्ञापन डा. पुष्पा बुढ़लाकोटी ने किया। इस अवसर पर मानविकी विद्याशाखा के शिक्षक एवं शोधार्थी मौजूद रहे।

गरीब परिवार की मदद की

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। सौहार्द जन सेवा समिति ने एक जरूरतमंद परिवार की मदद के लिए हाथ बढ़ाया है। मंगलवार को समिति द्वारा मूलरूप से रामगढ़ व हाल निवासी कुसुमखेड़ा में रहने वाले हेमचंद्र पांडे को 11,000 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई। समिति की अध्यक्ष विद्या महतोलिया ने बताया कि हेमचंद्र पांडे तीन साल पहले एक गंभीर एक्सीडेंट का शिकार हो गए थे, और तब से वह पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हो पाए हैं। उनका एक साइड पूरी तरह से काम नहीं कर रहा, और वह पिछले तीन साल से बिस्तर पर हैं। हेमचंद्र पांडे का एक छोटा बच्चा है, और उनकी पत्नी एक प्राइवेट स्कूल में आया के तौर पर काम करती हैं, जिससे उनका घर तो किसी तरह चल रहा है, लेकिन इलाज के लिए पैसे की भारी कमी है। परिवार आर्थिक तंगी के कारण हेमचंद्र का इलाज नहीं कर पा रहा था। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए संस्था के पदाधिकारियों ने हेमचंद्र पांडे के घर जाकर उन्हें आर्थिक सहायता दी। इस नेक कार्य में समिति की अध्यक्ष विद्या महतोलिया, उपाध्यक्ष नंदा पांडे, संयुक्त सचिव शशि जोशी, उपाध्यक्ष पूर्णिमा पांडे और उप सचिव अंजू पांडे का विशेष योगदान रहा।

उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि0
कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, विद्युत वितरण खण्ड (ग्रामीण)
33/11 केवी उपसंस्थान परिसर, कमलुवागांजा, हल्द्वानी (नैनीताल)

निविदा समय विस्तार सूचना

विद्युत वितरण खण्ड (ग्रामीण), हल्द्वानी के अन्तर्गत इस खण्ड से प्रकाशित निविदा संख्या 76/2025-26, जो कि दिनांक 25.03.2026 को खोली जानी थी, अपरिहार्य कारणवश निविदा खुलने की तिथि 07.04.2026 की जाती है। निविदा प्रपत्र दिनांक 06.04.2026 तक कार्यालय अवधि में प्राप्त किये जा सकते हैं।

निविदा की अन्य शर्ते यथावत् रहेंगी।

अधिशासी अभियन्ता

पत्रांक: 1315/वि0वि0ख0ग्रा0 (ह0) दिनांक: 24.03.2026

उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि0
कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, विद्युत वितरण खण्ड (ग्रामीण)
33/11 केवी उपसंस्थान परिसर, कमलुवागांजा, हल्द्वानी (नैनीताल)

ई-निविदा समय विस्तार सूचना

विद्युत वितरण खण्ड (ग्रामीण), हल्द्वानी के अन्तर्गत इस खण्ड से प्रकाशित ई-निविदा संख्या 73, 74 एवं 75/2025-26, जो कि दिनांक 25.03.2026 को खोली जानी थी, अपरिहार्य कारणवश निविदा खुलने की तिथि 07.04.2026 की जाती है। निविदा प्रपत्र दिनांक 06.04.2026 तक कार्यालय अवधि में प्राप्त किये जा सकते हैं।

निविदा की अन्य शर्ते यथावत् रहेंगी।

अधिशासी अभियन्ता

पत्रांक: 1315/वि0वि0ख0ग्रा0 (ह0) दिनांक: 24.03.2026

शाह टाइम्स

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. राना** द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजडू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं कृष्णा लोहा भण्डार, प्रथम तल काला ढुंगी रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड) से प्रकाशित।

सम्पादक:
एस.एन. राना

*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'
☎05946-250286

मुख्यालय:
मोबाइल-9720007290
R.N.I. No. UTTHIN/2003/10264
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

हथियारों के सौदागरों पर एसटीएफ की बड़ी कार्रवाई

भारी मात्रा में आटोमेटिक हथियारों की बरामदगी, दो अभियुक्त दबोचे

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। उत्तराखंड एसटीएफ ने हथियार तस्करों के विरुद्ध बड़ी कार्यवाही की है। भारी मात्रा में आटोमेटिक हथियारों की बरामदगी कर दो हथियार तस्करों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से हथियार व कारतूस के साथ ही हथियार सप्लाई के लिए प्रयोग में लाई जा रही कार भी बरामद की है। इसके साथ ही उत्तराखण्ड-उत्तर प्रदेश में सक्रिय गैंग का नेटवर्क ध्वस्त कर दिया है।

उत्तराखण्ड एसटीएफ की एण्टी नारकोटिक्स टीम कुमाऊं द्वारा कोतवाली जसपुर पुलिस के साथ संयुक्त कार्यवाही करते हुए दो अभियुक्तों से दो पम्प एक्शन, 02 पिस्टल-32 बोर, 10 कारतूस जिन्दा-32 बोर बरामद किए हैं। गिरफ्तार अभियुक्तों शमशेर सिंह पुत्र कुलवंत सिंह, निवासी ग्राम हजीरा, थाना जसपुर, जनपद उधम सिंह नगर व सिमरनजीत पुत्र अजमेर, निवासी अंजनिया फार्म, थाना पुलभट्टा, जनपद उधम सिंह को जसपुर क्षेत्र से गिरफ्तार कर उनके विरूद्ध कोतवाली जसपुर पर आर्म्स एक्ट की सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजीकृत किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तों में से अभियुक्त सिमरनजीत पाया गया थाना पुलभट्टा का हिस्ट्रीशीटर, जिस पर उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश राज्य में एक दर्जन से अधिक आपराधिक मामले है दर्ज हैं।

अभियुक्तों ने बताया कि यह हथियार शाहजहांपुर उत्तर प्रदेश से लाए थे तथा जसपुर में बेचने के लिए जा रहे थे। अभियुक्तगणों से पूछताछ पर इस प्रकार के वैपन को सम्भवतः फर्जी लाइसेंस बनाकर उनपर चढ़ाकर आगे देना था। सभी इनपुट पर कार्यवाही की जा रही है। अभियुक्त शमशेर सिंह पुत्र कुलवंत सिंह, निवासी ग्राम हजीरा, थाना जसपुर, जनपद उधम सिंह नगर व सिमरनजीत पुत्र अजमेर, निवासी अंजनिया फार्म, थाना पुलभट्टा, जनपद उधम सिंह नगर है।

एसटीएफ की टीम में निरीक्षक पावन स्वरुप, निरीक्षक विकास कुमार, उप निरीक्षक विनोद चंद्र जोशी, उपनिरीक्षक विपिन चन्द्र जोशी, उपनिरीक्षक केजी मठपाल, हेड कांस्टेबल महेन्द्र गिरी, हेड कांस्टेबल किशोर कुमार, हेड कांस्टेबल रविन्द्र सिंह, हेड कांस्टेबल दुर्गा सिंह, हेड सुरेन्द्र कनवाल, आरक्षी वीरेंद्र चौहान, इसरार अहमद, जितेन्द्र कुमार के अलावा कोतवाली जसपुर पुलिस टीम के उप निरीक्षक गोविन्द मेहता, आरक्षी विजराम सिंह, सुभाष चंद्र शामिल थे।

जनता की हाहाकार से टूटी प्रशासन की नींद

■ अब होगी सिलेंडर की होम डिलीवरी, एजेंसी से पूरी तरह से लगाई रोक

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। आखिर गैस की किल्लत कब खत्म होगी ? यह प्रश्न अब आम लोगों के जेहन में दहशत पैदा कर रहा है। खाड़ी देशों में युद्ध की आग से उपजे तेल और गैस के संकट को लेकर केंद्र और राज्य सरकार की अपील का कोई खास असर नहीं दिख रहा है। लोग जहां गैस एजेंसियों पर डेरा जमाने लगे हैं तो वहीं दूसरी तरफ गरीब तबके के लोग भारी कीमत चुकाकर जैसे तैसे गुजारा करने पर मजबूर हो गए हैं।

रसोई गैस सिलेंडर इन दिनों जरूरत से ज्यादा एक जंग बन चुका है। रुद्रपुर में स्थित विभिन्न गैस एजेंसियों के बाहर रोज सूर्य उदय होने से पहले ही सैकड़ों लोग घरेलू सिलेंडर हाथ में लिए लाइन में खड़े नजर आते हैं। अंधेरे में शुरू हुई कतारें दिन चढ़ने तक लंबी होती जाती हैं, लेकिन जैसे ही गैस की गाड़ी पहुंचती है, इंतजार का धैर्य टूट जाता है और माहौल अचानक हंगामे में बदल जाता है। प्रशासन की मौजूदगी न के बराबर दिखी और अव्यवस्था लगातार बढ़ती गई। पुलिस बल भी लगाया गया ताकि भीड़ को नियंत्रित किया जा सके। इसके बाद जिला प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए गैस एजेंसी संचालकों को स्पष्ट निर्देश दिए कि अब किसी भी स्थिति में गोदाम या एजेंसी से सीधे सिलेंडर वितरण नहीं किया जाएगा। जिलाधिकारी की ओर से साफ आदेश जारी किया गया कि गैस सिलेंडर केवल होम डिलीवरी के माध्यम से ही उपभोक्ताओं तक पहुंचाया जाएगा। आदेश का उल्लंघन करने पर कड़ी कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई है। एजेंसी संचालकों ने भी अब प्रशासन के निर्देशों का पालन करने की बात कही है, हालांकि उनका कहना है कि भीड़ को नियंत्रित करना प्रशासन की जिम्मेदारी है। फिलहाल प्रशासन की सख्ती के बाद व्यवस्था सुधारने की कोशिश शुरू हो गई है।

एक नजर

विधायक ने सीसी मार्गों का लोकार्पण कर जनता को किया समर्पित

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। लगातार विधानसभा का भ्रमण कर विकास कार्यों को जनता को समर्पित कर रहे रुद्रपुर विधायक शिव अरोरा ने वार्ड 16 क्षेत्र के विम स्क्वायर कॉलोनी में विधायक निधि से स्वीकृत पांच-पांच लाख के दो सीसी मार्गो का लोकार्पण कर जनता को समर्पित किया।

इससे पहले कॉलोनीवासियों द्वारा विधायक का फूलमालाओं से स्वागत किया गया। वही विधायक अरोरा ने कहा विम स्क्वायर क्षेत्र जहां बहुत ही बुद्धिजीवी वर्ग के लोग रहते हैं और इस कालोनी से मेरा बहुत पुराना नाता है। 2022 विधानसभा चुनाव के दौरान भी यहां से भरपूर स्नेह आशीर्वाद मिला था और यह स्नेह आशीर्वाद ही हमें विकास कार्यों को आगे बढ़ाने में धरातल पर उतरने के लिए प्रेरणा देता है। विधायक बोले कॉलोनी वासियों की मांग पर यहां की दो सड़कों का निर्माण कार्य उनके द्वारा विधायकनिधि से कराया गया है। विधायक बोले पिछले चार वर्ष के कार्यकाल में उनके द्वारा अनेकों विकास कार्य रुद्रपुर क्षेत्र में कराए गए, जिनकों धरातल पर उतरते हुए क्षेत्र की जनता अब देख रही है ।

इस दौरान पार्षद प्रमोद शर्मा, सांसद प्रतिनिधि कपिल शर्मा, महेश अग्रवाल, मोर सिंह यादव बिट्टू चौहान, जीतेन्द्र संधू महेंदी शर्मा, अरविन्द गंगवार, वीरेंद्र सुखीजा, नीरज तिवारी, कमलेश शर्मा, राजीव चौहान, धर्मेंद्र शर्मा, रावेश गंगवार, दीपक सक्सेना, भूपेंद्र चौहान, अरविन्द, कृष्ण कुमार, अनिल द्विवेदी, प्रदीप दास, बालेश शर्मा, रोहित शर्मा, अजय गाबा, प्रशांत सक्सैना, एससी तिवारी, सुनील सचान, सुधांशु भारद्वाज, विवेक शर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

महापौर ने किया सीसी मार्ग और नाली निर्माण का लोकार्पण

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर । नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत विकास कार्यों की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए महापौर विकास शर्मा ने ट्रांजिट कैंप, वार्ड नंबर 10 में पार्षद मुकेश रस्तोगी के क्षेत्र अंतर्गत महत्वपूर्ण निर्माण कार्यों का विधिवत लोकार्पण किया। नगर निगम निधि से निर्मित मुकेश कुमार के घर से मंजू मौर्य के घर तक नवनिर्मित सीसी सड़क एवं नाली निर्माण कार्य का जनता को समर्पित करते हुए महापौर ने क्षेत्रवासियों को विकास की इस नई सौगात की बधाई दी।

लोकार्पण के अवसर पर आयोजित जनसभा और मातृशक्ति के साथ संवाद करते हुए महापौर विकास शर्मा ने कहा कि नगर के प्रत्येक वार्ड को बुनियादी सुविधाओं से संतृप्त करना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने अपनी उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए बताया कि नगर निगम क्षेत्र में जल निकासी की समस्या के स्थायी समाधान के लिए आधुनिक नालियों का जाल बिछाया जा रहा है और आंतरिक सड़कों को सुदृढ़ किया जा रहा है, जिससे आम जनता का जीवन सुगम हो सके। यहां वीरेंद्र रस्तोगी, कविता सागर, विद्यासागर, आनंद सागर, भानु प्रताप शर्मा, महा राम, हरिप्रकाश, कैलाश राठौर, एमपी मौर्य, नंद किशोर चौहान, शैलेंद्र तरफदार, गौतम किराना, मुराए लाल, चम्पा देवी, आशा देवी, निरंजना, लीलावती, छत्रपाल, राकेश, राजू, संजीव, दया शंकर, मोहनलाल, मो. निका, सुरेश, राजू, राजेश, राम बहादुर, लखपत, मनोरमा, सत प्रकाश, हरीश, लता प्रसाद, विकास गुप्ता, मनोज गुप्ता, नन्ने टेलर, श्याम भरी गंगवार, मदन दिवाकर, महेश, लता रानी, मंगला देवी, लक्ष्मी, राजपथ, अर्जुन, कौशल्या और कांती देवी सहित सैकड़ों क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

पीएम श्री अटल उत्कृष्ट जीआईसी बंडिया में एनएसएस विशेष शिविर का शुभारंभ

■ राष्ट्र सेवा का संकल्पः शहीद दिवस पर बंडिया स्कूल में सात दिवसीय एनएसएस शिविर शुरू

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। पीएम श्री अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कालेज बंडिया में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) इकाई के सत्र 2025-26 के सात दिवसीय विशेष शिविर का सोमवार को रंगारंग शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन विद्यालय के प्रधानाचार्य चंदन कुमार, अर्थशास्त्र प्रवक्ता अर्जुन सिंह और रसायन विज्ञान प्रवक्ता एवं एनसीसी प्रभारी अवधेश कुमार कुशवाहा ने संयुक्त रूप से मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

संयोगवश आज 'शहीद दिवस' होने के कारण कार्यक्रम में देशभक्ति का विशेष उत्साह देखा गया। प्रधानाचार्य चंदन कुमार ने अमर शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के बलिदान को याद करते हुए स्वयंसेवियों में जोश भरा। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को राष्ट्रहित और समाजहित के लिए अपने व्यक्तिगत स्वार्थ का त्याग करना चाहिए। उन्होंने एनएसएस के ध्येय वाक्य 'मैं नहीं किन्तु आप' (Not Me But You) की व्याख्या करते हुए स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और श्माउंटेन मैनश दशरथ मांझी के जीवन से निःस्वार्थ सेवा की प्रेरणा लेने का आह्वान किया। शिविर के प्रथम सत्र में पूर्व छात्रा एवं वरिष्ठ स्वयंसेवी प्रतिभा ने नए छात्र-छात्राओं को एनएसएस के महत्व से परिचित कराया और सभी गतिविधियों में गंभीरता से प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित किया। वहीं, कैम्प कमांडर दिव्या साहनी और स्वयंसेवी अंकिता ने 'राष्ट्रीय सेवा योजनाः एक परिचय' विषय पर अपने विचार रखते हुए शिविर के अनुशासन और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। विशिष्ट वक्ता के रूप में अर्जुन सिंह और अवधेश कुमार कुशवाहा ने भी छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन किया और उन्हें अनुशासित जीवन जीने की सीख दी। बौद्धिक सत्र के पश्चात और भोजन अवकाश से पूर्व, सभी स्वयंसेवियों ने विद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया। छात्र-छात्राओं ने पूरे उत्साह के साथ क्यारियों की सफाई कर 'श्रमदान' का संदेश दिया। इस अवसर पर विद्यालय का समस्त स्टाफ और एनएसएस के स्वयंसेवी उपस्थित रहे।

मीडिया वर्कशॉप वन्य जीव संरक्षण एवं प्रबंधन की दी जानकारी

■ मीडिया की वन विभाग और आम जनमानस के बीच सेतु की भूमिकाः एसडीओ वर्मा

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। वन विभाग की एसडीओ संचिता वर्मा के नेतृत्व में वन्य जीव प्रबंधन एवं संरक्षण, वन्यजीवों के प्रति जागरूकता फैलाने में मीडिया भूमिका एवं सहयोग, मानव वन्य जीव संघर्ष संबंधित प्रकरणों में सटीक रिपोर्टिंग के माध्यम से अफवाहों को रोकने और जन सुरक्षा सुनिश्चित करने, वन्य जीव प्रबंधन एवं संरक्षण के क्षेत्र में तराई पूर्वी वन प्रभाग की उपलब्धियों और भविष्य की कार्य योजनाओं को लेकर सुरई वन गेस्ट हाउस में मीडिया के साथ एक वर्कशॉप का आयोजन किया गया।

वर्कशॉप में वेस्टर्न सर्किल हल्द्वानी के सीनियर बायोलॉजिस्ट प्रशांत वर्मा तथा भास्कर जोशी द्वारा मानव वन्य जीव संघर्ष के कारण, वन्य जीवों के व्यवहार, पहचान व सुरक्षा तथा उनके बचाव सहित कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर जानकारी प्रदान किया।

इसके साथ ही उन्होंने मानव वन्य जीव संघर्ष, वन्य जीव संरक्षण व पहचान एवं प्रबंधन से संबंधित रिपोर्टिंग को वन विभाग से समन्वय स्थापित करने के पश्चात वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर सटीक खबरों को प्रकाशित और प्रसारित करने की बात कही। वहीं उन्होंने लगातार बढ़ते मानव वन्य जीव संघर्ष व वनाग्नि की रोकथाम, वन्य जीव संरक्षण एवं पहचान की तथ्य परक खबरों को प्रकाशित और प्रसारित करने हेतु आम जनमानस और विभाग के बीच में सेतु का कार्य करने हेतु प्रेरित किया। वहीं एसडीओ संचिता वर्मा ने आशा व्यक्त किया कि मानव वन्य जीव संघर्ष तथा वनाग्नि की रोकथाम, प्रबंधन और वनों की सुरक्षा को लेकर वर्कशॉप में मीडिया के साथ किए गए संवाद से निश्चित रूप से जन जागरूकता आएगी और वन विभाग को इसका लाभ मिलेगा। इस मौके पर उत्तराखंड मीडिया क्लब के अध्यक्ष दीपक फुलेरा, महामंत्री गोरख नाथ, मुस्तकीम मलिक, इश्तियाक अंसारी, गगन सिंह, हरीश मेहरा, धीरेंद्र गौड़, परमजीत सिंह पम्मा, सूरज गुसाईं, उत्तम कुमार, अरविंद कुमार, केदार सोनकर, विजय गुप्ता तथा सपन रॉय आदि मौजूद रहे।

पालिका अध्यक्ष जोशी ने निर्माणाधीन सड़कों का किया निरीक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। नगर पालिका अध्यक्ष रमेश चंद्र जोशी ने वार्ड संख्या 15,16,18 व 19 मे बनाई जा रही सड़को का स्थलीय निरीक्षण किया एवं आमजन से भेंट कर उनकी समस्याओं को सुना। इस दौरान स्थानीय नागरिकों के साथ वार्ड से जुड़ी विभिन्न समस्याओं, आवश्यकताओं एवं विकास संबंधी प्रस्तावों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। निरीक्षण के दौरान उन्होंने प्रगति की समीक्षा की तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। वहीं उन्होंने सुझावों और शिकायतों को गंभीरता से सुनते हुए उनके त्वरित समाधान का आश्वासन भी दिया। इस मौके पर सभासद दीपा धरियाल, आनु धरियाल, गणेश बिष्ट, राजेंद्र सिंह, मोहन बोरा, दिनेश चंद्र, रजनी खोलिया, विकास मेहता आदि मौजूद रहे।

फांसी पर लटकी मिली तीन बच्चों की मां

■ पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा

शाह टाइम्स संवाददाता

शक्तिफार्म। सुरेंद्रनगर गांव में एक महिला ने घर के अंदर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली, जिससे पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

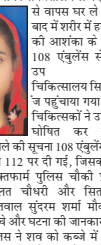

जानकारी के अनुसार, सुरेंद्रनगर निवासी रीना मंडल (28) पत्नी दिलीप मंडल ने गत शाम करीब 6 बजे अपने कच्चे घर में लकड़ी के खंभे से साड़ी के सहारे फांसी लगा ली। घटना के समय घर में कोई भी मौजूद नहीं था। पति बाजार गया हुआ था, सास घर से बाहर थी और तीनों बच्चे खेलने गए थे। शाम को जब बच्चे घर लौटे तो दरवाजा अंदर से बंद मिला। संदेह होने पर बच्चे दूसरे कमरे में चढ़कर देखने लगे, जहां मां को फांसी के फंदे पर लटका देख उनके होश उड़ गए। बच्चों के शोर मचाने पर पड़ोसी मौके पर पहुंचे और दरवाजा तोड़कर महिला को नीचे उतारा। परिजन पहले उसे स्थानीय चिकित्सालय ले गए, जहां से वापस घर ले आए। बाद में शरीर में हलचल की आशंका के चलते 108 एंबुलेंस से उसे उप जिला चिकित्सालय सितारगंज पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मामले की सूचना 108 एंबुलेंस टीम द्वारा 112 पर दी गई, जिसके बाद शक्तिफार्म पुलिस चौकी प्रभारी ललित चौधरी और सितारगंज कोतवाल सुंदरम शर्मा मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटना की खबर मिलते ही मृतका के मायके वाले दिनेशपुर से सुरेंद्रनगर पहुंच गए। मृतका अपने पीछे तीन छोटे बच्चों को छोड़ गई है। मां की मौत से तीनों बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल है।

विश्व क्षय रोग दिवसः उत्तराखंड के शीर्ष तीन जिलों में शामिल हुआ ऊधमसिंह नगर

■ जिला क्षय रोग क्लिनिक रुद्रपुर में भव्य कार्यक्रम आयोजित

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। 'विश्व क्षय रोग दिवस' के अवसर पर जिला क्षय रोग क्लिनिक, रुद्रपुर में एक विशेष जागरूकता एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. डीपी सिंह द्वारा की गई। इस वर्ष का आयोजन जिले के लिए विशेष रहा, क्योंकि ऊधमसिंह नगर को क्षय रोग उन्मूलन की दिशा में उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रदेश के शीर्ष तीन जनपदों में चुना गया है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रदेश के सेवानिवृत्त स्वास्थ्य महानिदेशक डा. आरके पांडे ने टीबी उन्मूलन के लिए सामुदायिक सहभागिता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि समय पर जांच और पूर्ण उपचार ही इस बीमारी को जड़ से खत्म करने का एकमात्र रास्ता है। विशिष्ट अतिथि जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डा. अलोक शुक्ला एवं जिला होम्योपैथिक अधिकारी डा. महेश जोशी ने टीबी के उपचार में एकीकृत चिकित्सा पद्धति के महत्व पर प्रकाश डाला। नगर स्वास्थ्य अधिकारी डा. पीयूष रंजन ने शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता और टीबी के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता जताई। इस अवसर पर टीबी विभाग के कर्मचारियों ने लाभार्थियों को श्पोषण किटश वितरित की। कार्यक्रम का सफल संचालन बीएन बेलवाल, मुख्य फार्मेसी अधिकाई द्वारा किया गया, जिन्होंने अपनी कुशल मेजबानी से कार्यक्रम में ऊर्जा भरी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. डीपी सिंह ने कहा कि हमें गर्व है कि हमारा जिला प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले जिलों में शामिल है। हमारा लक्ष्य 'क्षय रोग मुक्त भारत' के संकल्प को सिद्ध करना है। मैं सभी स्वास्थ्य कर्मियों और निक्षय मित्रों का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस उपलब्धि में विशेष योगदान दिया।

कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित लोगों ने टीबी के प्रति समाज को जागरूक करने और रोगियों की सहायता करने की शपथ ली। इस अवसर पर पार्षद भूतबंगला गिरीश पाल, डीपीएम हिमांशु मुस्यूनी, संजय पाण्डेय, प्रदीप महर, दिनेश जोशी, राहुल श्रीवास्तव, शुभम पपनोई, राजेश अरोड़ा, सुनील सती, रीना सिंह, अभिनव गुप्ता, सौरव आदि उपस्थित रहे।

एनएसएस शिविर के चौथे दिन किया गया योगाभ्यास

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। राजकीय इंटर कॉलेज श्रीपुर बिचवा मे एनएसएस का सात दिवसीय शिविर चल रहा है। इस शिविर के चौथे दिन प्रातः स्वयंसेवियों द्वारा योगाभ्यास किया गया। इसके उपरांत खटीमा विधायक भुवन चंद्र कापड़ी द्वारा मां सरस्वती के चित्र का अनावरण कर द्वीप प्रज्जवलित किया गया और सरस्वती की वंदना की गई। वहीं कार्यक्रम अधिकारी अनार सिंह द्वारा विधायक कापड़ी एवं क्षेत्र पंचायत सदस्य प्रतिनिधि नंदन सिंह बुगला का बैच अलंकरण कर और शाष्ल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। शिविर में विधायक कापड़ी ने स्वयंसेवियों को एनएसएस के कर्तव्यों, उद्देश्यों, राष्ट्र सेवा, स्वच्छता तथा अनुशासन आदि के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। कार्यक्रम का सफल संचालन योगेश जोशी ने किया। इस मौके पर विशेष कुमार सक्सेना, हेमंत खनका, गीता राणा व संतोष जोशी साहित स्वयंसेवी उपस्थित रहे।

सोमांश बने एमओडी देहरादून के किड्स एम्बेसडर

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। देहरादून में मीडिया क्रिएटरो के सम्मान के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में देहरादून पहुंचे कई मीडिया क्रिएटर जो उत्तराखंड के साथ साथ अपनी कला और हुनर से कई लोगो के आइडियल बन गए है।इन सभी क्रिएटर के बीच पहुंचे और उन्हें सम्मान देने रामनगर के लिटिल चौम्प बॉलीवुड चाइल्ड एक्टर सोमांश सिंह डंगवाल पहुंचे। इस कार्यक्रम मे लगभग 300 से अधिक बड़े व छोटे क्रिएटर पहुंचे, जिसमे से लगभग 25 से 30 मीडिया क्रिएटरो को सम्मानित किया गया।ये सभी क्रिएटर अपनी कला और प्रतिभा से पुरे उत्तराखंड की संस्कृति और यहाँ की सभ्यता को देश व विदेशो मे पहुंचा रहे है।कार्यक्रम मॉल ऑफ देहरादून की टीम द्वारा करवाया गया,जिसमे सोमांश को किड्स एम्बेसडर बनाया गया और उनके द्वारा छोटे किड्स को सम्मानित किया गया। सोमांश इस मौके पर खासा उत्साहित नजर आए।उन्होंने अपनी बात रखते हुए सभी क्रेटर्स को कहा की हम सभी उत्तराखंड मे जन्मे है और यह हमारे लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर उत्तराखंड को विश्व पटल पर लेकर जायेंगे। हम सभी एक दूसरे का हाथ थामे रखे और ये काम किसी अकेले का नहीं है कार्यक्रम मे उनके माता पिता भी उनके साथ रहे और इस कार्यक्रम से बेटे को लगातार मिल रहीं उपलब्धियों से खासा प्रसन्न नजर आए।कार्यक्रम के बाद सोमांश अपनी माता के साथ वापस मुंबई लौट गये।

बाजपुर गैस गोदाम में हंगामा

शाह टाइम्स संवाददाता

उपभोक्ताओं और पुलिस के बीच तीखी झड़प

बाजपुर। बाजपुर मंडी स्थित गैस गोदाम में मंगलवार को उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब गैस सिलेंडरों की होम डिलीवरी को लेकर उपभोक्ताओं ने जमकर हंगामा कर दिया।

जानकारी के अनुसार, गैस ले जाने वाली पिकअप की एक उपभोक्ता द्वारा चाबी निकाल लेने के बाद विवाद बढ़ गया और स्थिति तनावपूर्ण हो गई। बताया जा रहा है कि ई-रिक्शाओं पर गैस सिलेंडर लोडिंग को लेकर उपभोक्ता नाराज थे। उनका आरोप था कि होम डिलीवरी के नाम पर मनमानी की जा रही है, जिससे आम लोगों को समय पर सिलेंडर नहीं मिल पा रहे हैं। इसी बात को लेकर बड़ी संख्या में उपभोक्ता गोदाम परिसर में एकत्र हो गए और विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। हंगामे की सूचना मिलते ही तहसीलदार प्रताप सिंह चौहान पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे।

स्थिति को नियंत्रण में करने के दौरान कुछ उपभोक्ताओं और पुलिस के बीच तीखी झड़प भी हुई। पुलिस ने समझाइश देकर हालात को काबू में किया।प्रशासन की ओर से बताया गया कि होम डिलीवरी व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए बेरिया दौलत क्षेत्र में कैश भेजा जा रहा है, ताकि वितरण प्रक्रिया में किसी प्रकार की बाधा न आए। अधिकारियों ने उपभोक्ताओं से शांति बनाए रखने और सहयोग करने की अपील की है।

गैस सिलेंडरों को लेकर लोग लग रही है लंबी लाइनें

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। रामनगर के ग्राम पीरूमदारा में गैस सिलेंडरों को लेकर लोग मंगलवार सुबह छह बजे से ही लाइनों में लग गए। करीब नौ बजे गाड़ी आते ही लोगों ने सिलेंडर के लिए हंगामा कर दिया। मंगलवार को पीरूमदारा में दर्जनों महिलाएं व पुरुष सुबह से ही गैस सिलेंडरों के लिए लाइन में लगे रहे। बताया कि कई दिनों से बुकिंग के बाद भी गैस नहीं मिल पा रही है। इससे लोगों ने हंगामा किया। बताया कि सिलेंडर घरों में नहीं पहुंचाए जा रहे हैं। एजेंसी में आने के बाद भी सही जानकारी नहीं मिलने से लोगों की भीड़ लग रही है। इंडेन गैस एजेंसी के प्रबंधक दीपक कुमार आर्य ने बताया कि रोस्टर के अनुसार ही गैस सिलेंडरों को उपलब्ध कराया जा रहा है। मोहल्ले और ग्रामीण क्षेत्रों में घर घर पहुंचाया जा रहा है।

समय प्रबंधन व्यक्तित्व विकास के लिए महत्त्वपूर्णः देवकीनन्दन

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। समय प्रबंधन व्यक्तित्व विकास के लिए अति महत्वपूर्ण है यह बात बतौर मुख्य वक्ता भूगोल के असिस्टेंट प्रोफेसर एवं एनसीसी अधिकारी डॉ.देवकीनन्दन जोशी ने राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के बौद्धिक सत्र में कही। उन्होंने शिविरार्थियों को राष्ट्रीय सेवा योजना की मूल भावना से अवगत कराया और समाज सेवा, परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन व समय प्रबंधन की महत्ता बताई। इसके पूर्व कार्यक्रम अधिकारी डॉ.सुमन कुमार व डॉ. ममता भदोला जोशी के निर्देशन में योग एवं लक्ष्य गीत द्वारा दूसरे दिन की शुरुआत हुई। परिसर की सफाई के पश्चात स्वयंसेवियों ने सरदार भगत सिंह को शहीद दिवस पर स्मरण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।सभी स्वयंसेवकों ने भगत सिंह के जीवन के बारे में अपने-अपने विचार प्रकट किए। मंच का सफल संचालन स्वयंसेवी वैशाली ने किया।स्वयंसेवकों ने रैली निकालकर स्थानीय ग्रामीणों को प्लास्टिक उन्मूलन , जल संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के संबंध में विस्तार से जानकारी दी।ग्राम भ्रमण में स्वयंसेवियों ने ग्रामीणों से साक्षात्कार कर उनकी समस्याओं को जाना स किशनपुर छोई के ग्राम प्रधान एवं अन्य ग्रामीणों ने राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेविको के इस अभियान की सराहना की। इस दौरान स्वयंसेवियों ने छोई के परंपरागत लघु उद्योग के अंतर्गत घराट पनचक्की में उद्योग कौशल विधि के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। छोटी नहर गूल क्षेत्र में स्वच्छता अभियान भी चलाया। यहां प्रोफेसर जगमोहन सिंह नेगी, डॉ.मुरलीधर कापड़ी, वैशाली,नेहा, निकिता, दीपक कुमार, प्रशांत, करने जोशी आदि थे।

सम्बंध विच्छेद

मैंने अपने बड़े पुत्र मुमताज एवं उसकी पत्नी आयशा के दुर्व्यवहारों से तंग आकर इनसे अपने तथा अपने अन्य परिजनों के सभी सम्बंध विच्छेद कर बड़े पुत्र मुमताज एवं उसकी पत्नी आयशा को अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। अब मेरा या मेरे किसी भी परिजन का मेरे पुत्र मुमताज एवं उसकी पत्नी आयशा से कोई सम्बंध या वास्ता सरोकार नहीं है। जो भी व्यक्ति मेरे पुत्र मुमताज एवं उसकी पत्नी आयशा से किसी भी प्रकार का कोई सम्बंध या वास्ता-सरोकार अथवा लेनदेन के व्यवहार रखेगा तो उसके लिए वह व्यक्ति स्वयं जिम्मेदार होगा।

मो. सलीम पुत्र श्री कल्लन
निवासी- ग्राम गणेशपुर, पो. केलाखेड़ा, तह. बाजपुर जिला-ऊधमसिंह नगर

गैस सिलेंडर न मिलने पर उपभोक्ताओं ने की सड़क जाम

पुलिस ने फटकारी लाठियां, पूर्व विधायक ठुकराल भी मौके पर पहुंचे

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। गैस सिलेंडर न मिलने से रोषित लोगों ने बिलासपुर मार्ग पर भारत गैस एजेन्सी के आगे राष्ट्रीय राजमार्ग पर जाम लगा दिया। जानकारी मिलने पर पुलिसकर्मियों ने आकर लाठियां फटकार जाम खुलवाया। जानकारी मिलने पर पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल ने एजेन्सी प्रबंधन से बातों की और फिर कलक्ट्रेट जाकर अपर जिलाधिकारी पंकज उपाध्याय और प्रभारी डीएसओ मलकीत सिंह से बातों कर उन्हें अपने साथ एजेन्सी लेकर आए, जहां उनके समझाने पर लोगों का गुस्सा शांत हुआ। इसके बाद श्री ठुकराल के साथ अपर जिलाधिकारी व प्रभारी डीएसओ इण्डेन गैस एजेन्सी पहुंचे जहां भारी अव्यवस्था को देख दोनों अधिकारियों ने एजेन्सी प्रबंधक को खूब लताड़ लगाकर व्यवस्थाओं में तत्काल सुधार करने के निर्देश दिए।

गौरतलब हो कि शासन प्रशासन के तमाम दावों के बावजूद गैस उपभोक्ताओं की सिलेंडर मिलने की समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा है। शहर में हालात यहां तक पहुंच गए हैं कि रोजाना सैकड़ों गैस उपभोक्ता हाथों में सिलेंडर लिए एजेन्सियों में लंबी लाइन में लग जा रहे हैं। आज मंगलवार प्रातः गैस सिलेंडर न मिलने से उपभोक्ताओं का सब्र टूट गया और उन्होंने रामपुर रोड पर स्थित भारत गैस एजेन्सी के समक्ष राष्ट्रीय

राजमार्ग पर जाम लगा दिया। मामले की सूचना मिलने पर पुलिस कर्मी वहां पर आ पहुंचे और उन्होंने जमीन पर लाठियां फटकार कर लोगों को वहां से दूर खदेड़कर जाम खुलवाया। इसी दौरान जानकारी मिलने पर पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल भी मौके पर आ गए और उन्होंने रोषित लोगों से बातचीत कर एजेन्सी प्रबंधन से बातों की। जिन्होंने बताया कि जिलाधिकारी द्वारा आदेश जारी किया गया है कि 23 मार्च से एजेन्सी पर सिलेंडर नहीं बांटकर उपभोक्ताओं के घर ही आपूर्ति की जाएगी। श्री ठुकराल ने कहा कि इसकी जानकारी उपभोक्ताओं को समय से दी जानी चाहिए थी। आज जो उपभोक्ता लाइन पर लगे हैं उन्हें सिलेंडर उपलब्ध करा दिए जाएं। कल से जिलाधिकारी का आदेश लागू कर दिया जाए। इसके बाद श्री ठुकराल कलक्ट्रेट पहुंचे जहां उन्होंने अपर जिलाधिकारी पंकज उपाध्याय व प्रभारी डीएसओ मलकीत सिंह से इस सन्दर्भ में विस्तार से बातों कर जन हित में एजेंसी प्रबंधन को आदेशित करने का आग्रह किया। काफी देर चली बातों के बाद श्री ठुकराल के साथ उक्त दोनों ही अधिकारी भारत गैस एजेंसी पहुंचे जहां उन्होंने उपभोक्ताओं को समझाकर शांत किया और एजेंसी प्रबंधन को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इसके बाद अपर जिलाधिकारी पंकज उपाध्याय व प्रभारी डीएसओ मलकीत सिंह काशीपुर बाईपास रोड पर इण्डेन गैस एजेन्सी पहुंचे जहां लोगों की भारी भीड़ के बीच अव्यवस्थाओं को देख दोनों अधिकारियों का पारा चढ़ गया और उन्होंने एजेन्सी प्रबंधक प्रमोद पाण्डे को जमकर लताड़ते हुए व्यवस्थाओं को तत्काल दुरूस्त करने के निर्देश दिए। अपर जिलाधिकारी ने बताया कि भारत गैस एजेन्सी में वर्तमान में लगभग 1000 घरेलू गैस सिलेंडर उपलब्ध हैं, जिन उपभोक्ताओं ने 23 मार्च तक बुकिंग कराई है उन्हें आज शाम तक सिलेंडर आपूर्ति करने के प्रयास किए जाएंगे और इण्डेन गैस एजेन्सी में लगभग 510 सिलेंडर मौजूद हैं यहां 17, 18 व 19 मार्च तक की बुकिंग वाले सिलेंडरों की आपूर्ति कर दी जाएगी। एजेन्सी में किसी को भी सिलेंडर नहीं दिया जाएगा। इधर गैस उपभोक्ताओं ने पूर्व विधायक राजकुमार के इस कार्य को मुक्त कंठ से सराहना करते हुए कहा कि शहर में गैस सिलेंडर की भारी किल्लत होने के बावजूद भी कोई भी जनप्रतिनिधि समस्या के समाधान करने को आगे नहीं आया। सभी एक स्वर में गैस सिलेंडर की कोई कमी नहीं होने का रोना अलापते रहे। जबकि श्री ठुकराल ने जमीनी हकीकत को समझते हुए लोगों के बीच आकर समस्या का समाधान करने का प्रयास किया।

बीएलओ और सुपरवाइजरों को दिया प्रशिक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

लोहाघाट। लोकतंत्र की नींव मानी जाने वाली मतदाता सूची की शुचिता और सटीकता सुनिश्चित करने के लिए जिले में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) कार्यक्रम को नई गति मिल गई है। जिलाधिकारी मनीष कुमार को स्पष्ट निर्देशों के तहत आयोजित प्रशिक्षण में बीएलओ एवं सुपरवाइजरों को अद्यतन तकनीकी एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण का मुख्य फोकस बीएलओ ऐप के माध्यम से पुनरीक्षण कार्य को अधिक पारदर्शी, त्वरित और त्रुटिरहित बनाना रहा। नोडल अधिकारी नारायण सिंह ने एसआईआर की पूरी कार्ययोजना पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए बताया कि यह पुनरीक्षण अभियान जिले की मतदाता सूची को सर्वाधिक सटीक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सहायक नोडल अधिकारी प्रकाश चन्द्र उपाध्याय ने बीएलओ को ऐप के सभी फीचर्स, डेटा अपलोडिंग, आदि की बारीकियों से अवगत कराया।

एक नजर

एनएचपीसी गेट पर 'बनबसा' नाम जोड़ने की उठी मांग, डीएम से लगाई गुहार

शाह टाइम्स संवाददाता

टनकपुर/बनबसा। टनकपुर पावर स्टेशन के मुख्य द्वार पर लगे बोर्ड को लेकर अब स्थानीय लोगों ने अपनी आवाज बुलंद की है। बनबसा निवासी सावन चंद रजवार ने जिलाधिकारी मनीष कुमार को पत्र भेजकर मांग की है कि एनएचपीसी के मुख्य गेट पर 'बनबसा' का नाम भी पुनः अंकित किया जाए।

उन्होंने बताया कि पूर्व में मुख्य द्वार पर "टनकपुर पावर स्टेशन, बनबसा" लिखा जाता था, जिससे क्षेत्र की पहचान स्पष्ट होती थी। लेकिन वर्तमान में 'बनबसा' शब्द हटा दिया गया है, जिससे स्थानीय लोगों में निराशा है। उनका कहना है कि एनएचपीसी परियोजना बनबसा क्षेत्र की प्रमुख पहचान है, इसलिए गेट पर बनबसा का नाम होना आवश्यक है। सावन चंद रजवार ने जिलाधिकारी से मांग की है कि इस विषय में संबंधित विभाग को निर्देशित कर मुख्य द्वार पर 'बनबसा' का नाम पुनः अंकित कराया जाए, ताकि क्षेत्र की पहचान और सम्मान बना रहे। स्थानीय लोगों ने भी इस मांग का समर्थन करते हुए प्रशासन से शीघ्र सकारात्मक कार्रवाई की अपेक्षा जताई है।

दो मंजिल से कूद गया युवक, मौत

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। सोमवार की सायं मोहल्ला जगतपुरा ट्रांजिट कैम्प में अज्ञात कारणों के चलते एक किराएदार युवक ने घर के दो मंजिल से छलांग लगा दी। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजन उसे उपचार के लिए जिला चिकित्सालय ले गए। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना से परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना मिलने पर पुलिस ने चिकित्सालय पहुंचकर परिजनों से आवश्यक जानकारी ली और शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाऊस भिजवाया। जानकारी के अनुसार मोहल्ला जगतपुरा निवासी 25 वर्षीय अनिल पुत्र प्रेमचंद्र अपने बड़े भाई दीपक व भाभी पूजा मूल निवासी ग्राम काफिल किरोल, मुक्तेश्वर, जिला- नैनीताल हाल निवासी रविदास मंदिर के पास जगतपुरा के साथ किराएदार के रूप में रहता था और पिछले कुछ समय से बीमार चल रहा था। दीपक ने बताया कि अनिल मेंटली डिस्टर्ब है, जिसकी दवाई भी चल रही थी। छोटा भाई अनिल सायं काल मकान के प्रथम मंजिल की छत से नीचे कूद गया। जिसे टैम्पो में जिला- चिकित्सालय लाए। जिसे डॉक्टर द्वारा जांच के बाद मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाऊस भिजवाया।

बलिदान दिवस पर बी ह्यूमन फाउंडेशन क्लब ने लगाया रक्तदान शिविर

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के बलिदान दिवस के अवसर पर बी ह्यूमन फाउंडेशन क्लब द्वारा अपनी गौरवशाली परंपरा को जारी रखते हुए 12वें विशाल रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। गुलरभोज रोड स्थित पंच मंदिर परिसर में आयोजित यह शिविर रुद्रपुर चैरिटेबल ट्रस्ट के विशेष सहयोग से संपन्न हुआ। शिविर में नगर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों सहित भारी संख्या में युवाओं और गणमान्य नागरिकों ने बढ़-चढ़कर रक्तदान किया।

इस पुनीत कार्य में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे पूर्व विधायक राज. कुमार ठुकराल ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि शहीद दिवस पर वीर बलिदानियों को नमन करने का इससे बेहतर तरीका नहीं हो सकता कि हम किसी का जीवन बचाने के लिए रक्तदान करें। क्लब के अध्यक्ष गौरव अरोड़ा और सचिन तनेजा ने बताया कि संस्था द्वारा प्रतिवर्ष शहीद दिवस पर इस शिविर का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष शिविर का 12वां संस्करण था, जिसका मुख्य उद्देश्य थैलेसीमिया से ग्रसित मरीजों की सहायता करना है, जिन्हें नियमित अंतराल पर रक्त की आवश्यकता होती है। इस अवसर पर व्यापार मंडल के अध्यक्ष संजय जुनेजा, रविंद्र शर्मा, अमित अदलखा, सनी अदलखा, लकी चिलाना, अनमोल विर्क, अमित अरोड़ा, राजू चौधरी और नरेंद्र बंसल सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता और शहर के संभ्रांत व्यक्ति उपस्थित रहे।

श्रद्धेय राजा जगदेव स्मृति कोष स्थापना की मांग ज्ञापन सौंपा

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। क्षेत्र के बुक्सा थारू जनजाति समाज के कल्याण हेतु क्षेत्रवासियों द्वारा उत्तराखंड सरकार को ज्ञापन सौंपा।

राष्ट्रीय युवा पुरस्कार विजेता भूमि बचाओ मुहिम के संयोजक जगतार सिंह बाजवा के नेतृत्व में दिये गए ज्ञापन में जनजातियों के विकास के लिए जनजातियों के आरक्षित राजा जगत देव जी की स्मृति में 10 करोड़ रुपये का "स्मृति कोष" स्थापित किया जाए। बाजवा ने कहा कि बुक्सा समाज आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है, जिसके कारण युवाओं को उच्च शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए कोचिंग लेने में आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही कई परिवार गंभीर बीमारियों के इलाज का खर्च उठाने में असमर्थ हैं। स्मृति कोष के माध्यम से जनजाति के होनहार युवक-युवतियों को उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए आर्थिक सहायता तथा निर्धन परिवारों को इलाज हेतु सहयोग होगा। ज्ञापन में कहा गया कि इस पहल से जनजाति समाज का शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर मजबूत होगा तथा आने वाली पीढ़ियों का भविष्य उज्ज्वल बनेगा।

स्वास्थ्य शिविरों में 1,100 से अधिक ग्रामीण हुए लाभान्वित

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। हिंदुस्तान जिंक द्वारा सीएसआर के तहत स्वास्थ्य सेवा पहल के अंतर्गत ममता एचआइएमसी के संयुक्त प्रयास से राजस्थान और उत्तराखंड में संचालित इकाइयों के आसपास के क्षेत्र आगुचा, चंदेरिया, जावर, दरिबा और पंतनगर में स्वास्थ्य शिविरों का सफल आयोजन किया गया। इन शिविरों के माध्यम से कुल 1,101 लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गईं, जिनमें 561 महिलाएं और 540 पुरुष शामिल थे।

लाभार्थियों की सुविधा और अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए डोर-टू-डोर परिवहन सुविधा भी उपलब्ध कराई गई, ताकि दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोग भी स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ ले सकें। इन शिविरों में गायनेकोलॉजिस्ट, ऑर्थोपेडिक विशेषज्ञ और जनरल फिजीशियन की अनुभवी टीम द्वारा लाभार्थियों को व्यक्तिगत एवं समग्र परामर्श प्रदान किया। साथ ही, हीमोग्लोबिन जांच, रक्तचाप की जांच और रैंडम ब्लड शुगर स्क्रीनिंग जैसी आवश्यक जांच सेवाएं भी उपलब्ध कराई गईं। जरूरतमंदों को निःशुल्क दवाइयों का वितरण किया गया। यह पहल ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के लिए एक सशक्त मॉडल के रूप में उभरी है। इस पहल से स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में आने वाली कमियों को दूर कर जरूरतमंद लोगों को समय पर उपचार उपलब्ध कराने में सहयोग मिला। हिन्दुस्तान जिंक की सीएसआर पहल के अंतर्गत स्वास्थ्य परियोजना से प्रतिवर्ष दो लाख से अधिक ग्रामीण लाभान्वित हो रहे हैं।

टीबी मुक्त चम्पावत का संकल्प, डीएम बने 'निक्षय मित्र' जनभागीदारी पर जोर

विश्व क्षय दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम, रैली और "100 डे कैंपेन" का शुभारंभ

शाह टाइम्स संवाददाता

चम्पावत। विश्व क्षय दिवस के अवसर पर जिला क्षय रोग उन्मूलन केंद्र, छतार में "Yes We Can End TB" थीम के तहत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाधिकारी मनीष कुमार ने की, जिसमें टीबी उन्मूलन के लिए जनसहभागिता बढ़ाने पर विशेष जोर दिया गया।

कार्यक्रम के तहत नर्सिंग कॉलेज चम्पावत के छात्र-छात्राओं ने जागरूकता रैली निकालकर आमजन को टीबी के लक्षण, बचाव और उपचार की जानकारी दी। रैली के माध्यम से लोगों को भ्रांतियों से दूर रहकर समय पर जांच और इलाज कराने के लिए प्रेरित किया गया।

इस मौके पर प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत

"100 डे कैंपेन टीबी हारेगा, देश जीतेगा" का शुभारंभ किया गया। जिलाधिकारी एवं नगर पालिका अध्यक्ष द्वारा जागरूकता वाहन को हरी झंडी दिखाकर विकासखंड पाटी के लिए रवाना किया गया। कार्यक्रम में मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. देवेश चौहान ने जिलाधिकारी को "निक्षय मित्र" प्रमाण पत्र भेंट किया। इस दौरान डीएम मनीष कुमार ने स्वयं निक्षय मित्र बनते हुए जनपदवासियों से भी इस योजना से जुड़ने की अपील की। उन्होंने कहा कि सामूहिक प्रयासों से अगले वर्ष तक चम्पावत को टीबी मुक्त बनाया जा सकता है।

नगर पालिका अध्यक्ष प्रेमा पांडे ने कहा कि टीबी उन्मूलन के लिए जागरूकता के साथ-साथ नशा मुक्त समाज का निर्माण भी जरूरी है। वहीं डीएम ने अधिकारियों को रोग की समय पर पहचान, ट्रैकिंग और मरीजों को गुणवत्तापूर्ण उपचार सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। कार्यक्रम में डॉ. देवेश चौहान, रुपेश रावत, राजेंद्र गहतोड़ी, प्रेमा चिलकोटी, डॉ. सोनाली मंडल सहित नर्सिंग छात्र-छात्राएं, आशा कार्यकर्ता और अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

मनिहारगोठ मार्ग पर शाह टाइम्स की खबर का असर

डीएम के निर्देश पर तुरंत भरा गया खतरनाक गड्ढा

अंडरपास के पास धंसी पुलिया की समस्या पर प्रशासन की त्वरित कार्रवाई

जल्द होगा डामरीकरण, क्षेत्रवासियों ने जताया आभार

शाह टाइम्स संवाददाता

टनकपुर। मनिहार गोठ से रेलवे अंडरपास तक जाने वाले जर्जर मार्ग को लेकर आपके प्रिय अखबार शाह टाइम्स में प्रकाशित खबर का असर अब साफ तौर पर देखने को मिला है। जिलाधिकारी के निर्देश के बाद संबंधित विभाग हरकत में आया और अंडरपास के पास धंसी पुलिया के कारण बने खतरनाक गड्ढे को तत्काल प्रभाव से भर दिया गया है।

गौरतलब है कि इस मार्ग की बदहाल स्थिति और अंडरपास के समीप सड़क धंसने के कारण यहां हर समय दुर्घटना का खतरा बना हुआ था। स्थानीय लोगों और राहगीरों द्वारा लगातार इस समस्या को उठाया जा रहा था, जिसके बाद प्रशासन ने इसे गंभीरता से लेते हुए त्वरित कार्रवाई की। लोक निर्माण विभाग के सहायक अभियंता लक्ष्मण सिंह सामंत ने जानकारी देते हुए बताया कि मौके पर आईबीएम (इंटरलॉकिंग बेस मैटेरियल) डाला गया है, जिससे गड्ढे को फिलहाल सुरक्षित रूप से भर दिया गया है। उन्होंने बताया कि एक-दो दिन में सामग्री के अच्छी तरह बैठ जाने के बाद इस स्थान पर डामरीकरण (रोड निर्माण) का कार्य भी कर दिया जाएगा, जिससे सड़क पूरी तरह सुरक्षित और सुगम हो सकेगी। इस त्वरित कार्रवाई से अब उस स्थान पर दुर्घटना होने का खतरा काफी हद तक टल गया है, जिससे स्थानीय लोगों ने राहत की सांस ली है।

क्षेत्रवासियों ने जिलाधिकारी और संबंधित विभाग का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि समय पर उठाया गया यह कदम निश्चित रूप से जनहित में सराहनीय है।

स्थानीय लोगों ने उम्मीद जताई है कि आगे भी प्रशासन इसी तरह जनसमस्याओं को प्राथमिकता देते हुए त्वरित समाधान करता रहेगा, जिससे क्षेत्र में सुरक्षित और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हो।

डीएम ने एग्री स्टेट योजना की समीक्षा में दिखाई सख्ती

लंबित कार्य शीघ्र पूर्ण करने के दिए निर्देश

शाह टाइम्स संवाददाता

पिथौरागढ़। जिलाधिकारी आशीष कुमार भटगाई की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट कक्ष में एग्री स्टेट योजना के अंतर्गत अंश निर्धारण, डिजिटल क्रॉप सर्वे तथा फार्मर रजिस्ट्री की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में अंश निर्धारण की प्रगति की समीक्षा के दौरान पाया गया कि पिथौरागढ़ तहसील में 1401, गंगोलीहाट में 52 तथा तेजम में 923 किसानों का अंश निर्धारण कार्य लंबित है। इस पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि लंबित कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर तत्काल पूर्ण किया जाए।

डिजिटल क्रॉप सर्वे की समीक्षा में यह तथ्य सामने आया कि गत तीन दिनों से जनपद में कोई प्रगति नहीं हुई है। इस पर तहसीलदार पिथौरागढ़ विजय गोस्वामी द्वारा अवगत कराया गया कि कार्मिकों के हड़ताल पर होने के कारण कार्य प्रभावित है। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि संबंधित कार्मिक संगठनों से तत्काल वार्ता कर स्थिति का समाधान किया जाए तथा डिजिटल क्रॉप सर्वे कार्य शीघ्र प्रारंभ कराया जाए। फार्मर रजिस्ट्री की समीक्षा के दौरान पाया गया कि जनपद में पिछले एक सप्ताह में लगभग 1900 किसानों का ही पंजीकरण किया गया है, जबकि अन्य जनपदों, विशेषकर उत्तरकाशी में यह कार्य तेजी से संचालित हो रहा है। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि फार्मर रजिस्ट्री के कार्य में तेजी लाई जाए, ताकि अधिक से अधिक किसान योजना का लाभ प्राप्त कर सकें। उन्होंने तहसील स्तर पर नियमित बैठकें आयोजित कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने को भी कहा। बैठक में मुख्य कृषि अधिकारी अमरेन्द्र चौधरी, मुख्य उद्यान अधिकारी अभिनव कुमार सहित समस्त उपजिलाधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े रहे।

ऑपरेशन स्माइल 2026: गुमशुदा अनिल चंद्र की तलाश तेज

भारत-नेपाल सीमा पर बढ़ाई गई सक्रियता

शाह टाइम्स संवाददाता

बनबसा। जनपद चंपावत पुलिस अधीक्षक रेखा यादव के आदेशों के अनुपालन में चलाए जा रहे ऑपरेशन स्माइल 2026 के तहत गुमशुदा व्यक्तियों की तलाश में पुलिस ने तेजी ला दी है। इसी क्रम में थाना बनबसा में दर्ज धारा-संख्या 47/2024, धारा 365 भादवि के तहत गुमशुदा अनिल चंद्र पुत्र हरिश चंद्र, निवासी ग्राम चंदनी, की खोजबीन को लेकर विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

क्षेत्राधिकारी वंदना वर्मा टनकपुर के पर्यवेक्षण में पुलिस टीम द्वारा न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय सीमा तक समन्वय स्थापित कर तलाश अभियान को विस्तार दिया गया है। इस दौरान एएसआई राम सिंह, ने प्रभारी थाना गड्डा चौकी (जनपद कंचनपुर, नेपाल) से संपर्क साधते हुए सूचनाओं का आदान-प्रदान किया गया। साथ ही नेपाल स्थित सामाजिक संस्थाओं जैसे आफन्त (किम) NGO और शान्ति पुनर्थापना गृह (PRC) के सहयोग से गुमशुदा के फोटो पंपलेट वितरित किए गए। पुलिस द्वारा सीमा क्षेत्र में संभावित स्थानों पर प्रचार-प्रसार करते हुए आमजन से भी सहयोग की अपील की गई है। अधिकारियों का कहना है कि इस संयुक्त प्रयास से गुमशुदा व्यक्ति की शीघ्र बरामदगी की उम्मीद है।

इस अभियान में (एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट) की टीम भी पूरी मुस्तैदी से लगी हुई है। टीम द्वारा संवेदनशील इलाकों में विशेष निगरानी रखते हुए हर संभावित इनपुट पर कार्यवाही की जा रही है। पुलिस ने आम नागरिकों से अपील की है कि यदि किसी को अनिल चंद्र के संबंध में कोई भी जानकारी प्राप्त होती है, तो तत्काल नजदीकी पुलिस थाने या संबंधित अधिकारियों को सूचित करें, जिससे गुमशुदा को सकुशल बरामद किया जा सके।

कोर्ट के आदेश पर गदरपुर पूर्व में हुई मारपीट कांड में मुकदमा दर्ज

राजनीतिक दबाव में दबा मामला, अदालत के हस्तक्षेप के बाद दर्ज हुआ जानलेवा हमले का केस

शाह टाइम्स संवाददाता

गदरपुर। क्षेत्र में मारपीट और जानलेवा हमले के एक मामले में अदालत के आदेश पर आखिरकार मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। यह मामला काफी समय से लंबित था और पीड़ित पक्ष द्वारा लगातार शिकायत किए जाने के बावजूद पुलिस कार्रवाई नहीं होने का आरोप लगाया गया था।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, वादी गीता पपोला ने न्यायालय में प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया था कि उनके भाई के साथ कुछ लोगों ने न केवल मारपीट की बल्कि जान से मारने की नीयत से हमला भी किया। शिकायत में बताया गया कि घटना 26 जुलाई 2025 की शाम की है, जब वादी का भाई गदरपुर क्षेत्र में एक मंदिर के पास गया हुआ था। उसी दौरान आरोपित पक्ष के लोग वहां मौजूद थे और शराब के नशे में गाली-गलौज करते हुए अचानक उस पर हमला कर दिया। बताया गया कि आरोपियों ने लाठी-डंडों और अन्य हथियारों से हमला किया, जिससे पीड़ित गंभीर रूप से घायल हो गया। बीच-बचाव करने पहुंचे परिजनों के साथ भी मारपीट की गई। वादी ने यह भी आरोप लगाया कि घटना के बाद राजनीतिक दबाव के चलते स्थानीय पुलिस ने मामला दर्ज नहीं किया, जबकि शिकायत तत्काल थाना स्तर पर दी गई थी।

प्रार्थना पत्र में यह भी उल्लेख किया गया कि आरोपित पक्ष पहले भी इस तरह की घटनाओं में शामिल रहा है और क्षेत्र में दबंगई करता है। पीड़ित परिवार ने अपनी जान को खतरा बताते हुए न्यायालय से हस्तक्षेप की मांग की थी। मामले की गंभीरता को देखते हुए न्यायालय ने पुलिस को निर्देश दिए कि शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर उचित कानूनी कार्रवाई की जाए। कोर्ट के आदेश के बाद अब गदरपुर थाने में राजेश गुंबर, अजय गुंबर सहित सात लोगों पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 115 (2), 191 (2), 351 (2), 352 के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामले की जांच शुरू कर दी गई है और सभी आरोपों की निष्पक्ष जांच की जाएगी। साथ ही, घटना में शामिल आरोपियों की पहचान कर जल्द वैधानिक कार्यवाही की जाएगी।

बाजपुर में शुगर फैक्ट्री पर बवाल, बुलडोजर कार्रवाई का मजदूरों ने किया जोरदार विरोध, प्रशासन बैक फुट पर

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। शुगर फैक्ट्री प्रशासन द्वारा मजदूरों के आवास खाली कराने की कार्रवाई मंगलवार को बड़े विवाद का रूप ले गई। तहसीलदार प्रताप सिंह चौहान पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे, जहां उन्हें पहले से ही विरोध का सामना करना पड़ा।

हालात उस समय और बिगड़ गए जब मिल प्रशासन बुलडोजर लेकर मजदूरों के आवासों तक पहुंच गया। जैसे ही प्रशासन ने आवास खाली कराने की कार्रवाई शुरू की, मजदूरों और उनके परिवारों में भारी आक्रोश फैल गया।

महिलाएं, बच्चे और पुरुष बड़ी संख्या में घरों से बाहर निकल आए और बुलडोजर कार्रवाई का घेराव कर विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। विरोध को उस समय और बल मिला जब जिला पंचायत सदस्य सोनू शर्मा और दलित नेता राजकुमार के नेतृत्व में सैकड़ों मजदूर एकत्र हो गए। प्रदर्शनकारियों ने प्रशासन और मिल प्रबंधन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और किसी भी हालत में अपने आवास खाली न करने की चेतावनी दी। गौरतलब है कि एक दिन पहले भी इसी मुद्दे पर विरोध प्रदर्शन हुआ था, जिसके चलते प्रशासन को पीछे हटना पड़ा था। मंगलवार को दोबारा कार्रवाई करने पहुंची टीम को भी कड़े विरोध का सामना करना पड़ा, जिससे स्थिति तनावपूर्ण बनी रही। फिलहाल प्रशासन हालात पर कड़ी नजर बनाए हुए है और स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। वहीं, मजदूरों ने साफ कर दिया है कि जब तक उनके पुनर्वास की व्यवस्था नहीं होती, वे अपने आवास खाली नहीं करेंगे।

ट्रक की चपेट में आने से नौ वर्षीय बच्ची की मौत, बड़ी बहन गंभीर

शाह टाइम्स संवाददाता

गदरपुर। नेशनल हाईवे पर मंगलवार दोपहर एक दर्दनाक सड़क हादसे में 9 वर्षीय बच्ची रितिका की मौत हो गई, जबकि उसकी 12 वर्षीय बड़ी बहन आस्था गंभीर रूप से घायल हो गई।

दोनों बहनों को उनका मामा अजीत कुमार, निवासी पीलीभीत, स्कूल की छुट्टी होने पर कुंडेश्वरी से बाइक पर अपने घर ले जा रहा था। जैसे ही वे गदरपुर के पास हाईवे पर पहुंचे, तभी एक तेज रफ्तार ट्रक की झपट ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे की सूचना किसी राहगीर ने तुरंत डायल 112 पर दी। सूचना मिलते ही पुलिस कर्मी मौके पर पहुंचे और स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को अस्पताल भिजवाया।

अस्पताल में डॉक्टरों ने 9 वर्षीय रितिका को मृत घोषित कर दिया, जबकि गंभीर रूप से घायल आस्था की नाजुक हालत को देखते हुए उसे प्राथमिक उपचार के बाद रुद्रपुर रेफर कर दिया गया। हादसे में बच्चियों के मामा अजीत कुमार को भी चोटें आई हैं।

घटना की खबर मिलते ही आस्था और रितिका के माता-पिता मौके पर पहुंचे, जहां चीखचिल्लपुकार मच गई। पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई करते हुए मृतका के शव को पोस्टमार्टम के लिए रुद्रपुर पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया है। ट्रक चालक की तलाश में पुलिस जुट गई है।

आठ सप्ताह में फैसला लें उच्च शिक्षा सचिव

महिलाओं के लिए खोले जाने वाले कालेजों की भूमि पर मिलने वाली पचास प्रतिशत छूट मामले पर हाई कोर्ट में सुनवाई

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने प्रदेश में महिलाओं के लिए खोले जाने वाले कालेजों की भूमि पर मिलने वाली पचास प्रतिशत छूट दिए जाने को लेकर दायर जनहित याचिका पर सुनवाई की। मामले की सुनवाई के मुख्य न्यायधीश मनोज कुमार गुप्ता और न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खंडपीठ ने सचिव उच्च शिक्षा को निर्देश दिए कि निदेशक उच्च शिक्षा ने इस संबंध जो पत्र पहले दिए गए थे उस पर 8 सप्ताह के भीतर निर्णय लें। बता दें मंगलवार को हुई सुनवाई पर याचिकाकर्ता ने कोर्ट को अवगत कराया कि पूर्व में निदेशक उच्च शिक्षा ने सचिव उच्च शिक्षा को दो बार पत्र भेजकर कहा था कि महिला कॉलेज खोलने के जो भूमि पर पचास प्रतिशत की छूट मिलती थी वह नहीं मिल रही है जिसकी वजह से कालेज खोलने में दिक्कत आ रही हैं जबकि ये नियमावली उत्तर प्रदेश सरकार से अधिकृत की गई थी जिसमे कई संसोधन हो चुके हैं लेकिन अभी तक मिलने वाली छूट पर कोई विचार नहीं किया गया। उत्तर

प्रदेश में यह नियम अभी भी लागू है वहीं सरकार की तरफ से कहा गया कि यह यह मामला सरकार के पास विचाराधीन है। सरकार इस पर निर्णय ले रही है। दोनों पक्षों को सुनने के बाद कोर्ट ने जनहित याचिका को निस्तारित करते हुए सचिव उच्च शिक्षा को निर्देश दिये हैं कि निदेशक उच्च शिक्षा के पत्र पर 8 सप्ताह के भीतर निर्णय लें। मामले के अनुसार देहरादून निवासी सुरवीर सिंह ने जनहित याचिका दायर कर कहा है कि महिला कॉलेज खोलने के लिए कालेजों को भूमि पर मिलने वाली छूट नहीं मिल पा रही है जबकि नियमावली उत्तर प्रदेश सरकार से अधिकृत की गई। नियमावली में कई बार संसोधन हो चुके हैं लेकिन इस बिंदु पर कोई निर्णय नही लिया गया। जनहित याचिका में यह भी कहा गया कि यह छूट मिल रही है या नहीं इसे स्पष्ट किया जाए क्योंकि कालेज खोलने में यह आड़े आ रहा है। जिसकी वजह से कालेज नहीं खुल पा रहे हैं। इस संबंध में उनके द्वारा दिसंबर 2025 को आरटीआई मांगी गई थी जो अभी तक उन्हें नहीं दी गयी।

सरकार को प्रत्यावेदन दें याचिकाकर्ता

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने हल्द्वानी स्थित उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय मे करीब पंद्रह वर्षो से कार्यरत सहायक प्रध्यापक (असिस्टेंट प्रोफेसर) का विनिमतिकरण करने और उन्हें न्यूनतम वेतनमान दिए जाने को लेकर दायर कई याचिकाओं पर सुनवाई की। मामले की सुनवाई के बाद मुख्य न्यायधीश मनोज कुमार गुप्ता और न्यायमुर्ति सुभाष उपाध्याय की खंडपीठ ने उनकी याचिकाओं को निस्तारित करते हुए उनसे कहा है कि वे अपना प्रत्यावेदन सरकार को चार सप्ताह के भीतर दें तथा सरकार उस पर विधि अनुसार शीघ्र निर्णय ले। मामले के अनुसार हल्द्वानी स्थित उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में कई वर्षो से कार्यरत सहायक प्रध्यापक (असिस्टेंट प्रोफेसर) मनीशा पंत, डा. पूजा जुयाल तथा बालम सिंह दफौटी और अन्य ने उच्च न्यायालय में याचिकाएं दायर कर कहा है कि उनको यहां कार्य करते हुए करीब पंद्रह साल से अधिक हो गया हैं लेकिन उनको अभी तक न्यूनतम वेतनमान नहीं दिया जा रहा है न ही उनका वियनिमतिकरण किया जा रहा है। इस संबंध मे उनके द्वारा प्रत्यावेदन दिए गए लेकिन अभी तक उसपर कोई विचार नहीं किया गया जबकि विश्वविद्यालय के द्वारा इनको न्यूनतम वेतनमान दिए जाने और उनका वियनीमतिकरण करने के लिए संस्तुति शासन को भेज चुका है साथ मे इनके लिए पद सृजित करने को भी कहा है। याचिकाओं में कोर्ट से प्रार्थना की गयी है कि उनको न्यूनतम वेतन दिलाया जाए और उनका वियनीमतिकरण किया जाय। मामले की सुनवाई के बाद कोर्ट ने याचिकाओं को निस्तारित करते हुए याचिकाकर्ताओं से कहा है कि वे इस संबंध में चार सप्ताह के भीतर अपना प्रत्यावेदन दें। शासन उसपर शीघ्र विधि अनुसार निर्णय ले।

याचिकाकर्ताओं दस हजार रुपए का जुर्माना

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने टीएचडीसी के शेयर विवाद पर दायर जनहित याचिका पर सुनवाई के बाद याचिकाकर्ताओं पर 10 हजार रुपये का जुर्माना लगाया। मुख्य न्यायाधीश मनोज कुमार गुप्ता और न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खंडपीठ ने याचिका को पोषणीय नहीं मानते हुए निस्तारित किया और जुर्माने की राशि राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण में जमा करने का आदेश दिया। मामला टीएचडीसी के शेयरों में बदलाव को लेकर केंद्र सरकार के निर्णय पर था, जिसमें याचिकाकर्ताओं ने कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 14 के उल्लंघन का आरोप लगाया था। उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के बीच टीएचडीसी में 25 प्रतिशत हिस्सेदारी को लेकर सुप्रीम कोर्ट में मामला पहले से ही विचाराधीन है।

आदेश की प्रति विश्वविद्यालय प्रशासन को तामील कराएं

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने दून विश्वविद्यालय में कार्यरत असिस्टेंट प्रोफेसर की नियुक्ति को चुनौती देने और उसे हटाए जाने को लेकर दायर याचिका पर सुनवाई की। मामले की सुनवाई के बाद वरिस्ठ न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी और न्यायमूर्ति पंकज पुरोहित की खण्डपीठ ने मामले को निस्तारित करते हुए याचिकाकर्ता से कहा है कि कोर्ट के आदेश की प्रति विश्वविद्यालय प्रसाशन को तामील कराएं। विश्व. विद्यालय प्रशासन आदेश की प्रति प्राप्त होने के बाद याचिकाकर्ता का जो प्रत्यावेदन लंबित है उसको तीन माह के भीतर निस्तारित करें, साथ में कोर्ट ने यह भी कहा है कि कोई निर्णय लेने से पहले विपक्षी असिस्टेंट प्रोफेसर खुशबू सिंह का भी पक्ष सुना जाए। मामले के अनुसार जगतपाल सिंह ने उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर कहा है कि उनके द्वारा दून विश्वविद्यालय में भौतिक विभाग के लिए असिस्टेंट प्रोफेसर पद के लिए निकली। विज्ञप्ति में आवेदन किया गया था लेकिन उस पद के लिए उनका चयन नही हुआ। विश्वविद्यालय ने एक ऐसे व्यक्ति का चयन इस पद पर कर दिया गया जिसके शैक्षणिक प्रमाण पत्रों में कई खामियां थी। उनके द्वारा याचिका में कोर्ट से प्रार्थना की है कि विपक्षी की नियुक्ति नियमों के विरुद्ध जाकर गलत तरीके से की गई है इसलिए उनकी नियुक्ति को निरस्त किया जाए। कोर्ट ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद याचिका को निस्तारित करते हुए याचिककर्ता से कहा है कि कोर्ट के आदेश की प्रति विश्वविद्यालय प्रशासन को तामील कराएं। विश्व. विद्यालय प्रसाशन आदेश की प्रति मिलने के बाद याचिकाकर्ता का जो प्रत्यावेदन लंबित है उसे तीन माह के भीतर निस्तारित करें। कोर्ट ने आगे यह भी कहा है कि कोई निर्णय लेने से पहले विपक्षी का पक्ष को भी सुना जाए।

अतिथि शिक्षक को पुन: नियुक्ति न देने पर सख्त

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने अल्मोड़ा विश्व विद्यालय के विधि संकाय की अतिथि शिक्षक प्रियंका को विभागाध्यक्ष द्वारा पुन: नियुक्ति न देने पर सख्त रुख अपनाया है। इस मामले में विश्वविद्यालय के अधिवक्ता ने आवश्यक कार्यवाही हेतु दो दिन का समय मांगा है, जिसके बाद कोर्ट ने मामले की सुनवाई की अगली तिथि 1 अप्रैल निर्धारित की है। मामले की सुनवाई मुखय न्यायधीश मनोज कुमार गुप्ता व न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खंडपीठ में हुई। विधि संकाय की गेस्ट टीचर प्रियंका ने अपनी पुनर्नियुक्ति न होने और उनके खिलाफ की गई कार्रवाई को चुनौती दी है। इस मामले में कोर्ट ने माना कि विधि संकाय के विभागाध्यक्ष द्वारा याचिकाकर्ता के खिलाफ हुई विवादित कार्रवाई अर्थात् विधि विभाग में अतिथि संकाय के रूप में पुन: नियुक्त करने से इनकार करना न केवल भेदभावपूर्ण है बल्कि दुर्भावनापूर्ण और प्रतिशोधात्मक भी है। याचिकाकर्ता विधि संकाय के विभागाध्यक्ष के विरुद्ध आंतरिक शिकायत समिति के समक्ष गवाह थी और आईसीसी ने विभागाध्यक्ष के विरुद्ध प्रतिकूल रिपोर्ट दी है लेकिन कुलपति इस मामले पर कोई कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। न्यायालय द्वारा समय समय पर पारित कई आदेशों के बावजूद विभागाध्यक्ष ने आदेशों को दरकिनार करने के सभी प्रयास किए हैं पहले याचिकाकर्ता को कार्यभार संभालने की अनुमति नहीं दी और बाद में याचिकाकर्ता के नियमित रूप से ड्यूटी पर न आने के मनगढ़ंत बहाने से उसका वजीफा और पारिश्रमिक नहीं दिया। इस मामले में विश्वविद्यालय के अधिवक्ता ने विधि संकाय के विभागाध्यक्ष के विरुद्ध चल रही जांच की स्थिति के संबंध में निर्देश प्राप्त करने हेतु दो दिन का समय मांगा है और न्यायालय को आश्वासन दिया है कि इस न्यायालय द्वारा पहले पारित आदेशों का पूरी तरह से पालन किया जाएगा जिसके बाद कोर्ट ने अगली सुनवाई की तिथि 1 अप्रैल तय की।

प्रेमी की गिरफ्तारी पर हाई कोर्ट ने लगाई रोक

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने प्रेमी के खिलाफ दर्ज मुकदमे को निरस्त करने और गिरफ्तारी पर रोक लगाए जाने के मामले में दायर याचिका पर सुनवाई की। मामले की सुनवाई के बाद न्यायमूर्ति राकेश थपलियाल की एकलपीठ ने तब तक प्रेमी की गिरुतारी पर रोक लगाते हुए उससे जांच में सहयोग करने को कहा है। कोर्ट ने अगली सुनवाई हेतु अप्रैल की तिथि नियत की है, साथ में कोर्ट ने राज्य सरकार और लड़की के पिता से इस मामले में अपनी आपत्ति पेश करने को कहा है। मामले के अनुसार विकास उर्फ काला ने याचिका दायर कर कहा है कि वह और प्रिया एक दूसरे को पसंद करते हैं। उन्होंने आपसी सहमति से एक मार्च 2026 को हरिद्वार जिले के रोशनाबाद स्थित शिव मंदिर में विवाह कर लिया। इस विवाह से लड़की का पिता खुश नहीं है। उल्टा लड़की का पिता ने उसके खिलाफ थाना रानीपुर में मुकदमा दर्ज कर दिया है। मुकदमे में उनके द्वारा आरोप लगाया गया है कि विवाह के वक्त लड़की नबालिग थी। इनके द्वारा उसे बहला फुसला कर शादी कर ली। याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में कहा है कि विवाह के वक्त दोनों बालिग थे। लड़की की जन्म तिथि चार फरवरी 2008 और याचिकाकर्ता की जन्म तिथि 20 अक्टूबर 1995 है। जिसके प्रमाण पत्र उनके द्वारा याचिका में संलग्न किए हुए हैं। इस संबंध में लड़की की तरफ से कोर्ट शपथपत्र पेश किया गया है। जिसमें कहा गया कि वह बालिग है। दोनों ने मंदिर में विवाह कर लिया है। याचिका में कोर्ट से प्रार्थना की है कि उसके खिलाफ दर्ज मुकदमे को निरस्त किया जाए और उसकी गिरफ्तारी पर रोक लगाई जाए।

एक नजर....

श्रीमद् देवी भागवत कथा ज्ञान गंगा में अनुष्ठान

नैनीताल। जिले के भवाली नगर में चल रहे श्रीमद् देवी भागवत कथा ज्ञान गंगा में आचार्य उप व्यास कैलाश चंद्र पांडे, आचार्य कैलाश चंद्र जोशी, आचार्य नीरज पलड़िया, मोहन चन्द कपिल, दीपेश कपिल तथा यजमान ऊषा तिवारी, गिरीश तिवारी, गीता मेहरा तथा अजय सिंह मेहरा द्वारा भगवती विग्रह पूजन, गणेश पूजन, पंचांग पूर्वांगादि पूजन तथा मन्दिर परिसर में समस्त देवी-देवताओं का पूजन अर्चन किया गया। कथा से पूर्व संगीत गायकों आचार्य उमा शंकर कपिल, नीरज सती व आचार्य पंकज जोशी के द्वारा देवी भजन, गोल्ज्यू के सुन्दर भजन तथा अनेक भजनों का गायन किया गया जिसमें उपस्थित मातृशक्ति द्वारा भी उन भजनों को कर तल ध्वनि के साथ दोहराया गया। व्यास कैलाश चंद्र सुयाल द्वारा कथा का शुभारंभ भगवान शिव के विवाह के बाद उनके पुत्र प्रद्युन के जीवन की लीलाओं से आगे की अनेक कथाओं के साथ किया गया। कथा में श्री नानतिन महाराज के शिष्य शंकर महाराज ने भी देवी मंदिर भवाली में पधारकर तथा इस कथा में समिलित होकर इस कथा का आनन्द लिया उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को अपना आशीर्वाद भी प्रदान किया।

मांगों की अनदेखी से भड़के डिप्लोमा इंजीनियर

नैनीताल। उत्तराखण्ड डिप्लोमा इंजीनियर महासंघ के प्रांतीय कार्यकारिणी के आह्वान पर महासंघ ने लबित 27 सूत्रीय समस्याओं के निराकरण नहीं होने के विरोध में मंगलवार को लगातार दूसरे दिन अपनी बेमियादी हड़ताल जारी रखी। इस दौरान उन्होंने अपनी मांगों को लेकर जमकर नारेबाजी की। डिप्लोमा इंजीनियर महासंघ मंडल अध्यक्ष एसएस डंगवाल ने बताया कि कनिष्ठ अभियन्ताओं की लंबे समय से चली आ रही वेतन विसंगति को दूर करने, पदोन्नति में ठहराव के कारण समस्त अभियन्त्रण विभागों के डिप्लोमा इंजीनियर्स को पूर्ण सेवाकाल में पदोन्नति की पात्रता के अनुसार न्यूनतम तीन प्रोन्नति प्रदान की जाए, उत्तराखंड पेयजल निगम एवं जल संस्थान का एकीकरण किया जाए समेत डिप्लोमा इंजीनियर्स महासंघ की 27 सूत्रीय मांगों का निराकरण न होने को महासंघ के सदस्यों में भारी आक्रोश है। इस दौरान शाखा अध्यक दीप चंद्र चौधरी, मनमोहन बिष्ट, गोविन्द सिट, तुला राम टम्टा, राजेन्द्र गिरी, किशोर कुमार समेत कई डिप्लोमा इंजीनियर मौजूद थे।

कोमल, व सुमित की हुई पीएचडी की परीक्षा

नैनीताल। कुमाऊं विवि के डीएसबी परिसर के वानिकी विभाग में शोध छात्रा कोमल जोशी ने अपनी पीएचडी के अंतिम मौखिक परीक्षा दी। बता दें कोमल ने इनलुएंस ऑफ डिस्टर्बेंस एंड क्लाइमेट चेंज आन रिजर्नरेशन ऑफ ओक फॉरेस्ट इन सेंट्रल हिमालय विषय पर प्रो. जीत राम तथा डा. आशीष तिवारी के निर्देशन में शोध किया। प्रो. सुजीत कुमार लवानिया (एग्रीफोरेस्टेट्री विभाग पंतनगर विश्वविद्यालय) ने एकसपर्ट के रूप परीक्षा संपन्न कराई। दूसरी ओर वनस्पति विज्ञान विभाग में सुमति राठौर ने अपनी पीएचडी की अंतिम मौखिक परीक्षा दी। सुमति की परीक्षा ऑनलाइन माध्यम से संपन्न हुई तथा इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. शैलेंद्र गोयल ने एकसपर्ट के रूप में मौखिक परीक्षा संपन्न कराई। सुमति राठौर ने स्टडी ऑन इंडीजिनस नॉलेज एंड ट्रेडिशनल प्रैटिसेज ऑफ फ्लोरिस्टिक डायवर्सिटी बाई दी नेटिव कम्युनिटी इन कुल्लू डिस्ट्रिट हिमांचल प्रदेश व नॉर्थ वेस्ट हिमालय विषय पर शोध किया। विभागाध्यक्ष प्रो. ललित तिवारी ने परीक्षा संपन्न कराई।

अंतिम दिन तक 19 नामांकन फार्म बिके

नैनीताल। जिला बार एसोसिएशन नैनीताल के चुनाव में नामांकन प्रपत्रों की बिक्री के अंतिम दिन मंगलवार को विभिन्न पदों के लिए कुल 19 नामांकन फार्म खरीदे गए। एसोसिएशन के मुखय निर्वाचन अधिकारी राजेश चंदोला ने कि सोमवार तक 8 नामांकन फार्म खरीदे गए थे जबकि मंगलवार को अलग अलग पदों के लिए 11 और फार्म लिए गए। इस प्रकार कुल मिलाकर 19 नामांकन प्रपत्रों की बिक्री दर्ज की गई। कहा कि पदवार स्थिति पर नजर डालें तो अध्यक्ष पद के लिए 5, उपाध्यक्ष पद के लिए 3 जबकि सचिव पद के लिए 4, संयुक्त सचिव पद के लिए 1 और कार्यकारिणी सदस्य पद के लिए कुल 6 नामांकन फार्म खरीदे गए हैं। चंदोला ने बताया की सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाईन के मुताबिक कार्यकरणी सदस्य के तीन पद महिला अधिवक्ताओं के लिए आरक्षित रखे गए हैं। उन्होंने बताया कि नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि 27 मार्च निर्धारित की गई है इसके बाद 28 मार्च को नामांकन पत्रों की जांच और नाम वापसी की प्रक्रिया पूरी की जाएगी इसी के बाद प्रत्याशियों की अंतिम सूची सामने आएगी और चुनावी तस्वीर पूरी तरह स्पष्ट हो जाएगी।

आशीर्वाद वूमेनस कलब ने बांटे स्वेटर

नैनीताल। राजकीय प्राथमिक विद्यालय मल्लीताल में मंगलवार को नगर की प्रतिष्ठित आशीर्वाद वूमेनस क्लब की ओर से 48 बच्चों को स्वेटर वितरित किए गये तथा ही सभी बच्चों को जूस की बोतल भी वितरित की गई साथ ही लड़कियों को हाथ से बनाई गई किलिप भी दी गई। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि नगर पालिका अध्यक्ष डा. सरस्वती खेतवाल रही जबकि क्लब के सदस्यों में गीता साह, रेखा त्रिवेदी, मंजू बिष्ट, नीलू एलहेंस, बर्षाजलि श्रीवास्तव, मोनिका साह, निधि कंसल तथा मानसी गर्ग उपस्थित थी। इससे पूर्व विद्यालय की प्रधानाचार्य ममता साह ने सभी का स्वागत किया। नगर पालिका अध्यक्ष डा. सरस्वती खेतवाल ने सभी बच्चों का उत्साहवर्धन किया और कहा यह विद्यालय बहुत प्रगति कर रहा है। उन्होंने आशीर्वाद क्लब के प्रयासों की प्रशंसा की। कहा कि क्लब के सभी बेहतर हैं।

नैनीताल व बेतालघाट में एनएसएस शिविरों में कार्यक्रम

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। जिले के नैनीताल तथा बेतालघाट में चल रहे एनएसएस शिविरों में शिविरार्थियों के तहत विविध रचनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। बता दें राजकीय प्राथमिक विद्यालय रोप में चल रहे शहीद श्री खेमचंद डौर्बी राजकीय महाविद्यालय बेतालघाट के सात दिनी शिविर का उद्घाटन सरस्वती वंदना, स्वागत गीत एवं रंगारंग कार्यक्रमों के साथ शुभारंभ हुआ। प्रथम दिवस के प्रथम सत्र में विशिष्ट अतिथि ग्राम प्रधान रोपा दीपक रिखाड़ी, मुख्य अतिथि अधिवक्ता डा. दीप रिखाड़ी एवं प्रभारी प्राचार्य द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम प्रभारी ममता पांडे ने अगले सात दिवसों की रूपरेखा स्वयं सेवकों के समक्ष रखी। मंच का सफल संचालन महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के डा. दीपक असिस्टेंट प्रोफेसर ने किया। शिविर के द्वितीय दिवस का आरंभ प्रात: कालीन भ्रमण, व्यायाम एवं ईश वंदना के साथ हुआ। दिवस के प्रथम सत्र में स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा समूह बनाकर अभिग्रहीत ग्राम रोपा के ग्रामीणों से साक्षरता आंकड़े एकत्र किए। बौद्धिक सत्र में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बेतालघाट से जेम्स विवेक (स्टाफ नर्स मुख्य वक्ता ने स्वयंसेवियों के साथ महिला स्वास्थ्य विषय पर चर्चा की जबकि रोहित आर्या एसटीएस ने विश्व क्षय रोग दिवस पर क्षय रोग से जुड़ीं जानकारी दी। नैनीताल के राजकीय पॉलिटेक्निक संस्थान के शिविर में वाद-विवाद प्रतियोगिता हुई जिसमें स्वयंसेवकों ने विभिन्न समसामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों ने आत्मविश्वास एवं तार्किक क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। निर्णायक मंडल द्वारा श्रेष्ठ वक्ताओं का चयन किया गयाए जिससे विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित हुई। इसके उपरांत एक बौद्धिक सत्र का आयोजन किया गया जिसमें नैनीताल के कंप्यूटर साइंस विभाग के विभागाध्यक्ष नवनीत मिश्रा ने विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास, तकनीकी ज्ञान के महत्व तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक किया।

कुविवि के यूजीसी-एमएमटीटीसी द्वारा आयोजित भारतीय साहित्य और भाषा विषयक पुनश्चर्या कार्यक्रम संपन्न

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। कुमाऊं विश्वविद्यालय के यूजीसी-एमएमटीटीसी द्वारा आयोजित भारतीय साहित्य और भाषा विषयक पुनश्चर्या कार्यक्रम का मंगलवार को समापन हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी रहे। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि आज का यह समापन केवल एक औपचारिक पड़ाव नहीं बल्कि एक महत्वपूर्ण बौद्धिक यात्रा का चरण है। भाषा और साहित्य को उन्होंने समाज की चेतना, संस्कृति और इतिहास का सशक्त वाहक बताते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में मातृभाषा की केंद्रीय भूमिका पर बल दिया। साथ ही उन्होंने इसके प्रभावी क्रियान्वयन की चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया। एमएमटीटीसी के सह निदेशक प्रो. रीतेश साह ने कहा कि इस पुनश्चर्या कार्यक्रम के दौरान हुए संवादए विमर्श और विचारों के आदान-प्रदान ने प्रतिभागियों में नई शैक्षणिक ऊर्जा का संचार किया है। निदेशक प्रो. दिव्या यू. जोशी ने कहा कि लगभग पखवाड़े तक चले इस शैक्षणिक आयोजन में उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, गुजरात, केरल, महाराष्ट्र, हरियाणा व छत्तीसगढ़, दिल्लीए बिहार एवं हिमाचल प्रदेश सहित देश के दस राज्यों से आए प्रतिभागियों ने छह विभिन्न भाषाओं के माध्यम से सक्रिय सहभागिता कीए जिससे कार्यक्रम को बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक आयाम प्राप्त हुआ। रिफ्रेशर कोर्स समन्वयक प्रो. एलएम जोशी ने कहा कि कार्यक्रम की प्रमुख विशेषता देश-विदेश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों, विद्वानों भाषाविदों व आलोचकों एवं तकनीकी विशेषज्ञों के व्याख्यान रहे। संचालन डे ऑफिसर चंद्रिका चौधरी ने किया।

शराब की दुकानों का विरोध

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता हेम चंद्र आर्य के नेतृत्व में मंगलवार को एक प्रतिनिधिमण्डल ने सीएम पुष्कर सिंह धामी को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल को सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से उन्होंने चारखेत से लेकर नलनी घटगढ़ के बीच में तथा रातीघाट क्षेत्र में शराब की दुकान खुलने का विरोध किया। इस दौरान उन्होंने जिलाधिक. ारी को जनता में फैले भारी जनाक्रोश से अवगत कराते हुए इस विषय पर शासन स्तर पर विचार-विमर्श कर शराब की दुकानों को ग्रामीण क्षेत्रों में ना खोले जाने की अपील की। गौरतलब है कि सरकार ने शहर के करीब स्थित बजून मंगोली क्षेत्र में तथा रातीघाट क्षेत्र में शराब की दुकान

खोले जाने का प्रस्ताव जारी किया गया है। जिसे लेकर ग्रामवासियों में काफी गुस्सा है। समस्त ग्रामवासियों द्वारा चारखेत से लेकर नलनी, घटगढ़ क्षेत्र के बीच सरकारी शराब की दुकान खोले जाने का पूर्ण रूप से विरोध किया गया है। बीते दिन ग्रामवासियों द्वारा एडीएम के माध्यम से एक ज्ञापन मुख्यमंत्री को सौंपा गया। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल में विधायक सरिता आर्या, सांसद प्रति. निधि गोपाल सिंह रावत, डीएसए के महासचिव मनोज जोशी समेत उमेश जोशी, अंकित, गौरव गोस्वामी, मनोज पंत तथा नीरज आदि लोग मौजूद रहे।

गोल्ज्यू धाम चोपड़ा में निकली भव्य कलश यात्रा

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। श्रीमद्भागवत केवल एक पुस्तक नहीं बल्कि साक्षात कृष्ण का

स्वरूप है। कलियुग में केवल हरि नाम संकीर्तन ही मोक्ष का मार्ग है। श्रीमद् भागवत का श्रवण करने से मनुष्य के जन्म जन्मांतर के पाप धुल जाते हैं और भक्ति का उदय होता है। यह उद्गार गोल्ज्यू धाम चोपड़ा में आयोजित नौ दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में प्रवचन करते आचार्य नीरज महादेव ने प्रवचन करते कहा कि धर्म के मार्ग का अनुसरण करते हुए जीवन का आनंद लेना चाहिए। इस मौके पर पारंपरिक परिधानों में भव्य कलश यात्रा निकाली गई, जिसमें मुख्य यजमान ललित मोहन बिष्ट, कमला बिष्ट, पुरोहित कैलाश जोशी, गोपाल सिंहजीना, पुष्कर कथायत, हिमांशु,कन्नू बिष्ट तथा राजू तथा दिनेश बर्गली सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए।

कूर्मांचल बैंक ने लोहाघाट में खोली शाखा

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। दि कूर्मांचल नगर सहकारी बैंक लिमिटेड नैनीताल की 50वीं शाखा डाक बंगला रोड लोहाघाट (चंपावत) का शुभारंभ मंगलवार को हुआ।

शाखा का शुभारंभ नगर पालिका अध्यक्ष लोहाघाट गोविन्द लाल वर्मा एवं बैंक के अध्यक्ष विनय साह के द्वारा संयुक्त रूप से किया जबकि दीप प्रज्वलित बैंक अध्यक्ष विनय साह तथा समाजसेवी सतीश चन्द्र पाण्डे द्वारा किया गया। इस अवसर पर बैंक के संचालक पीतांबर पन्त एवं केशर सिह मेहरा उपस्थित रहे जबकि बैंक अधिकारियों में संजय साह (सचिव) समेत दीपक बोहरा (प्रबन्धक) सहित दिनेश चन्द्र जोशी, राजेंद्र सिंह मेहरा एवं पवन साह उपस्थित रहे।

इस अवसर पर बैंक के अध्यक्ष विनय साह के द्वारा लोहाघाट के सम्मानित नागरिकों का अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा बढ़ाने हेतु धन्यवाद व्यक्त किया गया। बैंक के सचिव संजय साह के द्वारा जनसमूह को संबोधित करते हुए आशा व्यक्त की गयी कि बैंक अपने ग्राहकों को नवीनतम तकनीकी सुविधाएं मुहैया करवाने के लिए प्रतिबद्ध है एवं बैंक अपने ग्राहकों को यूपीआई आधारित बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रयासरत है। कहा कि बैंक इस वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक 4500 करोड़ रुपए से अधिक का व्यवसाय प्राप्त कर लेगा। अंत में बैंक के सचिव संजय साह ने सभी का आभार जताया।

क्षय रोग एनटीईपी पर मेडिकल कॉलेज में कार्यशाला

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। राजकीय मेडिकल कालेज, हल्द्वानी के कम्युनिटी मेडिसिन विभाग ने मंगलवार को मेडिकल कालेज परिसर स्थित लेक्चर थिएटर में क्षय रोग (टीबी) एनटीईपी पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन प्रो. डा. जीएस तितियाल, प्राचार्य, राजकीय मेडिकल कालेज और प्रो. डा. साधना अवस्थी, विभागाध्यक्ष कम्युनिटी मेडिसिन विभाग ने किया। कार्यशाला में विशेषज्ञों ने टीबी के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान दिया। असिस्टेंट प्रोफेसर डा. आशुतोष ने एक्स्ट्रा-पल्मोनरी टीबी (ईटीबी) पर जानकारी दी, जिसमें टीबी फेफड़ों के अलावा शरीर के अन्य अंगों को भी प्रभावित कर सकता है। उन्होंने बताया कि ईटीबी खुद से नहीं फैलता, लेकिन पल्मोनरी टीबी के साथ यह दूसरों को संक्रमित कर सकता है। टीबी और श्वास रोग विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. रवि कुमार शर्मा ने टीबी के कारण, लक्षण और उपचार पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने एचआईवी संक्रमित, मधुमेह से पीड़ित और धूम्रपान करने वालों में टीबी होने की संभावना अधिक होने की बात कही और नागरिकों से 3 दिन से अधिक बुखार या खांसी की स्थिति में तुरंत टीबी की जांच कराने की अपील की। टीबी और श्वास रोग विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डा. आरजी नौटियाल ने टीबी की जांच पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। कार्यशाला में मेडिकल कॉलेज के रेजिडेंट चिकित्सक, पीजी और एमबीबीएस के छात्र-छात्राएं भी उपस्थित रहे।

एरीज ने मनाया स्थापना दिवस

सप्ताह भर तक विविध कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। मनोरा पीक नैनीताल स्थित आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) ने 22 मार्च को स्थापना के 22 वर्ष पूरे किए। इस अवसर पर 18 मार्च से लेकर 24 मार्च के बीच 7 दिवसीय स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया। बता दें समारोह की शुरुआत 18 मार्च को रक्तदान शिविर के साथ हुई हुई जिसमें एरीज के कर्मचारियों और शोध छात्रों ने स्वेच्छापूर्वक रक्तदान किया जबकि 19 मार्च को भाषण प्रतियोगिता तथा 20 मार्च को क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई। 23 मार्च को आंतरिक विज्ञान तकनीकी बैठक में संस्थान के वज्ञानिकों और अभियंताओं ने पिछले 1 वर्ष के कार्यो पर चर्चा की और भविष्य की योजनाओं पर विचार मंथन किया। विशेष अतिथि तथा एरीज के प्रथम

एवं पूर्व निदेशक प्रो. राम सागर ने एक विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने एरीज तथा 3.6 मीटर देवस्थल ऑप्टिकल टेलीस्कोप (डॉट) की स्थापना की झलक देते हुए वैज्ञानिकों तथा शोध छात्रों को प्रेरित किया। शाम को सांस्कृतिक संध्या भी आयोजित की गई। इस अवसर पर विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग भारत सरकार द्वारा सोशल मीडिया पर एरीज पर आधारित एक लघु फिल्म जारी की गई। इसी तरह से 24 मार्च के दिन स्थापना दिवस समारोह का समापन करते हुए 3.6 मीटर डॉट की दसवीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में इस दूरबीन से प्राप्त वैज्ञानिक निष्कर्षों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गए साथ ही भारतीय खगोल विज्ञान के परिपेक्ष्य में 3.6 मीटर डॉट के साथ भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा की गयी। इस सत्र में एरीज के साथ टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान मुंबई तथा हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने भी प्रतिभाग किया। बता दें कि 31 मार्च 2016 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 3.6 मीटर देवस्थल ऑप्टिकल टेलीस्कोप का उद्घाटन किया गया था।

अयोध्या कांड में भरत के चरित्र का मार्मिक वर्णन

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। जगदम्बा मंदिर के 41वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित रामकथा के पांचवे दिन ब्यास जी डा. मनोज पांडे ने अयोध्या कांड में भरत के चरित्र का मार्मिक वर्णन किया। उन्होंने कहा कि भरत का त्याग, समर्पण और निष्ठा रामायण की सर्वोत्तम मिसाल है, जो हमें कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा देता है। कथा के दौरान सैकड़ों भक्त भावविभोर हो गए, जब ब्यास जी ने भरत द्वारा श्रीराम की चरण पादुका को सिंहासन पर रखकर 14 साल तक राज्य करने की कथा सुनाई। मंगलवार सुबह, मंदिर के पास ठेले पर सब्जी बेचने वाले मोहनलाल मौर्य, उनकी पत्नी मीना मौर्य और पुत्र अमर मौर्य ने मंदिर को गुल्लक भेंट किया, जिसमें 5,819 रुपये थे। इस

पहल को मंदिर कमेटी द्वारा सराहा गया, और बताया गया कि परिवार हर साल मंदिर की सफाई और अन्य कार्यों में समर्पित रूप से सहयोग करता है। इससे पहले यज्ञाचार्य डा. भुवन चंद्र त्रिपाठी के संरक्षण में गायत्री यज्ञ और पूजन का आयोजन हुआ, जिसमें कई यजमानों ने आहुतियां दीं। इस भव्य आयोजन में मंदिर समिति के अध्यक्ष उमेश पांडे, सचिव विनोद पांडे, कोषाध्यक्ष आशुतोष जोशी और अन्य सदस्य भी शामिल थे।

वोल के पहले T20 शतक से ऑस्ट्रेलिया ने विंडीज का किया 3-0 से क्लीन स्वीप

सेंट विन्सेंट, वार्ता। ऑस्ट्रेलिया ने सोमवार को डीएलएस मेथड से वेस्टइंडीज को 40 रन से हराकर महिला टी 20 सीरीज में 3.0 से क्लीन स्वीप कर लिया। बारिश ने वेस्टइंडीज के 212 रन के लक्ष्य का पीछा करना मुश्किल कर दिया,

जिससे 10 ओवर में उनका स्कोर 61/3 हो गया। किंग्सटाउन में डेढ़ घंटे से ज्यादा समय तक बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी, इसलिए नतीजा डीएलएस मेथड से तय किया गया। ऑस्ट्रेलिया के टोटल में जॉर्जिया वोल का 52 गेंदों पर पहला टी20 शतक सबसे ऊपर रहा। वह मेग लैनिंग (दो बार), बेथ मूनी (दो बार) और एलिसा हीली के साथ ऑस्ट्रेलिया महिला टी20 शतक बनाने वालों में शामिल हो गईं। नौ

चौके और छह छक्के लगाकर, उन्होंने 17वें ओवर में अपना शतक पूरा किया और दो गेंद बाद हेली मैथ्यूज ने उन्हें आउट कर दिया। बाद में ओवर में, मैथ्यूज ने जॉर्जिया वेयरहम का भी विकेट लिया, जिस दिन उनकी बाकी टीम की खिलाड़ियों ने रन दिए, और 3-29 के साथ मैच खत्म किया। उस पॉइंट तक, यह जडादातर वोल की अकेले की कोशिश थी, टॉप पांच में से कोई भी दूसरी बैटर 20 का स्कोर पार नहीं कर पाई थी। उनका 200 पार करना कुछ हद तक कैप्टन सोफी मोलिनक्स की वजह से था, जिन्होंने 19वें ओवर में 15 रन लिए, और फिर आखिरी ओवर में छक्का मारकर ऑस्ट्रेलिया को विमेंस टी20 में अब तक का पांचवां सबसे बड़ा टोटल दिलाया। मोलिनक्स के दोनों छक्के काउ कॉर्नर एरिया में आए - एक फुल-टॉस पर और दूसरा फी-हिट पर - जिससे वोल की मैराथन को. शिश के बाद ऑस्ट्रेलिया ने शानदार प्रदर्शन किया, इत्तेफाक से विमेंस टी20 में वेस्टइंडीज के खिलाफ यह उनकी पहली सेंचुरी थी। इससे पहले ब्रैथवेट ने तीसरे ओवर में शट्ट की गेंद पर छक्का मारकर मैच को आगे बढ़ाया। थोड़ी देर बाद, लूसी हैमिल्टन ने धीमी गेंद फेंककर उन्हें कैच-एंड-बॉल कर दिया, जिससे वे और मुश्किल में पड़ गए। छह ओवर के आखिर में, उनका स्कोर 33/3 हो गया था। मैथ्यूज और डिएंड्रा डॉटिन कुछ देर शांत रहीं, फिर दोनों ने अलाना किंग, जो प्लेयर ऑफ द सीरीज थीं, की गेंद पर छक्का मारा, जो ट्रैक पर कूदकर मिडविकेट की रस्सी को पार कर गई।

यह वेस्टइंडीज की आखिरी लड़ाई थी, एक ओवर बाद, बारिश के कारण खिलाड़ी वापस जा रहे थे। संक्षिप्त स्कोरः ऑस्ट्रेलिया महिला टीम 20 ओवर में 211/7 (जॉर्जिया वोल 101, सोफी मोलिनक्स 25, हेली मैथ्यूज 3-29, जहजारा क्लैक्सटन 2-37) ने वेस्टइंडीज महिला टीम को 10 ओवर में 61/3 (हेली मैथ्यूज 30), एबोनी ब्रैथवेट 18, एलिस पेरी 1-1, मेगन शुट्ट 1-11) को 40 रन (डीएलएस मेथड) से हराया।

दक्षिण अफ्रीका दौरे पर टी20 सीरीज के लिए काशवी गौतम भारतीय टीम में शामिल

नई दिल्ली, वार्ता। तेज गें. दबाजी ऑलराउंडर काशवी गौतम को अप्रैल में दक्षिण अफ्रीका में होने वाली पांच मैचों की टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम में चुना गया है।

हाल ही में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर काशवी ने टेस्ट और वनडे दोनों सीरीज में हिस्सा लिया था, लेकिन अब तक उनका टी20 डेब्यू नहीं हुआ है। चयनकर्ताओं ने उमा छेत्री को भी दल में ऋचा घोष के बैकअप के रूप में शामिल किया है। छेत्री ने 17 साल की जी कमालिनी की जगह ली है जिन्होंने दिसंबर में श्रीलंका के खिलाफ घरेलू सीरीज में टी20 डेब्यू करने के बाद से कोई अंत. रराष्ट्रीय मैच नहीं खेला है। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर वह टी20 दल का हिस्सा थीं, लेकिन उन्हें कोई भी मैच खेलने का मौका नहीं मिला था। श्रीलंका के खिलाफ सभी पांच टी20 खेलने और ऑस्ट्रेलिया दौरे पर बेंच पर रहने

वाली बाएं हाथ की स्पिनर वैष्णवी शर्मा को भी बाहर कर दिया गया है। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर दो मैचो में 3 और 1 का स्कोर बनाने तथा तीन ओवर में 30 रन देने वाली ऑलराउंडर अमनजोत कौर को भी बाहर का रास्ता दिखाया गया है। अरुंधति रेड्डी, रेणुका सिंह और क्रांति गौड़ के साथ गौतम तेज गेंदबाजी की चौथी विकल्प होंगी। दीप्ति शर्मा, श्री चरणी और श्रेयंका पाटिल स्पिन विभाग की जिम्मेदारी संभालेंगी। दक्षिण अफ्रीका का ये दौरा डरबन में शुरू होगा जहां 17 और 19 अप्रैल को पहले दो टी20 मैच खेले जाएंगे। इसके बाद 22 और 25 अप्रैल को जोहान्सबर्ग में अगले दो मैच तथा 27 अप्रैल को बेनोनी में दौरे का आखिरी मैच खेला जाएगा।

संक्षिप्त खेल समाचार

आयुष शेट्टी को थॉमस कप 2026 के लिए पहली बार चुना गया

बेंगलुरु। भारत की अगली पीढ़ी के बैडमिंटन टैलेंट को एक बड़ा बढ़ावा देते हुए युवा खिलाड़ी आयुष शेट्टी को थॉमस कप फाइनल्स 2026 के लिए नेशनल टीम में पहली बार चुना गया, जो उनके तेज़ी से बढ़ते करियर में एक बड़ा मील का पत्थर है। बैडमिंटन एसोसिएशन आफ़ इंडिया ने मंगलवार को 24 अप्रैल से 3 मई तक डेनमार्क के हॉर्सेंस में होने वाले टूर्नामेंट के लिए एक बैलेंस्ड टीम का नाम बताया, जिसमें शेट्टी अनुभवी पुरुषों की लाइनअप में सबसे खास खिलाड़ियों में से एक के रूप में उभरे। शेट्टी का सिलेक्शन सीनियर सर्किट पर लगातार अच्छे प्रदर्शन के बाद हुआ है, जहाँ उन्होंने लगातार एक शांत और तकनीकी रूप से मजबूत खिलाड़ी के रूप में अपनी पहचान बनाई है जो सबसे ऊँचे लेवल पर मुक. ाबला करने में सक्षम है। उनके शामिल होने से यह सफ़ पता चलता है कि सिलेक्टर जाने-माने सितारों के साथ-साथ युवाओं में भी इन्वेस्ट करना चाहते हैं।

यूथ डेल्फकि गेम्स में भारत ने ऐतिहासिक शुरुआत की

बिश्केक (किर्गिस्तान)। भारत की सांस्कृतिक और कलात्मक यात्रा के लिए एक अहम पल में, 46 सदस्यों वाला भारतीय डेलीगेशन शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन (एससीओ) के सदस्य देशों के पहले यूथ डेल्फकि गेम्स में हिस्सा लेने के लिए बिश्केक, किर्गिस्तान पहुंच गया है। यह किसी भारतीय कलाकारों की टीम का ग्लोबल कॉम्पिटिटिव फॉर्मेट में पहली बार हिस्सा लेने का प्रतीक है, जो इंटरनेशनल सांस्कृतिक आंदोलन में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित होगा। इस डेलीगेशन में, जिसमें पूरे भारत के 46 युवा कलाकार और इंटरनेशनल जूरी सदस्य शामिल हैं।

हम यहां जीतने के लिए हैं: आशीष

अहमदाबाद, वार्ता। आईपीएल 2026 से पहले गुजरात टाइटन्स के साफ नजरिए के बारे में बताते हुए हेड कोच आशीष नेहरा ने कहा कि टीम का फोकस मुकाबला करने और जीतने पर बना हुआ है। शुभारंभ 2026 में बोलते हुए, जो एक यादगार शाम थी जिसमें पूरी टीम, फ्रँचाइजी मालिक, पार्टनर और फैन एक साथ आए, नेहरा ने कहा कि टाइटन्स अपने खेलने का तरीका बदलना नहीं चाहते हैं।

उन्होंने खिलाड़ियों और उनके फैसले लेने पर टीम के भरोसे पर जोर देते हुए कहा, ष्मुझे नहीं लगता कि इस सीजन में अलग तरह से सोचने की जरूरत है। असल में, मुझे नहीं सोचना है, खिलाड़ियों को सोचना है। उन्हें सोचना है। उन्हें खेलना है, मैं बाहर बैठा हूं। टीम की सोच पर जोर देते हुए, नेहरा ने कहा कि

पहले दिन से ही हमारी सोच साफ रही है, हम यहां हिस्सा लेने नहीं आए हैं, हम यहां मुकाबला करने और जीतने आए हैं। एक नई टीम के लिए, यह सोचना आसान है कि इसमें समय लग सकता है, लेकिन हमारा नजरिया कभी ऐसा नहीं था। 2022 में आईपीएल में शामिल होने के बाद से, गुजरात टाइटन्स सबसे लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाली टीमों में से एक रही है, जो अपने पहले चार सीजन में से तीन में प्लेऑफ तक पहुंची और 2022 में अपने पहले सीजन में ही खिताब जीता। ग्रुप में कंटिन्यूटी पर, नेहरा ने कहा, ष्आप एक ऐसे कप्तान की बात कर रहे हैं जो पहले दिन से टीम के साथ है और उसने वह सफर देखा है। मुझे नहीं लगता कि हम इस सीजन में कुछ अलग करने की सोच रहे हैं। शुभारंभ 2026 ने नए सीजन की शुरुआत की, साथ ही फ्रेंचाइजी के पांच साल के सफर पर भी बात की। एकता, महत्वाकांक्षा और गुजरात-फर्स्ट की भावना को दिखाते हुए, जो फ्रेंचाइजी को पहचान देती है, इस इवेंट में सोच, पहचान और कल्चरल सेलिब्रेशन का मिक्स था, जिससे टीम का अपने फैंस और राज्य के साथ गहरा कनेक्शन और मजबूत हुआ। गुजरात टाइटन्स अपना आईपीएल 2026 कैंपेन 31 मार्च को मुल्लांपुर में पंजाब किंग्स के खिलाफ शुरू करेगी।

श्रीलंका ने आईपीएल के लिए ईशान मलिंगा को मंजूरी दी

हसरंगा व पथिराना को इंतजार करना पड़ेगा

कोलंबो, वार्ता। श्रीलंका क्रिकेट (एसएलसी) ने ईशान मलिंगा को आईपीएल में हिस्सा लेने की मंजूरी दे दी है, लेकिन बाकी तीन - नुवान तुषारा, वानिंदु हसरंगा और मथीशा पथिराना - के बारे में अभी कोई अपडेट नहीं है, जो 28 मार्च से शुरू होने वाली लीग में हिस्सा लेने के लिए अभी भी श्रीलंकाई बोर्ड से मंजूरी का इंतजार कर रहे हैं। एक फ्रेंच. इजी अधिकारी ने क्रिकबज को कन्फर्म किया कि मलिंगा (25), जो दाएं हाथ के तेज गें. दबाज हैं, मंगलवार (24 मार्च) को सनराइजर्स टीम को रिपोर्ट करेंगे।

मलिंगा अपने साथी श्रीलंकाई खिलाड़ी कामिंडू मेंडिस के साथ हैदराबाद पहुंचेंगे, जो 27 साल के बाएं हाथ के बैट्समैन हैं और जिन्हें पहले ही एनओसी मिल चुकी है। माना जा रहा

है कि हसरंगा (एलएसजी) और पथिराना (केकेआर) को सोमवार को फिटनेस टेस्ट में शामिल होने का मौका नहीं मिला, जिसका मतलब है कि आईपीएल 2026 के लिए उनके भारत आने में देरी होगी। क्रिकबज ने पहले बताया था कि पथिराना, जिन्हें केकेआर ने 18 करोड़ रुपये में साइन किया है, इस सीजन का कुछ हिस्सा मिस करने वाले हैं, क्योंकि फेंच. इजी उनके पूरी तरह ठीक होने का इंतजार करना चाहती है, न कि उनका रिप्लेसमेंट ढूंढना चाहती है। एलएसजी को अपने 2 करोड़ रुपये के रिक्रूट हसरंगा के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के 31 साल के पेसर तुषारा के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है। एसएलसी ने हाल ही में एक बयान जारी कर कहा, ष्प्ग्स् में हिस्सा लेने के लिए नुवान तुषारा की नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट की एलिजिबिलिटी उनके फिजिकल परफॉर्मेंस टेस्ट के नतीजे पर निर्भर करेगी।ष सोमवार (23 मार्च) तक उनका एनओसी स्टेटस साफ नहीं है। लेकिन आईपीएल में दूसरे श्रीलंकाई खिलाड़ी, दुष्मंत चमीरा और पथुन निसंका (दोनों डीसी) के साथ-साथ हाल ही में आरआर में शामिल हुए दासुन शनाका को क्लियर कर दिया गया है।

शांत रहने से आपको साफ नजरिया मिलता है: शुभमन

अहमदाबाद, वार्ता। गुजरात टाइटन्स के कप्तान शुभमन गिल ने लीडरशिप में क्लैरिटी और शांत रहने पर जोर दिया, क्योंकि टीम प्च्स् 2026 की तैयारी कर रही है, जो पिछले सीजन में बनी मजबूत और कंसिस्टेंट नींव पर बनी है। अहमदाबाद में गुजरात टाइटन्स शुभारंभ 2026 में बोलते हुए, गिल ने खुद के प्रति सच्चे रहने और दबाव वाली स्थितियों में शांत रहने के महत्व पर जोर दिया।उन्होंने कहा, ष्मुझे लगता है कि मैं बस जैसा हूं वैसा ही हूं,

और यह शांति मेरे ग्रुप और मेरे अपने खेल में मेरे विश्वास और सुरक्षा की भावना से आती है। उन्होंने आगे कहा, षकिसी भी स्थिति में शांत रहने से आपको दूर की नजर मिलती है, आप उस पल से आगे देख पाते हैं, बड़ी तस्वीर देख पाते हैं, और आपके पास बहुत साफ, लंबे समय का विजन होता है। गुजरात टाइटन्स अपने

डेब्यू के बाद से आईपीएल में सबसे लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाली टीमों में से एक रही है, जिसमें पहला सीजन टाइटल जीतना और 2023 में रनर-अप रहना शामिल है।

इसी बुनियाद पर, गिल का तरीका लीडरशिप में निरंतरता दिखाता है, जिसमें ग्रुप के अंदर क्लैरिटी, कॉन्फिडेंस और भरोसे पर फोकस होता है। गुजरात टाइटन्स शुभारंभ 2026, एक ऐतिहासिक इवेंट, खिलाड़ियों, लीडरशिप, पार्टनर्स और फैंस को एक साथ लाया, जिससे एक नए सीजन की शुरुआत हुई और साथ ही पिछले कुछ सालों में फेंचाइजी के सफर और ग्रोथ पर भी रोशनी पड़ी।

टीम की तैयारी के बारे में और जानकारी देते हुए, क्रिकेट डायरेक्टर विक्रम सोलंकी ने स्क्वॉड बनाने में निरंतरता और स्थिरता के महत्व पर जोर दिया। सोलंकी ने कहा, ष्जहां तक इस सीजन और स्क्वॉड बनाने की बात है, तो पिछला साल हमारा बहुत अच्छा रहा था। हम बस आखिरी मुश्किल में हार गए थे। हमने ऑक्शन में बहुत छोटे बदलाव किए थे, बस थोड़े से एडजस्टमेंट की जरूरत थी। पांच खिलाड़ी आए थे, और मैथ्यू हेडन भी हमारे साथ जुड़ गए हैं। काम असल में हम सभी के बीच बंटा हुआ है, और हम सभी बहुत मेहनत करने की कोशिश करते हैं।

KKR आकाश दीप की जगह विदर्भ के तेज गेंदबाज सौरभ को करेगी शामिल

कोलकाता, वार्ता। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) आकाश दीप के रिप्लेसमेंट के तौर पर विदर्भ के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज सौरभ दुबे को आईपीएल 2026 में अपने साथ जोड़ेगी। कोलकाता में इंट्रा स्क्वाड अभ्यास मैच के दौरान केकेआर के सीईओ वैंकी मैसूर ने इसकी घोषणा की। दुबे ने आईपीएल में अब तक एक भी मुकाबला नहीं खेला है और सीनियर लेवल पर अब तक 11 मुकाबले खेलने वाले दुबे ने पिछले ढाई वर्षों से प्रतिस्पर्धी क्रिकेट नहीं खेली है। पिछली बार उन्होंने 2023 में एक टी20 मुकाबले में विदर्भ का प्रतिनिधित्व किया था।

उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लिमिटेड
(उत्तराखण्ड सरकार का उपक्रम) (कोरपोरेट आईडी नं. UA40109UP2001SGC025867/2358)
विक्टोरिया क्रॉस विजेता गबर सिंह ऊर्जा भवन, कांवली रोड, देहरादून-248001
दूरभाष संख्या: 0135-2763672-76, वेबसाईट: www.uktenders.gov.in

ई-निविदा विस्तार सूचना

इस कार्यालय द्वारा पूर्व में आमंत्रित ई-निविदा संख्या सी.सी.पी.-।।/21/2025-2026 जो कि 200 कि० ली० नया परिवर्तक ऑयल की आपूर्ति हेतु आमंत्रित की गयी थी को अपरिहार्य कारणों से विस्तारित किया जाता है। ये ई-निविदा दिनांक 06.04.2026 समय 17:00 बजे तक क्रय एवं जमा की जा सकती है। ई-निविदा का भाग-एक 07.04.2026 को 15:30 बजे खोला जायेगा।
अन्य नियम व शर्तें मूल ई-निविदा के अनुसार रहेंगी। अन्य विवरण के लिए कृपया वेबसाईट www.uktenders.gov.in को देखें।

अधीक्षण अभियन्ता
कारपोरेट (अनुबन्ध एवं क्रय-द्वितीय)
No.: 196/EE(cm)/UPCL/A-2 Dt.: 24.03.2026

'राष्ट्र हित में बिजली बचायें' बिजली बचाने हेतु एल0ई0डी0 बल्ब का प्रयोग करें। (टोल फ्री नं0 1912)
'विद्युत बिलों के 24x7 ऑनलाईन भुगतान हेतु www.upcl.org पर जाएं'
(विद्युत चोरी सूचना टोल फ्री नं0 1800 180 4185/फैक्स संख्या 0135-2760911 पर दें)

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता प्रान्तीय खण्ड, लो.नि.वि., भटवाड़ी
OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PRO. DIV. P.W.D BHATWARI (UTTARKASHI) PIN-249135
E-Mail-eepwdbhatwari@rediffmail.com

पत्रांक 471/ निविदा — दिनांक 24.03.2026

निविदा सूचना

महामहिम श्री राज्यपाल, उत्तराखण्ड की ओर से अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खण्ड, लो०नि०वि०, भटवाड़ी के द्वारा निम्नलिखित कार्यों की सील्ड निविदायें दिनांक-20.04.2026 को अपरान्ह 02.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र दिनांक-06.04.2026 से दिनांक 18.04.2026 तक किसी भी कार्य दिवस में निम्न कार्यालयों से प्राप्त किये जा सकते हैं तथा दिनांक 20.04.2026 को अपरान्ह 02.00 बजे तक इन्ही कार्यालयों में डाले जा सकते हैं।
2. अधीक्षण अभियन्ता, 6वॉ वृत्त लो०नि०वि०, उत्तरकाशी। 2. अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खण्ड लो०नि०वि०, भटवाड़ी। 3. अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खण्ड लो०नि०वि०, उत्तरकाशी।

क्रम सं.	कार्य का नाम	धरोहर राशि (रू.)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू.)	निविदा की वैद्यता	कार्य पूर्ण करने की अवधि	फर्म/ ठेकेदार की श्रेणी
1	भटवाडी बासू मोटर मार्ग के कि०मी० 0 से 10 में विभिन्न भागों में क्षतिग्रस्त दीवारों का पुनर्निर्माण (ओ०डी०आर०)	35000.00	1500.00 +GST	45 दिन	03 माह	उत्तराखण्ड लो. नि. वि. में मार्ग कार्य में 'डी' अथवा उच्चत्तर श्रेणी में
2	गोरशाली जोकाणी मोटर मार्ग के कि०मी० 1 व 2 में विभिन्न भागों में क्षतिग्रस्त दीवारों का पुनर्निर्माण (ग्रामीण मार्ग)	39000.00	1500.00 +GST	45 दिन	03 माह	- तदैव-
3	पाटा लिंक मोटर मार्ग के दलदल भाग में सतह सुधार व भूस्खलन प्रवण क्षेत्र एवं क्षतिग्रस्त दीवारों का सुरक्षात्मक कार्य (ग्रामीण मार्ग)।	33000.00	1500.00 +GST	45 दिन	03 माह	- तदैव-
4	भटवाडी गदेरे पर स्थित पुल एवं तटबंध के क्षतिग्रस्त भाग का पुनर्निर्माण कार्य	65000.00	2000.00 +GST	45 दिन	03 माह	- तदैव-
5	बौंगा-घण्डियालधार मोटर मार्ग के कि.मी. के 4 कॉस से. 3/17-18 में क्षतिग्रस्त दीवार का पुननिर्माण (ग्रामीण मार्ग)	25000.00	1000.00 +GST	45 दिन	03 माह	- तदैव-

निविदायें दिनांक 21.04.2026 को अपराह्न 03:30 बजे उपस्थित निविदादाताओं/उनके प्रतिनिधियों के समक्ष इस कार्यालय में खोली जायेगी, अन्य शर्ते निविदा प्रपत्र के साथ देखी जा सकती है। किसी भी निविदा को स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी के पास सुरक्षित रहेगा।

सील्ड लिफाफे में निविदा प्रपत्र के साथ निम्न अभिलेख/दस्तावेज संलग्न करने अनिवार्य हैं:-
1. वांछित धरोहर धनराशि की किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक से निर्गत एफ०डी०आर०/एन०एस०सी०, जो अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खण्ड, लो०नि०वि०, भटवाड़ी के नाम बन्धक हो।
2. 100 रूपये के नॉन जूडिशियल स्टॉम पेपर पर 01 रूपये का रेवेन्यू टिकट लगाकर स्वहस्ताक्षरित (निविदा की वैधता हेतु)।
3. वांछित ठेकेदारी पंजीकरण प्रमाण पत्र की प्रति।
4. शासनादेश सं०-223817/2024/08(200) /xxx(8)/2023, दिनांक-10.07.2024 के अनुसार निविदादाता को जी०एस०टी० कार्यालय से निर्गत जी०एस०टी० अदेयता प्रमाण-पत्र (No Dues Certificate) तथा समस्त Statement और Return जमा होने सम्बन्धी प्रमाण-पत्र निविदा के साथ जमा करना अनिवार्य होगा।

अधिशासी अभियन्ता
प्रान्तीय खण्ड लो.नि.वि., भटवाड़ी (जतरकाशी)

सिनर ने मियामी में तीसरे दौर की जीत के साथ मास्टर्स 1000 में इतिहास रचा

मियामी, वार्ता। विश्व के नंबर दो खिलाघी जैनिक सिनर ने सोमवार शाम को मियामी ओपन में एटीपी मास्टर्स 1000 में इतिहास रचा, जहां उन्होंने कोरेंटिन माउटेट के खिलाफ 6-1, 6-4 से शानदार जीत हासिल की। हार्ड रॉक स्टेडियम में अपनी सीधी तीसरे राउंड की जीत के साथ, इटैलियन खिलाड़ी ने अब मास्टर्स 1000 लेवल पर लगातार 26 सेट जीते हैं, और नोवाक जोकोविच से आगे निकल गए हैं, जिनके नाम पहले 24 का रिकॉर्ड था। सिनर ने शनिवार को मियामी में अपनी दूसरे राउंड की जीत के साथ उस निशान की बराबरी की थी, फिर तीसरे राउंड में इसे पार कर लिया। अपनी जीत के बाद सिनर ने कहा, ष्मैं बहुत खुश हूं। इस खेल का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता, इसलिए हम जितना हो सके ध्यान रखने की कोशिश करते हैं और देखेंगे कि अगले राउंड में क्या होता है।ष सिनर का यह सिलसिला पिछले नवंबर में रोलेक्स पेरिस मास्टर्स से शुरू हुआ, जहां उन्होंने बिना कोई सेट गंवाए टाइटल जीता था। मियामी में अपनी दो जीत की वजह से, सिनर अब लगातार 13 मास्टर्स 1000 मैच जीत चुके हैं। माउटेट के खिलाफ, इस बात के बहुत कम संकेत थे कि 24 साल के इस खिलाड़ी का यह सिलसिला खतरे में है। सिनर ने जबरदस्त सर्व से मुकाबले की रफ्तार को कंट्रोल किया, और अपने पहले सर्व पॉइंट्स में से 87 परसेंट (33/38) जीते। उन्होंने दोनों विंग्स से भी खुलकर लस्वग किया, माउटेट के 11 के मुकाबले 23 विनर्स लगाए और फ्रेंचमैन को मैच में रिदम पाने का कोई मौका नहीं दिया।

HDFC BANK एचडीएफसी बैंक लि.
अलंकार कॉम्पलेक्स, इण्डेन गैस एजेंसी के सामने, काशीपुर बायपास रोड़, रुद्रपुर उत्तराखण्ड

नीलामी सूचना

नीचे उल्लिखित कर्जदार ने गिरवी रखे गए स्टॉक के एवज में ऋण लिया है। बैंक द्वारा मांग/परिसमापन नोटिस जारी किए जाने के बावजूद, कर्जदार ने बकाया राशि का पूरा भुगतान नहीं किया है। इसलिए, बैंक ने भारतीय अनुबंध अधिनियम-1872 की धारा 176 के तहत बैंक के पास गिरवी रखे गए और नीचे उल्लिखित गोदाम में संग्रहीत कमोडिटी के स्टॉक को इच्छुक पार्टियों को ''जैसा है जहाँ है'' और ''बिना किसी उत्तरदायित्व'' के आधार पर बेचने की प्रक्रिया आगे बढ़ाने का निर्णय लिया है। यह कमोडिटी यानी **गेहूँ, आर्या कोलैटरल वेयरहाउसिंग सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड** की निगरानी में गोदाम में ताले और चाबी के तहत सुरक्षित रखा गया है। नीचे उल्लिखित कर्जदार यदि चाहें तो (नीलामी के समय) उपस्थित रह सकते हैं।
नीलामी का स्थान: एचडीएफसी बैंक लिमिटेड, अलंकार कॉम्पलेक्स, इण्डेन गैस एजेंसी के सामने, काशीपुर बायपास रोड़, रुद्रपुर उत्तराखण्ड

ऋणी का नाम	गोडाउन का पता	कमोडिटी का नाम एवं कमोडिटी की मात्रा एमटी में	कमोडिटी का आरक्षित मूल्य प्रति एमटी
मुकेश इंडस्ट्रीज	मंगत राम का गोडाउन, ग्राम बिसनपुर, तहसील गदरपुर उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड	गेहूँ (दारा): 334.041	Rs. 22,000/-

बोली आवेदन **एचडीएफसी बैंक लिमिटेड,** अलंकार कॉम्पलेक्स, इण्डेन गैस एजेंसी के सामने, काशीपुर बायपास रोड़, रुद्रपुर उत्तराखण्ड पर कार्यदिवस में दिनांक **25.03.2026 से 01.04.2026 तक** प्रात: 10.00 बजे से सायं 4.00 बजे के बीच जमा करें।
बोली को बैंक के प्राधिकृत प्रतिनिधि के द्वारा **02.04.2026** को दोप. 2.00 बजे से सायं 4.00 बजे के बीच (नीलामी की तिथि) उपलब्ध/इच्छुक बिडर्स के सामने **एचडीएफसी बैंक लिमिटेड,** अलंकार कॉम्पलेक्स, इण्डेन गैस एजेंसी के सामने, काशीपुर बायपास रोड़, रुद्रपुर उत्तराखण्डकी ब्रांच पर खोली जाएगी।
निविदाकर्ताओं/संभावित खरीददारों को यदि वे चाहें तो निविदाएं खोले जाने के बाद अपने प्रस्तावों को बढ़ाने का अवसर मिलेगा। इसलिए, उन्हें सलाह दी जाती है कि वे स्वयं/व्यक्तिगत रुप से या अपने विधिवत अधिकृत और अधिकार प्राप्त प्रतिनिधियों के माध्यम से प्राधिकरण के दस्तावेज के साथ उपस्थित रहें।
नीलामी के नियमों और शर्तों का विवरण हमारी उपरोक्त शाखा में **श्री अमर रस्तोगी (मोबाईल: 9105701010)** के पास उपलब्ध है।

दिनांक : 25-03-2026 — एचडीएफसी बैंक लि.
स्थान : उधमसिंह नगर — हस्ता- प्राधिकृत अधिकारी

आईआईटी रुड़की में निर्वाचन संबंधी एसआईआर प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

बीएलओ ईमानदारी से करें दायित्वों का निर्वहन : जेएम

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। निर्वाचन प्रक्रिया को और अधिक सुदृढ़, पारदर्शी एवं त्रुटिरहित बनाने के उद्देश्य से आज आईआईटी रूड़की के कन्वेंशन हॉल में तहसील रूड़की के अंतर्गत कार्यरत बूथ लेवल अधिकारियों के लिए एसआईआर प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में बीएलओ ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर निर्वाचन कार्य से जुड़ी बारीकियों को समझा।

प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते हुए संयुक्त मजिस्ट्रेट रूड़की, श्री दीपक रामचंद्र शेट ने कहा कि एसआईआर प्रक्रिया निर्वाचन व्यवस्था की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है, जो मतदाता सूची की शुद्धता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करती है। उन्होंने सभी बीएलओ को निर्देशित किया कि वे अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण ईमानदारी, निष्पक्षता एवं पारदर्शिता के साथ करें, ताकि लोकतांत्रिक प्रक्रिया की गरिमा बनी रहे। उन्होंने आगे कहा कि प्रत्येक बीएलओ की भूमिका जमीनी स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वही मतदाता सूची के सत्यापन, संशोधन एवं अद्यतन का कार्य करते हैं। इस दौरान उन्होंने उपस्थित अधिकारियों द्वारा पूछे गए विभिन्न प्रश्नों एवं शंकाओं का विस्तारपूर्वक समाधान किया तथा व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से प्रक्रियाओं को सरल तरीके से समझाया। कार्यक्रम में अपर तहसीलदार श्रीमती शुभांगिनी एवं नायब तहसीलदार रूड़की भी उपस्थित रहे। उन्होंने भी बीएलओ को निर्वाचन कार्य के दौरान अपनाई जाने वाली सावधानियों, प्रपत्रों के सही उपयोग तथा समयबद्ध कार्य निष्पादन के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य बीएलओ को एसआईआर प्रक्रिया की गहन जानकारी देना, विभिन्न प्रपत्रों के सही एवं प्रभावी उपयोग के प्रति जागरूक करना तथा मतदाता सूची के सत्यापन एवं अद्यतन कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने हेतु सक्षम बनाना था। कार्यक्रम के अंत में अधिकारियों ने विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रशिक्षण से बीएलओ को अपने कर्तव्यों के निर्वहन में आवश्यक दक्षता प्राप्त होगी और आगामी निर्वाचन कार्य को अधिक सुचारु, पारदर्शी एवं त्रुटिरहित तरीके से संपन्न किया जा सकेगा।

गृह क्लेश में विवाहिता ने जहरीला पदार्थ खाकर जान दी

शाह टाइम्स संवाददाता

भगवानपुर। भगवानपुर क्षेत्र के डाडा जलालपुर गांव से एक दुखद खबर सामने आई है। यहां एक विवाहिता ने पारिवारिक कलह (गृह क्लेश) से तंग आकर जहरीला पदार्थ गटक लिया, जिससे उसकी मौत हो गई।

मिली जानकारी के अनुसार, गांव की रहने वाली संजों नाम की महिला का पिछले कुछ समय से घर में विवाद चल रहा था। इसी मानसिक तनाव के चलते उसने आत्मघाती कदम उठाते हुए जहर खा लिया। हालत बिगड़ते देख परिजन उसे तुरंत एक निजी डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने जांच के बाद महिला को मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुँची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए रुड़की सिविल अस्पताल भेज दिया। कोतवाली भगवानपुर के प्रभारी निरीक्षक राजीव रोथाण ने बताया कि पुलिस मामले की गहराई से जांच कर रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। अभी तक परिजनों की ओर से कोई लिखित शिकायत (तहरीर) नहीं मिली है। शिकायत मिलते ही मामले में कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

हज यात्रियों की तीसरी किस्त की निर्धारित

शाह टाइम्स संवाददाता

पिरान कलियर। हज कमेटी ऑफ इण्डिया मुम्बई की ओर से हज यात्रियों की तीसरी किस्त निर्धारित कर दी गई है। उत्तराखंड राज्य हज समिति के ईओ मो आरिफ ने बताया कि हज यात्रा 2026 पर जाने वाले जिन हज आवेदकों ने हज कमेटी ऑफ इण्डिया, मुम्बई के माध्यम से कुर्बानी करने वाले हज आवेदकों को धनराशि रूपये 86,580 प्रति हज आवेदक तथा जिन हज आवेदकों ने कुर्बानी नहीं करने का निर्णय लिया था उनको रूपये 69,300 प्रति हज आवेदक हज कमेटी ऑफ इण्डिया मुम्बई के भारतीय स्टेट बैंक अथवा युनियन बैंक ऑफ इण्डिया के खाते में पे-इन-स्लिप हज कमेटी ऑफ इण्डिया की वेबसाईट पर ऑन लाईन जमा की जा सकती है। तीसरी किस्त की धनराशि जमा करने की अन्तिम तिथि 31 मार्च, 2026 निर्धारित की गई है। धनराशि जमा किये जाने के बाद पे-इन-स्लिप अतिशीघ्र उत्तराखण्ड राज्य हज समिति हज हाउस पिरान कलियर में जमा कराया जाना अनिवार्य है।

13 साल से फरार वारंटी को हरियाणा से दबोचा

रुड़की। गंगनहर पुलिस ने 13 साल से फरार वारंटी को दबोचकर कोर्ट में पेश किया। एसएसपी नवनीत सिंह के निर्देश पर वारंटियों एवं फरार अभियुक्तों की धर पकड़ के लिए जिलेभर में चलाए जा रहे अभियान के क्रम में कोतवाली गंगनहर पुलिस ने दिनाँक 23.03.2026 को वारंटी पंकज शर्मा को सिरसा हरियाणा से गिरफ्तार किया। पुलिस टीम की पकड़ में आया आरोपी विगत 13 साल से लगातार फरार चल रहा था। वारंटी को न्यायालय के समक्ष पेश किय जा रहा है। पकड़ा गया वारंटी-पंकज शर्मा पुत्र राजकुमार नि0 सिरसा हरियाणा है।

टीचर्स एसोसिएशन ने कैबिनेट मंत्री बत्रा को सौंपा ज्ञापन

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। उत्तरांचल स्टेट प्राइमरी टीचर्स एसोसिएशन, हरिद्वार के प्रतिनिधि मंडल ने आज कैबिनेट मंत्री प्रदीप बत्रा से शिष्टाचार भेंट कर शिक्षक हितों से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर ज्ञापन सौंपा। प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व जिलाध्यक्ष अश्विनी चौहान ने किया, जबकि जिला मंत्री हेमेन्द्र चौहान, जिला कोषाध्यक्ष अरविंद कुमार शर्मा सहित अन्य पदाधिकारी एवं शिक्षकगण भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर जिलाध्यक्ष अश्विनी चौहान ने कहा कि प्रदेश के शिक्षक लंबे समय से पुरानी पेंशन योजना की बहाली की अपेक्षा कर रहे हैं, क्योंकि वर्तमान नई पेंशन प्रणाली में भविष्य की आर्थिक सुरक्षा को लेकर अनिश्चितता बनी रहती है। उन्होंने कहा कि पुरानी पेंशन केवल एक आर्थिक व्यवस्था नहीं, बल्कि कर्मचारियों के सम्मानजनक एवं सुरक्षित जीवन का आधार है। जिला मंत्री हेमेन्द्र चौहान ने कहा कि प्रदेश के अधिकांश राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों का अभाव गंभीर समस्या बना हुआ है। इसके कारण विद्यालयों में स्वच्छता, रख-रखाव एवं अन्य व्यवस्थाएं प्रभावित होती हैं। जिला कोषाध्यक्ष अरविंद कुमार शर्मा ने कहा कि शिक्षक समाज प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ है और उनकी समस्याओं का समाधान होने से ही शिक्षा व्यवस्था मजबूत होगी। प्रतिनिधि मंडल ने कैबिनेट मंत्री प्रदीप बत्रा को उनके दायित्व ग्रहण करने पर बधाई एवं शुभकामनाएं भी प्रेषित कीं। इस पर मंत्री जी ने आश्वस्त किया कि शिक्षक समाज की समस्याओं पर संवेदनशीलता के साथ विचार किया जाएगा और शासन स्तर पर आवश्यक कार्यवाही के लिए प्रयास किए जाएंगे। प्रतिनिधि मंडल में उत्तरांचल स्टेट प्राइमरी टीचर्स एसोसिएशन (उत्तराखंड राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ) हरिद्वार के जिलाध्यक्षअश्विनी चौहान, हेमेंद्र चौहान महामंत्री, अरविंद शर्मा कोषाध्यक्ष, राजेश चौहान, दिनेश बड़वाल, राजीव कुमार शर्मा, वीर सिंह पँवार, अमरीश वर्मा रविन्द्र अग्रवाल शामिल रहे।

अंतर्राष्ट्रीय गुर्जर दिवस पर पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष

चौ. राजेंद्र सिंह का वन गुर्जर बस्ती में स्वागत

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। अंतरराष्ट्रीय गुर्जर दिवस पर पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष चौधरी राजेंद्र सिंह का गुर्जर बस्ती हरिद्वार में जोरदार स्वागत किया गया इस अवसर परपूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी यतीश्वरानंद भी मौजूद रहे।

हरिद्वार ग्रामीण विधान सभा के सिद्ध स्रोत, में वन गुर्जर बस्ती हरिद्वार में 22 मार्च: अंतर्ष्ट्रीय गुर्जर दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमे मुख्य अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी श्री यतिश्रानंद जी महाराज रहे और विशिष्टि अथिति चौधरी राजेंद्र सिंह पूर्व अध्यक्ष जिला पंचायत हरिद्वार साथ में निपेन्द्र चौधरी परमोद चेयरमैन दूध संघ हरिद्वार रोसन दिन बाबू खटाना विकास खटाना प्रधान सफी लोधा मीर हमजा मुमताज लोधा गनी कसाना के पी तोमर प्रो सुशील भाटी कर्नल देवानंद आदि उपस्थित रहे।

पीएलआई नीति के विरोध में बैंक कर्मियों का प्रदर्शन

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियंस के आह्वान पर देशभर के बैंकों में स्केल-III तक के कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने सरकार की परफॉर्मेंस लिंक्ड इंसेंटिव नीति के विरोध में काले रिबन एवं बैज लगाकर प्रदर्शन किया। इसी क्रम में रुड़की इकाई के अंतर्गत भी विभिन्न बैंकों के कर्मचारियों और अधिकारियों ने पूरे दिन कार्य करते हुए शांतिपूर्ण तरीके से अपना विरोध दर्ज कराया।

यूनियनों के अनुसार, सरकार द्वारा स्केल-III तक के कर्मचारियों को 3 से 15 दिनों का चप्प दिया जा रहा है, जबकि उच्च पदस्थ अधिकारियों को 360/365 दिनों का इंसेंटिव देने का निर्णय लिया गया है। इसे कर्मचारियों के साथ अन्यायपूर्ण बताते हुए यूनियनों ने कड़ा विरोध जताया है। बैंक यूनियनों का कहना है कि यह भारी असमानता टीम वर्क की भावना के खिलाफ है और इससे बैंकिंग व्यवस्था में असंतुलन पैदा होगा। उनका यह भी मानना है कि इस अतिरिक्त राशि का उपयोग बैंकों में स्टाफ की कमी को दूर करने और ग्राहक सेवाओं में सुधार के लिए किया जा सकता था। रुड़की में आयोजित विरोध प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों ने काले रिबन और बैज पहनकर कार्य किया और सरकार से इस निर्णय को वापस लेने की मांग की। यूनियनों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही इस मुद्दे पर सकारात्मक निर्णय नहीं लिया गया, तो बैंक कर्मचारी हड़ताल पर जाने के लिए बाध्य होंगे। यूएफबीयू रुड़की इकाई के संयोजक मन्नू माकिन ने कहा कि यह आदेश बैंक कर्मियों के बीच विभाजन पैदा करने और निम्न व मध्यम वर्ग के कर्मचारियों का मनोबल गिराने वाला है, जिसका लगातार विरोध किया जाएगा।

लक्सर-भगवानपुर में सरकार के चार साल बेमिसाल का जश्न

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर/भगवानपुर। राज्य सरकार के चार वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में "जन-जन की सरकार, चार साल बेमिसाल" कार्यक्रम श्रृंखला के तहत आज दूसरे दिन जनपद की तीन विकासखंडों में कार्यक्रम आयोजित किया गया, विकासखंड नारसन का कार्यक्रम परिवहन मंत्री प्रदीप बत्रा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए परिवहन मंत्री प्रदीप बत्रा ने कहा कि प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के कुशल नेतृत्व में विगत चार वर्ष के कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए है एवं कई महत्वकांक्षी योजनाओं को धरातल पर उतारकर योजनाओं का लाभ आमजन मानस को उपलब्ध हो रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार की नीतियो का लाभ समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य प्रदेश को विकास की दिशा में अग्रणी बनाना है और इसके लिए सभी विभाग समन्वय के साथ कार्य कर रहे हैं। उन्होंने जनता से अपील की कि वे इन योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाएं और प्रदेश के विकास में अपनी भागीदारी निभाएं। मंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले समय में भी सरकार इसी प्रकार जनसेवा के कार्यों को आगे बढ़ाते हुए प्रदेश को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष किरण चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य सरकार द्वारा पिछले चार वर्षों में विकास के अनेक आयाम स्थापित किए गए हैं। सरकार ने गांव, गरीब, किसान, युवा और महिलाओं के कल्याण के लिए कई जनहितकारी योजनाएं संचालित की हैं, जिनका लाभ सीधे आम जनता तक पहुंच रहा है। कार्यक्रम में राज्य मंत्री देशराज कर्णवाल ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इन चार वर्षों में प्रदेश प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है तथा मुख्यमंत्री के निर्देशन में जन जन की सरकार जन जन के द्वारा कार्यक्रम आयोजित किए गया है,जिसके माध्यम से जनता की समस्याओं का समाधान उन्हीं के द्वारा पर किया गया है। वही भगवानपुर में राज्य सरकार के चार वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में "जन-जन की सरकार, चार साल बेमिसाल" कार्यक्रम में उपजिलाधिकारी भगवानपुर देवेंद्र सिंह नेगी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न विभागों द्वारा सरकार की संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं के लगाए गए स्टालों के माध्यम से क्षेत्रवासियों को उपलब्ध कराई गई। बाल विकास विभाग के माध्यम से 02 महिलाओं को महालक्ष्मी कीट उपलब्ध कराया गए।

इंडियन ऑयल की लक्सर में ऑफ-साइट मॉक ड्रिल

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (उत्तरी क्षेत्र पाइपलाइंस, रुड़की) द्वारा मंगलवार को लक्सर तहसील के ग्राम खड़ंजा कुतुबपुर में एक ऑफ-साइट मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। वित्तीय वर्ष 2025-26 के सुरक्षा मानकों के तहत आयोजित इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य पेट्रोलियम पाइपलाइन में किसी भी संभावित रिसाव या आगजनी जैसी आपात स्थिति से निपटने के लिए सिस्टम की तत्परता और आपसी समन्वय की जांच करना था। काल्पनिक परिदृश्य से जांची गई सतर्कता मॉक ड्रिल के दौरान एक चुनौतीपूर्ण और यथार्थवादी स्थिति बनाई गई। परिदृश्य के अनुसार, पाइपलाइन से तेल रिसाव के बाद एक ग्रामीण द्वारा फेंकी गई जलती बीड़ी से आग लग जाती है। अभ्यास में दिखाया गया कि कैसे घटना की सूचना मिलते ही क्षेत्र की तुरंत घेराबंदी की गई। आग पर त्वरित नियंत्रण पाया गयाक्षतिग्रस्त पाइपलाइन की मरम्मत प्रक्रिया को कुशलतापूर्वक अंजाम दिया गयाजीवन रक्षा और चिकित्सा सहायता सुरक्षा के साथ-साथ मानवीय सहायता का भी प्रदर्शन किया गया। ड्रिल के दौरान आग में झुलसे व्यक्ति को प्राथमिक उपचार देने और एम्बुलेंस के माध्यम से अस्पताल पहुँचाने की प्रक्रिया का सफल रिहर्सल किया गया विशेषज्ञों और प्रशासन की उपस्थितिइस कार्यक्रम में इंडियन ऑयल और स्थानीय प्रशासन के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे, जिनमें मुख्य रूप से शामिल थे। मुख्य प्रचालन प्रबंधक पुष्पेन्द्र कुमार, द्वितीय प्रभारी नवनीत कुमार, संचालन प्रभारी आशीष वर्मा प्रशासन व पुलिस: थाना लक्सर से उपनिरीक्षक कर्मवीर सिंह व आशीष भट्ट, फायर स्टेशन से हेड कांस्टेबल रवि थापा चिकित्सा: लक्सर के चिकित्सक डॉ. दुष्यंत सिंहजागरूकता ही बचाव हैकार्यक्रम के समापन पर मुख्य प्रचालन प्रबंधक पुष्पेन्द्र कुमार ने कहा, ष्आपात स्थिति में पूर्व निर्धारित आपदा प्रबंधन योजना का प्रभावी क्रियान्वयनहीजान-माल के नुकसान को कम कर सकता है इस तरह के आयोजनों से न केवल विभाग की तत्परता बढ़ती है बल्कि स्थानीय प्रशासन और आम जनता में भी सुरक्षा के प्रति जागरूकता आती है।

संबंध विच्छेद-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र सुहेल का मेरे व मेरे परिवार के प्रति आचरण ठीक ना होने के कारण मैंने सुहेल को अपनी तमाम चल-अचल संपत्ति से बेदखलकर संबंध-विच्छेद कर लिया है आज के बाद सुहेल के किसी भी अनैतिक कृत्य व लेनदेन की मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

जुल्फिकार पुत्र नूर मौहम्मद नि. मोहल्ला काशीपुरी रुड़की, हरिद्वार।

संघर्ष में एक युवती समेत चार घायल

शाह टाइम्स संवाददाता

लंढौरा। मंगलवार की दोपहर मामूली कहासुनी को लेकर को दो पक्षों में संघर्ष हो गया। मारपीट में एक युवती समेत चार लोग घायल हो गए। पुलिस ने घायलों को मेडिकल परीक्षण के लिए भेज दिया है। कस्बे के मोहल्ला बाहर किला में मंगलवार की दोपहर दो महिलाओं के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई। कुछ देर बाद दोनों पक्षों के लोग लाठी-डंडे लेकर आपस में भिड़ गए। मारपीट में शहबाज, अरशद, हुसैन और मुस्कान गंभीर रूप से घायल हो गए। मारपीट के दौरान मोहल्ले अफरातफरी का माहौल बन रहा। मौके पर पहुंची पुलिस ने स्थिति पर काबू पाया। पुलिस ने घायलों को मेडिकल परीक्षण पर भेज दिया है। चौकी प्रभारी अशोक सिरस्वाल का कहना है कि मेडिकल रिपोर्ट मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

मंगलौर कोतवाली में किया माल नीलाम

मंगलौर। न्यायालय के आदेश पर मंगलौर कोतवाली में जमा हुआ मुकदमा संबंधित माल का निस्तारण कमेटी द्वारा किया गया। माननीय न्यायालय रुड़की के आदेश पर कोतवाली मंगलौर पर वर्ष 2011 में पंजीकृत धारा 420,467, 468 आईपीसी से संबंधित माल मुकदमती (सरिया) को न्यायालय द्वारा गठित कमेटी के सदस्य सीओ मंगलौर, तहसीलदार रुड़की, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली मंगलौर आदि द्वारा नियम अनुसार नीलामी करते हुए नीलामी में छोड़ा गया। अग्रिम कार्रवाई की जा रही है। कोतवाली में मुकदमा संबंधित माल के निस्तारण के लिए माल निस्तारण के लिए कमेटी बनाई गई थी कमेटी द्वारा नीलामी बोली लगाई गई बोली दाताओं ने अपने-अपने हिसाब से माल की बोली लगाकर माल की नीलामी अपने नाम छुटाए।

डिजाइन इनोवेशन सेंटर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की में

'एमएसएमई इनोवेटिव स्कीम' पर जागरूकता कार्यशाला

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। डिजाइन इनोवेशन सेंटर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की (आईआईटी रुड़की) ने 'एमएसएमई इनोवेटिव (डिजाइन) स्कीम': उद्योग-अकादमिक सहभागिता पर एक जागरूकता सत्र का आयोजन किया। यह कार्यक्रम डिजाइन विभाग, आईआईटी रुड़की; विकास एवं सुविधा कार्यालय (एमएसएमई-डीएफओ), हल्द्वानी एवं देहरादून के सहयोग से होटल रामाडा बाय विंडहैम, देहरादून, उत्तराखंड में आयोजित किया गया। इस योजना का मुख्य उद्देश्य भारतीय विनिर्माण क्षेत्र और डिजाइन विशेषज्ञता/डिजाइन समुदाय को एक साझा मंच पर लाना है। यह योजना वास्तविक समय की डिजाइन समस्याओं के लिए लागत-प्रभावी समाधान, नए उत्पाद विकास, उनके निरंतर सुधार तथा मौजूदा/नए उत्पादों में मूल्य संवर्धन हेतु अनुभवी डिजाइनरों द्वारा विशेषज्ञ परामर्श प्रदान करने का लक्ष्य रखती है।

प्रो. इंदरदीप सिंह, अधिष्ठाता (इन्फ्रास्ट्रक्चर) एवं समन्वयक, डिजाइन इनोवेशन सेंटर, आईआईटी रुड़की ने चालू वित्तीय वर्ष में एमएसएमई इनोवेटिव (डिजाइन) स्कीम के अंतर्गत चार कार्यक्रमों की श्रृंखला का समन्वयन किया। डीआईसी, आईआईटी रुड़की के अधिकारियों ने एमएसएमई इकाइयों एवं अन्य संगठनों से आए प्रतिभागियों को योजना के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की। डॉ. एस.के. नेवार, निदेशक एवं प्रमुख, विकास एवं सुविधा कार्यालय (एमएसएमई-डीएफओ), हल्द्वानी एवं देहरादून; श्री एस.सी. कंडपाल, उप निदेशक, विकास एवं सुविधा कार्यालय (डीएफओ-एमएसएमई), हल्द्वानी; श्री अमित मोहन, सहायक निदेशक, विकास एवं सुविधा कार्यालय (डीएफओ-एमएसएमई), हल्द्वानी; तथा विभिन्न सरकारी एजेंसियों के अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त, क्षेत्रीय उद्योगों एवं एमएसएमई इकाइयों के प्रतिनिधियों ने इस चर्चा से लाभ प्राप्त किया।

किशोरी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता

लंढौरा। रेलवे स्टेशन के समीप स्थित कॉलोनी से एक किशोरी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई पिडित पिता ने दो लोगों पर अपनी पुत्री को बहला फुसलाकर साथ ले जाने का आरोप लगाते हुए पुलिस को तहरीर दी है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

लंढौरा रेलवे स्टेशन के समीप स्थित कॉलोनी निवासी एक व्यक्ति ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि 22 मार्च की रात उसकी 14 वर्षीय पुत्री संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई पिडित का कहना है कि तलाश के दौरान उसके ही पडोष्स में रहने वाला एक युवक अपने एक अन्य साथी की मदद से उसकी पुत्री को बहला फुसलाकर अपने साथ मोटरसाइकिल पर बैठाकर ले जाता दिखाई दिया। पिडित पिता ने अपनी पुत्री के साथ किसी अनहोनी की आशंका जताते हुए पुलिस से तलाश की गुहार लगाई है। चौकी प्रभारी अशोक सिरस्वाल ने बताया कि मामले में जांच के बाद कारवाई जाएगी।

शाह टाइम्स

सम्पादकीय

बुधवार, 25 मार्च 2026

Dainikshahtimes@gmail.com For Articles

कैसे रुकेगा युद्ध

मध्य पूर्व में चल रहा संघर्ष अब पूरी दुनिया को अपनी चपेट में लेता दिखाई दे रहा है। 24 दिन गुजर जाने के बावजूद इस युद्ध में कोई कमी आती दिखाई नहीं दे रही है। हां थोड़ी आशा उस समय जरूर बंधी थी, जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने 48 घंटों के अल्टीमेटम के बाद ईरान पर हमला करने के अपने फैसले पर पुनर्विचार कर उसको पांच दिन के लिए टाल दिया था। ट्रम्प ने दावा किया था कि ऐसा वह इसलिए कर रहे हैं ताकि पर्दे के पीछे चल रही ईरान से बातचीत किसी अच्छे नतीजे पर पहुंचे। उसके सकारात्मक परिणाम आएंगे। ट्रम्प के इस फैसले के तुरंत बाद ईरान की तरफ से जवाब आया कि ऐसी कोई बातचीत नहीं चल रही है और बातचीत अगर कोई होगी भी तो वह ईरान की शर्तों पर होगी। जिस तरह दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर हमले किए, उससे भी पांच दिन के संघर्ष विराम का कोई मतलब नहीं रह गया है। बताया जा रहा है कि ईरान ने इस्राईल के तेल अवीव सहित कई शहरों पर मिसाइल से हमले किए, तो वहीं इस्राईल अमेरिका ने भी ईरान पर ताबड़तोड़ बमबारी की। हालांकि ट्रम्प अभी भी कह रहे हैं कि बातचीत जारी है, लेकिन ऐसा कहते हुए वह यह कहने से भी नहीं चूके कि ईरान अमेरिका की शर्तों के अनुसार ही चलेगा और वह ईरान को न्यूक्लियर पॉवर कभी नहीं बनने देंगे। साथ ही उनका दावा रहा है कि अमेरिका ने ईरान को भारी क्षति पहुंचाई है और उसकी सेना लड़ने की स्थिति में नहीं है, जबकि जमीनी हकीकत उससे अलग ही दिखाई दे रही है। जहां तक बात भारत की है, भारत भी यही चाहता है कि किसी भी तरह यह युद्ध रुके। मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से इस संबंध में ट्रम्प ने टेलीफोन पर बात भी की। इस बातचीत में कहा जा रहा है कि होर्मुज स्टेट को खोलने से लेकर अन्य तमाम बातों पर बातचीत हुई और दोनों देशों के बीच सहमति बनती दिखाई दी। इसमें कोई दोराय नहीं कि हर कोई चाहता है कि यह युद्ध रुके। उसका कारण भी है, भले ही यह युद्ध ईरान-अमेरिका/इस्राईल के बीच लड़ा जा रहा हो, लेकिन इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ रहा है। तेल, गैस का संकट लगभग प्रत्येक देश के सामने खड़ हो गया है, क्योंकि जिस तरह दोनों की ओर से एक-दूसरे के ऊर्जा संसाधनों पर हमले किए जा रहे हैं, वह सभी के लिए विनाशकारी साबित हो रहे हैं। जाहिर है हर देश का नेतृत्व इस समय चिंतित दशा में है और नहीं चाहता कि किसी भी सूरत में यह युद्ध आगे बढ़े। अमेरिकी राष्ट्रपति जिस तरह की भाषा बोल रहे हैं, उससे तो लगता है कि वह युद्ध से बाहर निकलना चाहते हैं, लेकिन उनका सहयोगी देश इस्राईल उनसे सहमत होता दिखाई नहीं दे रहा है। जब पांच दिन के संघर्ष विराम की घोषणा ट्रम्प ने की थी, तब भी इस्राईली प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने इस पर ठंडी प्रतिक्रिया दी थी। अभी भी विश्व के बड़े नेता अपनी जिम्मेदारी को समझें, ताकि विनाश को रोका जा सके।

अमेरिका के प्रभाव में काम करते हैं पीएम

पूर्व निर्धारित केरल दौरे के कारण बैठक में शामिल नहीं हो सकूंगा, इस मुद्दे पर चर्चा जरूरी है, लेकिन सरकार पहले ही गंभीर गलती कर चुकी है, व्यवस्था का ढांचा ही कमजोर कर दिया गया है, जिसे सुधारने में काफी समय लगेगा, पीएम नरेंद्र मोदी स्वतंत्र निर्णय लेने के बजाय अमेरिका और इस्राईल के प्रभाव में काम करते हैं और किसानों व युवाओं के हित में प्रभावी कदम नहीं उठा पा रहे हैं।

-राहुल गांधी, नेता विपक्ष

शिक्षा का बजट घटाया, तो पीढ़ियां माफ नहीं करेंगी

पवन सिंह

द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) समाप्त हो चुका था, ब्रिटेन जबरदस्त आर्थिक संकट का सामना कर रहा था। ब्रिटिश संसद चल रही थी और उस वक्त इंग्लैंड के प्रधानमंत्री थे क्लिमेंट एटली। बजट पर बहस जारी थी। तमाम ब्रिटिश सांसदों ने इंग्लैंड के प्रधानमंत्री क्लिमेंट एटली से कहा आपने रक्षा से लेकर तमाम मदों में बजट में जबरदस्त कटौती कर दी है, लेकिन शिक्षा के बजट में कटौती क्यों नहीं की? इंग्लैंड के प्रधानमंत्री क्लिमेंट एटली ने मुस्कुराते हुए कहा-हम युद्ध से हुए नुकसान की भरपाई तो कर लेंगे, लेकिन अगर बजट के अभाव में हमारी पीढ़ियों की शिक्षा प्रभावित हुई तो इसका नुकसान कोई नहीं भर पाएगा। यह कह कर उन्होंने शिक्षा के बजट में कटौती करने से साफ मना कर दिया। ब्रिटेन में वर्ष, 1944 के बटलर शिक्षा अधिनियम के तहत प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा को अनिवार्य और मुफ्त बनाने पर जोर दिया गया, जिससे ब्रिटेन में शिक्षा का महत्व बना रहा।

यह सुखद आश्चर्य है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ही इंग्लैंड में वर्ष, 1944 में ऐतिहासिक शिक्षा सुधार पारित किया गया, जिसने राज्य द्वारा वित्तपोषित शिक्षा के लिए एक ठोस आधार प्रदान किया। एक ओर युद्ध चला रहा हो और दूसरी ओर ब्रिटेन अपनी शिक्षा, अपने स्कूलों, कालेजों को उन्नत बनाने के प्रयास कर रहा था, ऐसा उदाहरण दुनियां में कहीं और देखने को नहीं मिलता। तत्कालीन सरकार ने अपनी कल्याणकारी राज्य की सोच को प्राथमिकता देते हुए शिक्षा और स्वास्थ्य को विशेष महत्व दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि युद्ध के बाद ब्रिटेन में नई शिक्षा प्रणालियां विकसित हुईं। एटली सरकार ने 1944 के जिस शिक्षा अधिनियम को लागू किया, उसे श्बटलर एक्टश कहा जाता है, जिसने शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार किए। एटली ने कल्याणकारी राज्य की नीति अपनाई।

इंग्लैंड में आरंभ से ही शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और न्यू इनोवेशन ही वह मूल था जिसने वर्ष, 1760 से वर्ष, 1840 के बीच इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति आरंभ की। हस्तशिल्प का सफर मशीनों तक आया। भाप के इंजन ने सब कुछ बदल कर रख दिया। कोयला औद्योगिक क्रांति का प्रमुख आधार बन कर निकला और लोहा उद्योग से लेकर कपड़ा उद्योग एक नई इबारत लिखने लगा। कारखाने लगे तो शहरीकरण हुआ। और फिर सब कुछ तेजी से बदलना आरंभ हुआ। विश्वयुद्ध हो या महामारी, वैश्विक आर्थिक स्थिति नकारात्मकता में हो या कोई अन्य कारण इंग्लैंड ने उसकी आंच कभी भी अपने कालेजों व विश्वविद्यालयों पर नहीं आने दी। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय वर्ष, 1096 में स्थापित हुआ, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय वर्ष, 1209 में, यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन वर्ष, 1826 में, मैनचेस्टर विश्वविद्यालय वर्ष, 1824 में, किंग्स कॉलेज लंदन वर्ष, 1829 में, इंपीरियल कॉलेज लंदन वर्ष, 1907 में और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस वर्ष, 1895 में स्थापित हुआ। जबकि दरहम विश्वविद्यालय वर्ष, 1832 में, ब्रिस्टल विश्वविद्यालय वर्ष, 1876 में और वारविक विश्वविद्यालय वर्ष 1965 में स्थापित हुए। इनकी वित्तीय कटौती किसी भी सूरत में कभी नहीं की गई।

उधर चीन ने शिक्षा, तकनीक, न्यू इनोवेशन के महत्व को समझा और उस पर कभी कोई समझौता नहीं किया। इस बीच चीन के थिंक टैंक ने लगातार इंग्लैंड सहित अन्य यूरोपीय देशों में हुई प्रगति पर नजरें बनाए रखीं और उसने भी शिक्षा और अनुसंधान को अपना हथियार बनाया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यानी 1945 के बाद से ही चीन ने कमर कसी और उसने वर्ष, 1949 में 20 से 40 प्रतिशत की रफ्तार से साक्षरता दर हासिल की और वर्ष 2000 आते-आते चीन की करीब 98.4 प्रतिशत की आबादी शैक्षिक रूप से समृद्ध हो चुकी थी। इसके साथ ही चीन ने शिक्षा और अनुसंधान यानी R-D में जो छलांग लगाई है, वह दूसरे देशों के लिए एक सीख है। यह R-D के क्षेत्र की अभूतपूर्व क्रांति है। इसने देखते ही देखते विगत 30 सालों में चीन को तकनीकी महाशक्ति बना दिया। चीन ने वर्ष, 1986 में अनिवार्य शिक्षा कानून बनाया और वर्ष, 1999 के बाद R-D में भारी निवेश किया। यह निवेश वर्ष, 2011 में +100 बिलियन डॉलर से अधिक का था। आज चीन 3,000 विश्वविद्यालयों के साथ शैक्षणिक, बौद्धिक, तकनीक, साइंस आदि क्षेत्रों में हर बार कोई न कोई नई खोज सामने रख कर आश्चर्यचकित कर देता है। R-D यानी अनुसंधान और विकास में चीन ने सालाना 20 प्रतिशत की वृद्धि हासिल की है, जिसने चीन को एआई, क्वांटम कंप्यूटिंग और बायोटेक में अग्रणी बना दिया। इसके अलावा चीन ने अपने विश्व. विद्यालयों का जबरदस्त आधुनिकीकरण किया और 147 विश्वविद्यालयों को विश्व स्तरीय बनाने के लिए विशेष फंड और संसाधन झोंक दिए। आज चीन ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग व स्मार्ट क्लासरूम में दुनिया में सबसे आगे है, जो AI और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करते हैं। इसके अलावा चीन ने अमेरिकी माडल की कापी की और विश्व भर की विदेशी प्रतिभाओं को चीन आमंत्रित किया। चीन लगातार विदेशी छात्रों की संख्या को बढ़ा रहा है। यह संख्या 2024 तक करीब 5 लाख तक पहुंच चुकी है। इससे उलट हमारे देश में सबसे बुरी गत शिक्षा, अनुसंधान और न्यू इनोवेशन को लेकर हुई। इसे बढ़ाने की बजाए इसे गर्त में झोंक दिया गया। परिणाम यह हुआ कि मैन्युफैक्चरिंग ग्रोथ चरमरा गई और धीरे-धीरे हम तकनीकी मामले में चीन पर निर्भर होते चले गए। 2024 के आंकड़ों के अनुसार, चीन से भारत में विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण (लगभग 47.67 अरब डॉलर) और मशीनरी, परमाणु रिएक्टर व बॉयलर (लगभग 27 अरब डॉलर) का सबसे अधिक आयात किया गया। ये दोनों श्रेणियां मिलकर 70 अरब डॉलर से अधिक की हैं। वर्ष, 2024-25 में चीन से भारत को प्रमुख मशीनरी आयात में विद्युत-इलेक्ट्रॉनिक उपकरण- 38 अरब डॉलर से 47 अरब डॉलर से अधिक और परमाणु रिएक्टर और बॉयलर मशीन. री-21.7 अरब डॉलर से 27 अरब डॉलर के अलावा अन्य तकनीकी उपकरण (ऑप्टिकल, मेडिकल)- 2.56 अरब डॉलर से 2.8 अरब डॉलर रहा। चीन शिक्षा और अनुसंधान R-D में दुनिया के सबसे बड़े निवेशकों में से एक है। 2026 में, चीन ने अपने विज्ञान और प्रौद्योगिकी बजट को बढ़ाकर 426.4 बिलियन युआन (लगभग +59-60 बिलियन) कर दिया है, जो 2025 से 10 प्रतिशत अधिक है। समग्र शिक्षा बजट 800 बिलियन डॉलर से अधिक का है, जो उच्च-गुणवत्ता वाली शिक्षा और तकनीकी विकास पर भारी फोकस दर्शाता है। मुझे यह लिखने में कोई गुरेज नहीं है कि आज मशीनरी और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के मामले में हम चीन पर निर्भर हैं, क्योंकि हमने अपने देश में कभी भी साइंटिफिक एप्टीट्यूट या साइंटिफिक टैंपरामेंट डेवलप होने ही नहीं दिया। शिक्षा और अनुसंधान हमारे लिए कभी प्राथमिकता में रहा ही नहीं। हमारे पास तथाकथित कामों के लिए तो करोड़ों रुपए होते हैं, लेकिन स्कूलों और विश्वविद्यालयों के लिए, रिसर्च के लिए बजट न के बराबर होता है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

27 मार्च को नेपाल में सत्तारूढ़ होगी बालेन सरकार

राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी का जन्म अभी पिछले चुनाव में ही हुआ है। पहली मर्तबा चुनाव में उतरी इस पार्टी को 20 सीटें हासिल हुई थी। इस बार के चुनाव में इस पार्टी की सुनामी थी जिसमें पुरानी पार्टियों के सारे धुरंधर धराशाई हो गए। देखा जाए तो नेपाल के लोकतांत्रिक इतिहास में सर्वथा पहली बार किसी पार्टी की पूर्ण बहुमत की सरकार बनने जा रही है। बालेन सरकार के मंत्रिमंडल को लेकर नेपाल के पड़ोसी देशों में भी उत्सुकता देखी जा रही है। अपेक्षाकृत राजनीतिक रूप से बिल्कुल ही अपरिपक्व बालेन सरकार नेपाल के लिए क्या कुछ कर पाती है, यह देखना दिलचस्प होगा।

यशोदा श्रीवास्तव

नेपाल में 27 मार्च को गठन होने जा रही नई सरकार को लेकर नेपाली जनता में उत्सुकता का माहौल है। इसीके साथ हर वर्ग में आशा और विश्वास भी है। चारों ओर चर्चा है कि अब नेपाल को परिवर्तन की अनुभूति होगी। मायूसी और निराशा के बादल छटेंगे। अबकी बार बालेन सरकार का नारा हर ओर गुंजायमान है। राष्ट्रपति राम चंद्र पौडेल नवनियुक्त प्रधानमंत्री और मंत्रियों को शपथ ग्रहण कराएंगे। काठमांडू में जगह जगह बालेन शाह, रवि लामी छाने और सुडान गुरूंग के पोस्टर लगाए गए हैं। अंतरिम सरकार की प्रधानमंत्री सुशीला कार्की नई सरकार को सत्ता सौंपने की तैयारी में व्यस्त हैं। प्रधानमंत्री और मंत्रियों के शपथ से पहले 26 मार्च को सभी सांसदों का शपथ ग्रहण होगा। गौरतलब है कि नेपाल करीब चार सौ सालों तक राजशाही के अधीन था। पृथ्वी नारायण शाह को नेपाल का जनक माना जाता है। राजशाही से मुक्ति के लिए राजनीतिक दलों ने यदा कदा आंदोलन जरूर चलाया, लेकिन इसमें कामयाबी 2008 में जनयुद्ध नाम से चले हिंसक आंदोलन के बाद मिली। माओइस्ट नेता प्रचंड और उनके सहयोगियों के नेतृत्व में सालों साल चले इस आंदोलन में करीब पांच हजार लोग मारे गए। राजा समर्थक राजनेताओं और जमिन्दारों के घर जलाए गए उनकी हत्याएं की गईं। इस भारी खून खराबा से घबड़ाए तत्कालीन नरेश ज्ञानेंद्र ने सत्ता त्यागने की घोषणा की। कहना न होगा नेपाल को लोकतंत्र के सूर्योदय के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ी।

2008 में हुए संविधान सभा के चुनाव में अपूर्ण बहुमत के बावजूद प्रचंड प्रधानमंत्री बने लेकिन नौ माह बाद ही उन्हें सत्ता छोड़ने को मजबूर होना पड़ा। उसके बाद 2026 में संपन्न हुए चुनाव तक नेपाल को अस्थिर और गठबंधन सरकार का बोझ ढोने को मजबूर होना पड़ा। इस दौरान करीब 13 प्रधानमंत्री आए गए लेकिन नेपाल जस का तस रहा। भ्रष्टाचार इस स्तर तक चरम पर पंहुच गया कि सत्ता और विपक्ष के शीर्ष नेताओं तक के हाथ इसमें सने हुए मिले। नेपाली जनता खुद को ठगा हुआ महसूस करने लगी। भ्रष्ट सरकारों की श्रृंखला में के पी शर्मा ओली अंतिम प्रधानमंत्री साबित हुए जिसे दुनिया ने देखा कि किस तरह जेन जी आंदोलनकारियों ने भारी अपमान के बीच सत्ता छोड़ने को मजबूर किया। इसके अलावा अन्य दूसरी पार्टियों के वरिष्ठ नेता भी किस कदर खेत खेत भागकर अपनी जान बचा पाए,यह भी दुनिया ने देखा। किसी सरकार के प्रति जनता जब गुस्सा करती है तो उसका क्या हश्र होता है, नेपाली जनता ने यह कर दिखाया। बहरहाल उसके बाद नेपाल में अंतरिम सरकार का गठन हुआ फिर छह महीने बाद चुनाव हुआ और इस चुनाव में सर्वथा पहली बार नेपाल को पूर्ण बहुमत की सरकार नसीब हुई। दरअसल नेपाली जनता को राजशाही से असल मुक्ति अब महसूस हुई, लेकिन अनुभूति होना अभी बाकी है। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी यानी जिस पार्टी की सरकार सत्तारूढ़ होने जा रही है, उससे जनता को बहुत ज्यादा उम्मीद है। इस उम्मीद पर खरा उतरना यद्यपि कि आसान नहीं है, लेकिन नई सरकार यदि पचास प्रतिशत ही जनता की अपेक्षा पर खरा उतर पाई तो यह बड़ी कामयाबी होगी। नई सरकार का मुखिया बालेन शाह का ही बनना तय है। इस पद को लेकर चल रही कयासबाजी और शंका आशंका सब निर्मूल है। बालेन मंत्रिमंडल में फिलहाल उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के अध्यक्ष रवि लामी छाने होंगे। जेन जी आंदोलन के नायक सुडान गुरूंग का भी मंत्री बनना तय माना जा रहा है। तराई जो सरकार में अहम भागीदारी से अछूता रह जाता रहा, यहां से भी कम से कम चार मंत्री होंगे। काफी संभावना है भारत सीमा से सटे नेपाल के कपिलवस्तु जिले से सांसद चुने गए पूर्व पुलिस अधिकारी विक्रम सिंह थापा को बालेन शाह सरकार में महत्वपूर्ण मंत्रालय मिल सकता है। विक्रम सिंह थापा राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी से सांसद चुने गए हैं। बालेन मंत्रिमंडल में क्षेत्र और जाति संतुलन पर विशेष ध्यान होगा। बालेन मंत्रिमंडल में अपेक्षाकृत युवा चेहरे भी होंगे। इसे लेकर पार्टी के भीतर मंथन चल रहा है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

गणेश शंकर विद्यार्थी : वह शहादत जिसने पत्रकारिता को अमर कर दिया

श्वेता गोयल

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महासमर में जहां एक ओर तलवारों की खनक और बंदूकों की गूंज थी, वहीं दूसरी ओर एक ऐसी वैचारिक क्रांति की धारा भी प्रवाहित हो रही थी, जिसने जनमानस के अंतर्मन को झकझोर कर रख दिया था। इस वैचारिक क्रांति के पुरोधाओं में एक ऐसा नाम दैदीप्यमान नक्षत्र की भांति चमकता है, जिसने अपनी लेखनी को ही अपना अस्त्र बनाया और सत्य की बलिवेदी पर स्वयं को न्योछावर कर दिया। वह नाम है गणेश शंकर विद्यार्थी, जो एक संस्था, एक विचार और निर्भीक पत्रकारिता के जीवंत प्रतिमान थे। उनका व्यक्तित्व उस पारस पत्थर के समान था, जिसके स्पर्श से सामान्यजन भी राष्ट्रभक्ति के स्वर्ण में परिवर्तित हो जाते थे। उनकी जीवन यात्रा उस शाश्वत संघर्ष की गाथा है, जहां एक अकेला व्यक्ति अपनी नैतिक शक्ति के बल पर साम्राज्यवादी सत्ता की चूलें हिलाने का साहस रखता था। इलाहाबाद की पावन धरा पर 26 अक्तूबर 1890 को अतरसुइया के एक साधारण कायस्थ परिवार में जब इस बालक का जन्म हुआ तो किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि यह शिशु भविष्य में भारतीय पत्रकारिता का सूर्य बनेगा। पिता जयनारायण, जो स्वयं एक शिक्षक थे, ने गणेश को अनुशासन और ज्ञान की वह घुट्टी पिलाई, जिसने उनके भीतर सत्य के प्रति अटूट निष्ठा का बीजारोपण किया। यद्यपि उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू और अंग्रेजी के वातावरण में हुई किंतु उनके भीतर भारतीयता का जो ज्वार उमड़ रहा था, उसने उन्हें हिंदी साहित्य और राष्ट्रीय चिंतन की ओर मोड़ दिया। उनके भीतर की तड़प केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं थी बल्कि वे समाज की विसंगतियों और पराधीनता की बेड़ियों को देख रहे थे। यही कारण था कि उन्होंने अपने नाम के साथ 'विद्यार्थी' शब्द जोड़ा, जो इस बात का प्रतीक था कि वे जीवन के अंतिम क्षण तक एक जिज्ञासु और सीखने वाले साधक बने रहेंगे।

उनकी पत्रकारिता का अध्याय तब प्रारंभ हुआ, जब देश में स्वाधीनता की चेतना अंगड़ाइयां ले रही थी। 'कर्मयोगी' में पंडित सुंदरलाल के सान्निध्य में उन्होंने शब्दों की शक्ति को पहचाना। बाद में जब उन्हें पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसी महान विभूति ने 'सरस्वती' के संपादन का प्रस्ताव दिया तो यह किसी भी युवा लेखक के लिए एक महान उपलब्धि हो सकती थी किंतु विद्यार्थी जी का लक्ष्य केवल साहित्यिक परिष्कार नहीं था, वे तो उन शोषितों की आवाज बनना चाहते थे, जिनकी पुकार सत्ता के गलियारों तक नहीं पहुंचती थी। उन्होंने 'सरस्वती' के वैभव के स्थान पर 'अभ्युदय' के संघर्षपूर्ण मार्ग को चुना। उनका मानना था कि पत्रका. रिता केवल अक्षरों का विन्यास नहीं है बल्कि यह वह मशाल है, जो अंधेरे को चीरने का सामर्थ्य रखती है।

9 नवम्बर 1913 का दिन भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय की भांति अंकित है, जब कानपुर की तंग गलियों से 'प्रताप' का उदय हुआ। यह केवल एक साप्ताहिक पत्र नहीं था बल्कि फिरंगियों के विरुद्ध एक युद्धघोष था। 'प्रताप' के माध्यम से विद्यार्थी जी ने वह कर दिखाया, जो बड़ी-बड़ी सेनाएं नहीं कर पाती थी। उन्होंने किसानों की पीड़ा, मजदूरों का शोषण और रियासतों के अत्याचारों को अपनी स्याही से ऐसा उकेरा कि अंग्रेज सरकार के पसीने छूटने लगे। उनकी लेखनी में वह धार थी, जो सीधे जनमानस के हृदय को बेधती थी। उन्होंने पत्रकारिता को दरबारी संस्कृति से निकालकर गलियों और खेतों तक पहुंचाया। उनके लिए निष्पक्षता का अर्थ तटस्थता नहीं बल्कि सत्य के पक्ष में खड़े होकर अन्याय से लोहा लेना था। अंग्रेजी हुकूमत के लिए विद्यार्थी जी एक कांटा बन चुके थे। उन पर अनगिनत मुकदमे चले, भारी जुर्माना लगाया गया और बार-बार कारावास की कालकोठरी में धकेला गया। पांच बार जेल जाने के बाद भी उनकी चमक फीकी नहीं पड़ी बल्कि वे हर बार और अधिक तपकर कुंदन की तरह बाहर निकले। जेल की यातनाएं उनके संकल्प को नहीं तोड़ सकीं। उन्होंने जेल में रहकर 'जेल जीवन की झलक' जैसी कृतियां रची, जिन्होंने जेल की चारदीवारी के भीतर के सच को दुनिया के सामने रखा। उनकी लेखनी ने स्वाधीनता सेनानियों के भीतर वह ऊर्जा भरी कि 'प्रताप' का कार्यालय क्रांतिकारियों का तीर्थस्थल बन गया। विद्यार्थी जी का राजनीतिक जीवन भी उनके पत्रकारिता के समान ही ओजस्वी था। वे केवल लिखने वाले बौद्धिक नहीं थे बल्कि कर्म के पथ पर चलने वाले योद्धा थे। उनके लिए पद कभी साध्य नहीं रहे, केवल साधन रहे। उनके भीतर एक अद्भुत समन्वय था, वे एक ओर अहिंसा के पुजारी थे तो दूसरी ओर अन्याय के विरुद्ध किसी भी हद तक जाने वाले बागी। गणेश शंकर विद्यार्थी के जीवन का जो पक्ष उन्हें महानता के सर्वोच्च शिखर पर स्थापित करता है, वह है उनकी सांप्रदायिक सद्भाव के प्रति अटूट आस्था। वे भली-भांति समझते थे कि ब्रिटिश साम्राज्य की नींव 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर टिकी है। उन्होंने अपने लेखों में बार-बार चेतावनी दी कि धर्म का राजनीतिक उपयोग समाज के लिए विष के समान है। वे अक्सर कहा करते थे कि धर्म का स्थान मनुष्य का हृदय है, सड़क या संसद नहीं। मार्च 1931 का वह काला समय आया, जिसने भारत माता के इस सपूत को हमसे छीन लिया। पूरा देश भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की फांसी के शोक में डूबा हुआ था। कानपुर में सांप्रदायिक दंगों की भयावह आग भड़क उठी थी। चारों ओर उन्माद का तांडव था, मानवता कराह रही थी और भाई-भाई का खून बहा रहा था। ऐसे समय में जब लोग अपनी जान बचाने के लिए घरों में दुबके थे, गणेश शंकर विद्यार्थी नंगे पैर, निहत्थे उस दहकती हुई आग के बीच कूद पड़े। उनके मित्रों और परिजनों ने उन्हें रोकने का प्रयास किया किंतु उन्होंने उत्तर दिया कि यदि मेरा जीवन भाईयों को बचाने में काम आए तो इससे बड़ी सार्थकता और क्या होगी? वे गलियों में घूम-घूम कर दंगाइयों को समझाते रहे, असहाय महिलाओं और बच्चों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाते रहे। 25 मार्च 1931 को उस उन्मत्त भीड़ ने, जिसके भीतर से विवेक लुप्त हो चुका था, इस शांतिदूत पर प्रहार किया। विडंबना देखिए, जिस व्यक्ति ने उम्रभर गरीबों और मजलूमों के हक की लड़ाई लड़ी, वही उसी भीड़ की नफरत का शिकार हो गया। उनकी शहादत ने देश को स्तब्ध कर दिया। विद्यार्थी जी का बलिदान केवल एक व्यक्ति का अंत नहीं था बल्कि वह घृणा के विरुद्ध प्रेम की पराकाष्ठा थी। आज के इस दौर में, जब सूचनाओं के महासागर में सत्य कहीं खो गया है और पत्रकारिता के आदर्शों पर प्रश्नचिह्न लग रहे हैं।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

उत्तरी इजरायल। किरयात शमोना में लेबनान से इजरायल की ओर रॉकेट दागे जाने की चेतावनी के बाद हवाई हमले के सायरन बजने पर छिपते इजरायली सुरक्षा जवान।

ईरानः मोहम्मद बागेर जोल्घाद्र राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के नए प्रमुख नियुक्त

तेहरान। ईरान सरकार ने मोहम्मद बागेर जोल्घाद्र को देश की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद का नया सचिव नियुक्त किया है। ईरान की आधिकारिक समाचार एजेंसी 'इरना' ने राष्ट्रपति कार्यालय के हवाले से मंगलवार को यह जानकारी दी। जोल्घाद्र इस महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त रहे अली लारीजानी का स्थान लेंगे। उल्लेखनीय है कि अली लारीजानी इजरायल के एक हमले में मारे गए थे। उसके बाद से यह पद रिक्त था। जोल्घाद्र की नियुक्ति ऐसे समय में हुई है जब क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियां बड़ी हुई हैं। सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ईरान की वह शीर्ष संस्था है जो देश की रक्षा और विदेश नीति से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय लेने में राष्ट्रपति और सर्वोच्च नेता का मार्गदर्शन करती है।

रूस ईरान को खुफिया जानकारी साझा कर रहा हैः जेलेंस्की

कीव। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर ज़ेलेंस्की ने कहा है कि उनके पास 'पुख्ता सबूत' हैं कि रूस ईरान को खुफिया जानकारी उपलब्ध करा रहा है। यह दावा यूक्रेन की सैन्य खुफिया एजेंसी (एचयूआर) के प्रमुख ओलेह इवाशचेंको के साथ बैठक के बाद किया गया, जिसमें ज़ेलेंस्की ने प्रस्तुत मूल्यांकन की समीक्षा की। ज़ेलेंस्की ने टेलीग्राम पर पोस्ट में चर्चा का सार देते हुए कहा कि रूस अपनी रेडियो-तकनीकी और इलेक्ट्रॉनिक खुफिया क्षमताओं का उपयोग कर रहा है, साथ ही मध्य पूर्व के भागीदारों से प्राप्त कुछ खुफिया जानकारी भी साझा कर रहा है। इन आरोपों पर रूस या ईरान की ओर से अभी कोई तत्काल प्रतिक्रिया नहीं आई है। ज़ेलेंस्की का बयान ऐसे समय में आया है जब पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ रहा है।

परमाणु हथियार रखने का फैसला सही थाः किम जोंग

ईरान पर हमले ने हमें सच साबित किया, जीत मजबूत ताकत से तय होती है

प्योंगयांग। नॉर्थ कोरिया के सुप्रीम लीडर किम जोंग उन ने देश के पास परमाणु हथियार होने को लेकर खुशी जताई है। सरकारी मीडिया के मुताबिक उन्होंने कहा कि अमेरिका और इजराइल के ईरान पर किए गए हमले साबित करते हैं, कि उनके देश का परमाणु हथियार रखने का फैसला सही था।

किम ने कहा कि पश्चिम एशिया में चल रहा युद्ध दिखाता है कि आज की दुनिया में सिर्फ मजबूत सैन्य ताकत ही किसी देश को सुरक्षित रख सकती है। उन्होंने यह बयान सोमवार को संसद में लंबे भाषण के दौरान दिया। अपने भाषण में किम ने दक्षिण कोरिया के प्रति सख्त रुख दोहराया और कहा कि वह अपने देश की परमाणु ताकत को और मजबूत करेंगे, ताकि अमेरिका को रोका जा सके। किम जोंग उन का यह भाषण मंगलवार को लिखित रूप

2019 में ट्रम्प के साथ बातचीत टूटने के बाद परमाणु हथियार बढ़ाने का फैसला उनका सबसे सही कदम था

में जारी हुआ है। इसमें उन्होंने कहा कि 2019 में ट्रम्प के साथ बात. चीत टूटने के बाद परमाणु हथियार बढ़ाने का फैसला उनका सबसे सही कदम था। किम ने कहा कि नॉर्थ कोरिया अब अमेरिका के खिलाफ एकजुट मोर्चे में और ज्यादा सक्रिय भूमिका निभाएगा। हालांकि उन्होंने ट्रम्प का नाम सीधे नहीं लिया, लेकिन यह जरूर कहा कि उनके विरोधी टकराव चाहते हैं या शांति, यह उन पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि नॉर्थ कोरिया हर स्थिति के लिए तैयार है। किम ने देश को आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था बनाने, ज्यादा परमाणु हथियार और उन्हें ले जाने वाली मिसाइलें बनाने पर जोर दिया। किम ने यह भी कहा कि परमाणु हथियारों की वजह से नॉर्थ कोरिया अब ज्यादा सुरक्षित है और इसी वजह से वह अपने संसाधनों का इस्तेमाल आर्थिक विकास के लिए भी कर पा रहा है। साउथ कोरिया को लेकर उन्होंने कहा कि हम उसे सबसे बड़ा दुश्मन मानेंगे और पूरी तरह नजरअंदाज करेंगे। अगर साउथ कोरिया कोई भी कदम उठाता है जो उनके देश को नुकसान पहुंचाता है, तो उसे कड़ी सजा दी जाएगी। कई दशकों से अमेरिका और उसके सहयोगी देश, प्रतिबंध और बातचीत के जरिए नॉर्थ कोरिया को परमाणु कार्यक्रम छोड़ने के लिए मनाने की कोशिश करते रहे हैं, लेकिन अब तक सभी प्रयास असफल रहे हैं। व्हाइट हाउस में दोबारा आने के बाद ट्रम्प ने किम से फिर बातचीत करने की इच्छा जताई है। हालांकि, किम का कहना है कि बातचीत तभी हो सकती है, जब अमेरिका आधिकारिक तौर पर नॉर्थ कोरिया को परमाणु शक्ति के रूप में मान्यता दे। नॉर्थ कोरिया लंबे समय से यह कहता रहा है कि अगर लीबिया के मुअम्मर गद्दाफी और इराक के सद्दाम हुसैन के पास परमाणु हथियार होते तो उनका अंत इस तरह नहीं होता।

संक्षिप्त समाचार

वियतनाम में एक भोजनालय में आग लगने से दो की मौत

हनोई। दक्षिणी वियतनाम के हो ची मिन्ह शहर में सोमवार रात एक शाकाहारी भोजनालय में आग लगने से एक महिला और उसके बच्चे की मौत हो गई। वियतनाम न्यूज़ एजेंसी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जब आग लगी तो पीड़ित सो रहे थे। स्थानीय दैनिक वीएन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक एक पड़ोसी ने बताया कि घटना के समय भोजनालय बंद था।

कोलंबिया में सैन्य विमान दुर्घटना में 66 सैनिकों की मौत

बोगोटा। कोलंबिया के दक्षिण-पश्चिमी प्रांत पुटुमायो में सोमवार को हुए एक सैन्य विमान दुर्घटना में 66 सैनिकों की मौत हो गई। कोलंबिया की सेना ने कहा नए आंकड़ों के मुताबिक विमान में 128 लोग सवार थे, जिनमें से 57 घायल हो गए, चार लापता हैं और एक व्यक्ति को कोई नुकसान नहीं हुआ। सेना ने शुरू में कहा था कि दुर्घटनाग्रस्त हुए परिवहन विमान सी-130 हरक्यूलिस में 114 यात्री और 11 चालक दल के सदस्य सवार थे। इस विमान का इस्तेमाल सैनिकों को लाने-ले जाने के लिए किया जाता था।

टोंगा तट के पास 7.6 तीव्रता का भूकंपः भूकंप विज्ञानी

मॉस्को। यूरोपीय भूमध्यसागरीय भूकंप विज्ञान केंद्र (ईएमएसएसी) ने मंगलवार को बताया कि दक्षिणी प्रशांत महासागर में स्थित द्वीपीय देश टोंगा के तट के दक्षिण-पश्चिम में 7.6 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया है। भूकंप विज्ञानियों के अनुसार, यह भूकंप 04:37 जीएमटी पर आया, जो शहर नेइफू से लगभग 158 किलोमीटर पश्चिम-दक्षिण-पश्चिम में था। इसका केंद्र 218 किलोमीटर की गहराई पर स्थित था। फिलहाल इस भूकंप से किसी भी प्रकार के जान-माल के नुकसान या हताहत होने की कोई सूचना नहीं है।

तेल अवीव पर ईरानी मिसाइलों की बारिश

विरोधाभासी बयानों ने पश्चिम एशिया संकट को और जटिल बना दिया

तेल अवीव/वाशिंगटन। ईरान ने मंगलवार तड़के तेल अवीव सहित मध्य इजरायल पर मिसाइलों की कई लहरें दागीं, जिससे व्यापक नुकसान हुआ। इसी बीच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और ईरान के बीच संभावित वार्ता को लेकर विरोधाभासी बयानों ने पश्चिम एशिया संकट को और जटिल बना दिया है। इजरायली अधिकारियों के अनुसार, आधी रात के बाद 10 घंटे से भी कम समय में ईरान ने सात चरणों में मिसाइल हमले किए। तेल अवीव सहित कई स्थानों पर हमलों के प्रभाव देखे गए, जहां इमारतों को नुकसान, जलते वाहन और घना धुआं देखा गया।

आपातकालीन टीमें तुरंत राहत एवं बचाव कार्य में जुट गईं। डिमोना क्षेत्र में भी एयर रेड सायरन बजाए गए, जो नेगेव परमाणु अनुसंधान केंद्र के निकट स्थित है, जिससे हमलों के दायरे के विस्तार का संकेत मिला है। इजरायली रक्षा बल (आईडीएफ) ने बताया कि कई स्थानों पर खोज एवं बचाव अभियान चलाया गया और रातभर मिसाइल हमले जारी रहे। इसके साथ ही इजरायल ने भी जवाबी कार्रवाई तेज करते हुए ईरान में 50 से अधिक ठिकानों को निशाना बनाया, जिनमें मिसाइल लॉन्च साइट और सैन्य अवसंरचना शामिल हैं। अधिकारियों के अनुसार, संघर्ष शुरू होने के बाद से अब तक ईरान में 3000 से अधिक ठिकानों पर हमले किए जा चुके हैं। कूटनीतिक मोर्चे पर ट्रंप ने दावा किया कि सप्ताहांत में हुई बातचीत के बाद अमेरिका और ईरान के बीच 'महत्वपूर्ण बिंदुओं पर सहमति' बनी है और ईरानी ऊर्जा संयंत्रों पर प्रस्तावित हमलों को पांच दिन के

तेल अवीव सहित कई स्थानों पर हमलों के प्रभाव देखे गए इमारतों को भारी नुकसान

लिए टाल दिया गया है। उन्होंने '15 बिंदुओं पर सहमति' की बात भी कही और तनाव कम होने के संकेत दिए। ईरान ने कुछ ही समय में इन दावों को तुरंत खारिज करते हुए कहा कि ट्रंप प्रशासन के साथ 'कोई वार्ता' नहीं हुई है, जिससे संभावित समझौते को लेकर संदेह और बढ़ गया है। इन विरोधाभासी बयानों के बीच वैश्विक अनिश्चितता बढ़ गई है, हालांकि ट्रंप के बयान के बाद तेल की कीमतों में कुछ नरमी आई और एशियाई बाजारों में शुरुआती बढ़त दर्ज की गई। इस बीच, मिसाइल हमलों के चलते इजरायल की संसद (नेस्सट) की कार्यवाही भी कुछ समय के लिए रोकनी पड़ी, जिसे बाद में फिर शुरू किया गया। मौजूदा घटनाक्रम को संघर्ष के सबसे तीव्र चरणों में से एक माना जा रहा है, जहां एक ओर सैन्य कार्रवाई जारी है, वहीं कूटनीतिक संकेत अभी भी अस्पष्ट बने हुए हैं।

ईरान में गैस प्लांट और पाइपलाइन पर हमला

तेल अवीव/तेहरान/वॉशिंगटन। अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग का आज 25वां दिन हैं। ईरान में मंगलावर को कई जगह एनर्जी इन्फ्रास्ट्रक्चर पर हमला हुआ। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ईरान के इस्फहान शहर में गैस प्लांट और गैस कंट्रोल स्टेशन को निशाना बनाया गया। इसके अलावा खोर्रमशहर के पावर प्लांट और उसकी गैस पाइपलाइन पर भी हमला हुआ। वहीं लेबनान में ईरान समर्थक उग्रवादी संगठन हिजबुल्लाह ने आज इजराइल के 5 ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन अटैक किया। हिजबुल्लाह ने बताया कि उसने इजराइली सैनिकों की एक छावनी, रडार और तोपखाने को निशाना बनाया। ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका और ईरान के बीच हालिया बातचीत के बाद 15 मुद्दों पर सहमति बनी है। इन मुद्दों की पूरी लिस्ट सार्वजनिक नहीं की गई है। उन्होंने ईरान के पावर प्लांट पर हमले 5 दिन के लिए टाल दिए, जबकि इससे पहले होर्मुज खोलने के लिए 48 घंटे की चेतावनी दी थी। ईरान के विदेश मंत्रालय ने कहा कि तेहरान और वॉशिंगटन के बीच कोई बातचीत नहीं हो रही है।

हिजबुल्लाह का 5 इजराइली ठिकानों पर मिसाइल अटैक, जंग में अब तक 2663 मौतें

अमेरिका-इजरायल के अलावा अन्य देशों के जहाजों को निकलने का रास्ता दिया जाएगाः पेजेशकियान

तेहरान। ईरान ने अमेरिका और इज़रायल को छोड़कर अन्य देशों के जहा. जों को होर्मुज जलडमरूमध्य से गुज़रने की अनुमति देने के लिए कई कदम उठाए हैं। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेज़ेशकियान के कार्यालय ने यह जानकारी दी है। पेज. शकियान ने सोमवार को पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ़ के साथ हुई फोन वार्ता में कहा कि किसी भी सूरत में, ईरान ने इस जलमार्ग से जहाज़ों के पार होने के लिए सुरक्षा एवं रक्षा के इंतजाम किये गये हैं। शत्रु देशों को छोड़कर अन्य देशों के जहाजों को इस रास्ते से गुज़रने के लिए आवश्यक सहयोग दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि अमेरिका और इज़रायल ने 28 फरवरी को ईरान में कई ठिकानों पर हमले किए। इन हमलों में ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्ला अली खामेनेई सहित कई लोगों की मौत हुई।

रूस ने यूक्रेन पर रातभर में 400 ड्रोन दागे, चार की मौत

कीव। रूस ने मंगलवार को यूक्रेन पर बड़ा ड्रोन और मिसाइल हमला किया, जिसमें 4 लोगों की मौत हो गई और कम से कम 27 लोग घायल हुए। यूक्रेन की वायुसेना के मुताबिक, रूस ने रातभर में करीब 400 ड्रोन दागे, जो हाल के हफ्तों के सबसे बड़े हमलों में से एक है।

इसके अलावा 23 क्रूज मिसा. इल और 7 बैलिस्टिक मिसाइलें भी दागी गईं, जिनसे देश के कई इलाकों को निशाना बनाया गया। राजधानी कीव पर दिन में भी ड्रोन हमले हुए। यूक्रेन के सेना प्रमुख ओलेक्सांद्र सिरस्की ने कहा कि रूस कई मोर्चों पर एक साथ हमला कर रहा है और नई सैन्य कार्रवाई की तैयारी में है। करीब 1250 किलोमीटर लंबी सीमा पर लड़ाई जारी है। रूस पहले ही यूक्रेन के लगभग 20 प्रतिशत हिस्से पर कब्जा कर चुका है, जिसमें क्रीमिया भी शामिल है। वहीं, यूक्रेन भी ड्रोन हमलों से जवाब दे रहा है और अपने सहयोगी देशों से एयर डिफेंस सिस्टम की मांग कर रहा है। अमेरिका के टेक्सास राज्य के पोर्ट आर्थर शहर में स्थित वैलेरो ऑयल रिफाइनरी में सोमवार रात बड़ा धमाका हुआ, जिसके बाद वहां भीषण आग लग गई और आसमान में काला धुआं फैल गया। रिपोर्ट के मुताबिक, आसपास के लोगों ने तेज धमाके की आवाज सुनी, जिससे उनके घर हिल गए। इसके बाद इमरजेंसी टीमें तुरंत मौके पर पहुंचीं। यह रिफाइनरी रोजाना करीब 4.35 लाख बैरल कच्चे तेल को प्रोसेस कर पेट्रोल, डीजल और जेट फ्यूल बनाती है। अधिकारियों के अनुसार, यह विस्फोट एक हीटर में खराबी के कारण हुआ। घटना के बाद शहर के पश्चिमी हिस्से में 'शेल्टर-इन-प्लेस' आदेश जारी किया गया है। लोगों को घरों के अंदर रहने, दरवाजे-खिड़कियां बंद रखने और प्रशासन के निर्देशों का पालन करने को कहा गया है। हालांकि, अब तक किसी के घायल होने की खबर नहीं है।

ऑस्ट्रेलिया-ईयू के बीच ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौता

कैनबरा/ब्रसेल्स। ऑस्ट्रेलिया और यूरोपीय संघ (ईयू) ने लगभग आठ वर्षों की बातचीत के बाद एक 'ऐतिहा. सिक' मुक्त व्यापार समझौते को अंतिम रूप दे दिया है, जिससे दोनों पक्षों के बीच बाजार पहुंच को बढ़ावा मिलेगा, आयात शुल्क में कटौती होगी और आर्थिक संबंध गहरे होंगे।

इस समझौते की घोषणा ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने की। सुलेयेन ने इस समझौते को दोनों पक्षों के बीच 'बढ़ते रणनीतिक संबंधों' को मजबूत करने और 'खुले एवं नियम-आधारित व्यापार' को सुदृढ़ करने की दिशा में एक बड़ा कदम बताया। समझौते के तहत, ईयू को किया जाने वाला लगभग 98 प्रतिशत ऑस्ट्रेलियाई निर्यात शुल्क मुक्त प्रवेश पा सकेगा। इससे ऑस्ट्रेलियाई कृषि, विनिर्माण और महत्वपूर्ण खनिज क्षेत्रों को काफी बढ़ावा मिलेगा। ऑस्ट्रेलियाई किसानों को वाइन, डेयरी, सीफूड, अनाज, फल और नट्स जैसे उत्पादों पर आयात शुल्क हटने से लाभ होगा, जिसमें अकेले वाइन निर्यातकों को सालाना लगभग '3.7 करोड़ डॉलर' का लाभ होने की उम्मीद है। यह समझौता बीफ, भेड़ के मांस, चीनी और डेयरी जैसे प्रमुख उत्पादों के लिए विस्तारित कोटा के माध्यम से 'सार्थक पहुंच' सुनिश्चित करेगा।

अमेरिका ने अपने नागरिकों से जल्द से जल्द इराक छोड़ने को कहा

बगदाद। इराक में अमेरिकी दूतावास ने एक नया परामर्श जारी कर अमेरिकी नागरिकों से तुरंत इराक छोड़ने का आग्रह किया है। इस परामर्श में ईरान समर्थित आतंकवादी समूहों से बढ़ते खतरों और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए निरंतर जोखिमों का हवाला दिया गया है। एक अद्यतन नोटिस में, दूतावास ने कहा कि ईरान समर्थित आतंकवादी समूहों ने इराक के कुर्दिस्तान क्षेत्र सहित पूरे इराक में अमेरिकी नागरिकों और 'हितों' को निशाना बनाते हुए व्यापक हमले किए हैं। अमेरिका ने 'यात्रा न करने' संबंधी अपनी लेवल चार की चेतावनी को दो. हराते हुए सलाह दी है कि किसी भी कारण से इराक की यात्रा न करें। यदि आप वहां हैं तो अभी निकल जाएं।

पाकिस्तान बना दुनिया का सबसे प्रदूषित देश

भारत का लोनी सबसे प्रदूषित शहर रहा

इस्लामाबाद/नई दिल्ली। लोनी को दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक होने का तमगा मिला है। एक ताजा रिपोर्ट में पाकिस्तान को 2025 में सबसे ज्यादा प्रदूषित देश बताया गया है।

मंगलवार को स्विस कंपनी **IQAir** की रिपोर्ट में बताया गया कि देश में पीएम2.5 नाम के पार्टिकुलेट मैटर का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सुझाए गए स्तर से 13 गुना ज्यादा दर्ज किया गया है। ये कण जलने की प्रक्रियाओं, औद्योगिक प्रक्रियाओं और धूल से आते हैं और इनसे सेहत से जुड़ी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि जिन 143 देशों और क्षेत्रों की निगरानी की गई है उनमें से 130 देश डब्ल्यूएचओ के मानकों को पूरा करने में नाकाम

रहे। इस सूची में बांग्लादेश दूसरे और ताजिकिस्तान तीसरे स्थान पर रहे। शहरों की बात करें तो 2025 में भारत का लोनी शहर दुनिया का सबसे ज्यादा प्रदूषित शहर रहा जहां पीएम2.5 का औसत स्तर 11.5 माइक्रोग्राम था। इसके बाद चीन के उत्तर-पश्चिमी शिनजियांग क्षेत्र का होटान शहर रहा जहां यह स्तर 109.6 माइक्रोग्राम था।

भारत, पाकिस्तान और चीन में दुनिया के सबसे प्रदूषित शहर

इस रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया के सबसे ज्यादा प्रदूषित शहरों में से सभी शहर भारत, पाकिस्तान और चीन में ही थे। 2025 में दुनिया के सिर्फ 14 प्रतिशत शहर ही डब्ल्यूएचओ के मानकों को पूरा कर पाए जो पिछले साल के 17 प्रतिशत के मुकाबले कम है। इसकी एक वजह कनाडा के जंगलों में लगी आग थी जिससे पूरे अमेरिका और यहां तक कि यूरोप तक में पीएम2.5 का स्तर बढ़ गया था। 2025 में सिर्फ 13 देश ही पीएम2.5 के औसत स्तर को 5 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर से कम रखने के स्टैंडर्ड को पूरा कर पाए जबकि 2024 में ऐसे देशों की संख्या सात थी। जिन देशों ने इस स्टैंडर्ड को पूरा किया उनमें ऑस्ट्रेलिया, आइसलैंड, एस्टोनिया और पनामा शामिल हैं। **IQAir** के मुता. बिक 2025 में लगभग 75 देशों में पीएम2.5 का स्तर पिछले साल के मुकाबले कम रहा जबकि 54 देशों में यह स्तर ज्यादा दर्ज किया गया। इस साल का डेटा 2024 के मुकाबले काफी कम है क्योंकि अमेरिका ने बजट की कमी का हवाला देते हुए एक वैश्विक निगरानी कार्यक्रम को बंद कर दिया था।

कोलंबिया में वायुसेना का विमान क्रैश, 66 की मौत

114 कोलंबियाई सैनिक और 11 क्रू मेंबर सवार थे, टेकऑफ के बाद 1.5 किमी दूर गिरा

बोगोटा। कोलंबिया में सोमवार को एयरफोर्स का हरक्यूलिस सी-130 विमान टेक-ऑफ के दौरान क्रैश हो गया। हादसे में अब तक 66 लोगों की मौत हो गई और 50 से ज्यादा घायल हो गए। जबकि 4 सैनिक अभी भी लापता है।

एक सैन्य सूत्र ने एएफपी को बताया कि 58 सैनिक, छह वायुसेना कर्मी और दो पुलिस अधिकारी मारे गए हैं। यह हादसा पेरू सीमा के पास दक्षिणी अमेजन क्षेत्र के प्यूर्टो लेगुइजामो में हुआ। रक्षा मंत्री पेड्रो सां. चेज ने बताया कि विमान रनवे से करीब 1.5 किलोमीटर दूर जाकर गिरा। विमान में 114 सैनिक और 11 क्रू मेंबर सवार थे। कोलंबिया की सेना ने बताया कि इस हादसे में करीब 80 सैनिकों के मारे जाने की आशंका है। कोलंबिया के राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो ने सैन्य विमान हादसे पर दुख जताया है। उन्होंने कहा कि यह एक गंभीर हादसा है।

सरकार सेना को मजबूत बनाने और बेहतर सुविधाएं देने पर काम कर रही है, ताकि आगे ऐसे हादसे न हों: गुस्तावो

ऐसी घटना नहीं होनी चाहिए थी और जवानों की सुरक्षा सबसे जरूरी है। सरकार सेना को मजबूत बनाने और बेहतर सुविधाएं देने पर काम कर रही है, ताकि आगे ऐसे हादसे न हों। पेट्रो ने कहा कि सेना के हथियार और संसाधनों को आधुनिक बनाने का फैसला पहले ही लिया जा चुका है, लेकिन प्रशास. निक देरी के कारण इसे लागू नहीं किया जा सका। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर नागरिक या सैन्य अधिकारी इस चुनौती के अनुरूप काम नहीं कर पाए, तो उन्हें हटाया जाएगा। राष्ट्रपति ने कहा कि सेना के लिए नए हेलिकॉप्टर, ट्रांसपोर्ट विमान और एंटी-ड्रोन सिस्टम तुरंत खरीदे जाने चाहिए, ताकि जवानों की सुरक्षा तय की जा सके। हादसे के बाद आसपास के गांवों के लोग तुरंत मदद के लिए पहुंच गए। कई लोग मोटरसाइकिल से घायलों को अस्पताल ले गए और आग बुझाने की कोशिश की। घायलों को पहले छोटे क्लीनिक में भर्ती किया गया, फिर उन्हें बड़े शहरों जैसे बोगोटा के अस्पतालों में एयरलिफ्ट किया गया। रक्षा मंत्री पेड्रो सांचेज ने साफ किया है कि अभी तक किसी आतंकी या हमले के सबूत नहीं मिले हैं। यानी फिलहाल इसे एक हादसा ही माना जा रहा है। हादसे के बाद आग से विमान में मौजूद गोला-बारूद फटने लगा, जिससे हालात और खतरनाक हो गए। एक एविएशन एक्सपर्ट ने बताया कि यह विमान 2020 में अमेरिका ने कोलंबिया को दिया था और कुछ साल पहले इसका पूरा मेंटेनेंस (ओवरहाल) भी किया गया था। इसलिए पहली नजर में ऐसा नहीं लगता कि खराब पार्ट्स की वजह से हादसा हुआ। अब जांच में यह पता लगाया जाएगा कि टेकऑफ के तुरंत बाद विमान के इंजन क्यों फेल हो गए। सी-130 हरक्यूलिस दुनिया के सबसे भरोसेमंद सैन्य परिवहन विमानों में से एक है, जिसका इस्तेमाल सैनिकों, हथियारों और राहत सामग्री को पहुंचाने के लिए किया जाता है।

ईरान के राष्ट्रपति व पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के बीच बातचीत

नई दिल्ली। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेज़ेशकियन और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने मंगलवार को फोन पर बातचीत पश्चिमी एशिया के ताजा घटनाक्रम पर चर्चा की। दोनों नेताओं के बीच यह बातचीत 23 मार्च को पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री/विदेश मंत्री इशाक डार और ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची के बीच फोन पर हुई बातचीत के बाद हुई है। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने कहा कि उन्होंने नवीनतम क्षेत्रीय घटनाक्रमों पर चर्चा की। उप प्रधानमंत्री/विदेश मंत्री ने क्षेत्र और उससे बाहर शांति, सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए संवाद और कूटनीति के महत्व पर जोर दिया। दोनों पक्ष बदलती स्थिति पर निकट संपर्क बनाए रखने पर सहमत हुए। मंगलवार को आई खबरों में कहा गया है कि पाकिस्तान खुद को दोनों युद्धरत पक्षों के बीच मध्यस्थ के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रहा है और इस्लामाबाद में बातचीत की मेजबानी करने का प्रयास कर रहा है, हालांकि इन रिपोर्टों की कोई पुष्टि नहीं हुई है। ईरान की मेहर न्यूज़ एजेंसी (एमएनए) ने मंगलवार को कहा कि राष्ट्रपति पेज़ेशकियन और शहबाज शरीफ ने द्विपक्षीय संबंधों, क्षेत्रीय घटनाक्रमों और अमेरिका तथा इज़रायल द्वारा किए गए अवैध हमले के क्षेत्रीय एवं वैश्विक सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों पर चर्चा की।